भारतवर्ष का इतिहास

पहला भाग

एंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूलों की कक्षा ७ के लिये

लेखक—

लौटू सिंह गौतम एम० ए०, एल्० टी०,

एम० आर० ए० एस्०, काव्यतीर्थ,

प्रधानाध्यापक—इतिहास-विभाग,

क्षत्रिय उदय प्रताप कालेज, बनारस

और

लक्ष्मीनारायण माथुर बी० ए०, एल्० टी०,

हेडमास्टर,

जे० ए० एस्० हाई स्कूल, खुरजा

प्रकाशक—

नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स,

बनारस

प्रथम संस्करण] १९३४ [मूल्य १)

PUBLISHERS' NOTE.

A word of explanation is needed regarding the production of this History of India for beginners, when there are already so many in existence written by able hands. The book is the result of the efforts of teachers who have been face to face with everyday difficulties in the school-room. Until not long ago, the subject of history was perhaps considered to be the most 'dry-as-dust' subject by our pupils and, what with the textual difficulties and, what with the way in which they were written, the subject was undoubtedly as 'tearful' as it could be. The 'vernacularisation' of the subject has done away with the former to a very large extent, but there is much room for improvement in the latter. A good many histories that are extant for this class of pupils contain not only far too much matter to be easily assimilated by them but have it set forth in a way that does not appeal to them. The transition from the 'story' stage to the regular 'history' stage is too sudden to keep their interest unflagged. In the upper middle stage it is not so much the matter but the *method* that should count. The authors have tried to strike an entirely new path in their attempts to make history as interesting and fascinating a subject as possible. They have not

विषय-सूची

तख्त ताऊस

अध्याय १

हमारा देश

भारतवर्ष—जिस देश में हम लोग रहते हैं, वह भारतवर्ष या हिन्दुस्तान कहलाता है। बहुत दिन हुए, महाराज दुष्यन्त नामक एक बड़े प्रतापी राजा यहाँ राज्य करते थे। उनके पुत्र भरत ने चक्रवर्ती सम्राट् होकर सम्पूर्ण देश पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। अतः उसी के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' या 'भारतवर्ष' पड़ा। पीछे से इसका नाम 'हिन्दुस्तान' भी पड़ गया, क्योंकि सदैव से इस देश में हिन्दुओं की संख्या अधिक रही है। हम सब इस देश के निवासी होने के कारण भारतवासी या हिन्दुस्तानी कहलाते हैं। अपने इस देश का इतिहास जानने के पूर्व इसकी बनावट और स्थिति जान लेना अत्यन्त आवश्यक है। इनसे इतिहास समझने में बड़ी सहायता मिलती है।

स्थिति और उत्तरीय सीमा—भारतवर्ष एशिया का दक्षिणी प्रायद्वीप है। यह एक बहुत बड़ा देश है। इसका विस्तार इतना बड़ा है जितना रूस को छोड़कर समस्त यूरोप का। इसके उत्तर में, एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक, हिमालय पर्वत की बहुत ऊँची-ऊँची श्रेणियाँ फैली हुई हैं। इनकी ऊँचाई को तुम बिना देखे ध्यान में नहीं ला सकते। यदि तुम्हारे पास ५½ मील लंबा एक बाँस हो और फिर तुम उसको ऊपर की ओर ऊँचा खड़ा कर दो तो जितना ऊँचा वह बाँस होगा, उतने ही ऊँचे ये पहाड़

। देखने से इनकी चोटियाँ आकाश को छूती हुई मालूम देती। यह तो हुई इनकी ऊँचाई की बात; इनकी चौड़ाई भी बहुत है। कहीं-कहीं तो ये पन्द्रह सौ मील चौड़े हो गये हैं। इन पर्वतों की चोटियाँ सदैव बर्फ से ढकी रहती हैं; इस कारण इनपर इतनी सर्दी पड़ती है कि कोई जीव-जन्तु जीवित नहीं रह सकता। ऐसे पहाड़ों को पार करना, कठिन ही नहीं, असम्भव है। परन्तु पश्चिम की ओर ये पर्वत-श्रेणियाँ नीची हो गई हैं और उनके बीच में दर्रे और घाटियाँ निकल आई हैं जिनमे होकर लोग आ जा सकते हैं। उनमें खैबर का दर्रा बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ आजकल भी बहुत सी सरकारी फौज रहती है और कई सुदृढ़ किले बने हैं। इसे अपनी पुस्तक के नकशे में देखो।

मैदान—हिमालय पर्वत के दक्षिण की ओर एक बहुत हरा भरा और सुन्दर मैदान आता है। देश की अनेक प्रसिद्ध नदियाँ इसी मैदान में से बहती हैं। इस मैदान का जलवायु अति उत्तम है और यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है। वर्षा भी काफी हो जाती है। अतः यहाँ खेती-बारी करने का सुभीता है और थोड़ा परिश्रम करने से ही खेतों में सुन्दर पैदावार हो जाती है। फल-स्वरूप यहाँ की आबादी बहुत घनी है। प्राचीन काल के कई प्रसिद्ध नगर भी इसी भूमि मे स्थित हैं। दिल्ली, प्रयाग, काशी और पाटलिपुत्र आदि नगर, जो पूर्व काल में देश-देशांतर मे प्रसिद्ध थे, इसी मैदान मे बसे हैं। इस मैदान को पहले लोग आर्य्यावर्त के नाम से पुकारते थे। प्राचीन काल से ही यह मैदान सुख-समृद्धि का केन्द्र रहा है और यहाँ धन-धान्य की कभी कमी नहीं रही। इस सारे मैदान मे राजपूताना ही रेतीला और सूखा है जिससे यहाँ

न तो शेष मैदान की सी बढ़िया पैदावार ही होती और न यहाँ के निवासियों को वे सुविधाएँ प्राप्त हैं जो मैदानवालों को हैं।

विन्ध्याचल—इस मैदान से दक्षिण की ओर चल कर विन्ध्याचल पर्वत है। इसके पास ही सतपुड़ा पर्वत की श्रेणियाँ हैं। ये पर्वत हिमालय की तरह ऊँचे तो नहीं हैं, परन्तु इनकी

तराइयों में बड़े घने जंगल हैं। ये जंगल इतने भयानक हैं कि प्राचीन काल में लोग इन्हें 'महाकांतार' (अर्थात् बहुत बड़ा जंगल) कहते थे। जैसे हिमालय की ऊँची और बर्फ़ीली चोटियों

हैं। देखने से उनकी चोटियाँ आकाश को छूती हुई मालूम देती हैं। यह तो हुई इनकी ऊँचाई की बात; इनकी चौड़ाई भी बहुत है। कहीं-कहीं तो ये पन्द्रह सौ मील चौड़े हो गये हैं। इन पर्वतों की चोटियाँ सदैव बर्फ से ढकी रहती हैं; इस कारण इनपर इतनी सर्दी पड़ती है कि कोई जीव-जन्तु जीवित नहीं रह सकता। ऐसे पहाड़ों को पार करना, कठिन ही नहीं, असम्भव है। परन्तु पश्चिम की ओर ये पर्वत-श्रेणियाँ नीची हो गई हैं और उनके बीच में दर्रे और घाटियाँ निकल आई हैं जिनमें होकर लोग आ जा सकते हैं। इनमें खैबर का दर्रा बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ आजकल भी बहुत सी सरकारी फौज रहती है और कई सुदृढ़ किले बने हैं। इसे अपनी पुस्तक के नकशे में देखो।

मैदान—हिमालय पर्वत के दक्षिण की ओर एक बहुत हरा भरा और सुन्दर मैदान आता है। देश की अनेक प्रसिद्ध नदियाँ इसी मैदान में से बहती हैं। इस मैदान का जलवायु अति उत्तम है और यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है। वर्षा भी काफी हो जाती है। अतः यहाँ खेती-बारी करने का सुभीता है और थोड़ा परिश्रम करने से ही खेतों में सुन्दर पैदावार हो जाती है। फल-स्वरूप यहाँ की आबादी बहुत घनी है। प्राचीन काल के कई प्रसिद्ध नगर भी इसी भूमि में स्थित हैं। दिल्ली, प्रयाग, काशी और पाटलिपुत्र आदि नगर, जो पूर्व काल में देश-देशांतर में प्रसिद्ध थे, इसी मैदान में बसे हैं। इस मैदान को पहले लोग आर्य्यावर्त के नाम से पुकारते थे। प्राचीन काल से ही यह मैदान सुख-समृद्धि का केन्द्र रहा है और यहाँ धन-धान्य की कभी कमी नहीं रही। इस सारे मैदान में राजपूताना ही रेतीला और सूखा है जिससे यह

न तो शेष मैदान की सी बढ़िया पैदावार ही होती और न यहाँ के निवासियों को वे सुविधाएँ प्राप्त हैं जो मैदानवालों को हैं।

विन्ध्याचल—इस मैदान से दक्षिण की ओर चल कर विन्ध्याचल पर्वत है। इसके पास ही सतपुड़ा पर्वत की श्रेणियाँ हैं। ये पर्वत हिमालय की तरह ऊँचे तो नहीं हैं, परन्तु इनकी

तराइयों में बड़े घने जंगल हैं। ये जंगल इतने भयानक हैं कि प्राचीन काल में लोग इन्हें '**महाकांतार**' (अर्थात् बहुत बड़ा जंगल) कहते थे। जैसे हिमालय की ऊँची और बर्फ़ीली चोटियों

को पार करना असम्भव है, उसी प्रकार इन घने वनों में होकर आना-जाना भी अति दुष्कर है। यदि उत्तर के निवासी दक्षिण जाना चाहते थे तो उन्हे वड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। आजकल देश मे रेलो के प्रचार से इतनी कठिनाई नहीं रह गई है, परन्तु प्राचीन काल में जव रेल और आने-जाने के अन्य साधन न थे, लोगो को आने-जाने मे कितनी मुसीवतें झेलनी पड़ती होंगी, इसका अनुमान तुम स्वयं लगा सकते हो।

दक्षिण की पहाड़ी भूमि—विन्ध्याचल से दक्षिण दिशा मे दक्खिन की पहाड़ी भूमि है। यहाँ अनेक पठार है जिनपर कहीं-कहीं जगल है। यहाँ के पहाड़ी-टीले किले वनाने के लिये अच्छे है, परन्तु यहाँ मैदान की सी अच्छी पैदावार नहीं होती। इसलिये यहाँ के निवासियो को अपना जीवन व्यतीत करने के लिये अधिक परिश्रम करना पड़ता है। इन पठारो के दोनो ओर पर्वत-श्रेणियाँ है। पूर्वी किनारे पर पूर्वी घाट है और पश्चिमी घाट पश्चिमी किनारे पर फैला हुआ है। ये पर्वत-श्रेणियाँ कहीं-कहीं टूटी हुई है और उनमे होकर आने-जाने के मार्ग वन सकते है।

समुद्र—जिस प्रकार भारतवर्ष के उत्तर मे दुर्गम पर्वतों की श्रेणियां है, उसी प्रकार उसके दक्षिण में तीन ओर समुद्र हिलोरें ले रहा है। पश्चिम की ओर अरव सागर और दक्षिण मे हिन्द महासागर है। इन समुद्रो का किनारा कई सहस्र मील लम्बा है, लेकिन यह सपाट है। प्राचीन काल मे लोग आजकल के से जहाज वनाना न जानते थे। वर्तमान काल मे कलकत्ता, वम्बई और मद्रास आदि जो सुन्दर नगर समुद्र-तट पर वसे हुए है, वे प्राचीन काल मे न थे। पहले इन स्थानो पर मछली मारने-

वालों के छोटे-छोटे गाँव थे। जब से जहाज़ों का आविष्कार हुआ है और समुद्री रास्ते से व्यापार होना प्रारम्भ हुआ है, तभी से इन नगरों ने भी उन्नति की है और होते-होते आजकल ये भारत के प्रधान नगर समझे जाते हैं।

ब्रह्मा और लंका—ब्रह्मा भारतवर्ष की पूर्वी सीमा पर स्थित है। भारतवर्ष के नक़शे पर एक नज़र डालने से मालूम हो सकता है कि ब्रह्मा और शेष भारतवर्ष के बीच में कई पर्वत-श्रेणियाँ, उत्तर से दक्षिण की ओर, फैली हुई हैं। ये पर्वत-श्रेणियाँ भी घने जंगलों से ढकी हुई हैं। इस कारण आने-जाने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। लंका का द्वीप दक्षिण की ओर हिन्द महासागर में स्थित है। इसके और भारतवर्ष के बीच समुद्र अड़ा हुआ है।

जलवायु—देश का जलवायु सब जगह समान नहीं है। उत्तर की ओर सर्दी के दिनों में काफ़ी सर्दी पड़ती है और गर्मी के मौसिम में खूब गर्मी। पूर्व की ओर पश्चिमीय प्रान्तों की अपेक्षा वर्षा अधिक होती है, क्योंकि बंगाल की खाड़ी से जो जल भरी हवाएँ चलती हैं, वे हिमालय पर्वत से टकराकर वहाँ अधिक वर्षा कर देती हैं। समुद्री किनारे के नगरों का जलवायु समुद्र के कारण न अधिक शीतल है और न अधिक ऊष्ण। देश के विस्तृत होने के कारण भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न प्रकार का जलवायु पाया जाता है।

भौगोलिक स्थिति का प्रभाव—उपर्युक्त वर्णन से तुम्हे भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति का पता लग गया होगा। तुम यह बात भली भाँति ज़ानते हो कि जो मनुष्य जिस स्थान पर रहता है उसपर वहाँ के जलवायु, स्थिति और भूगोल-सम्बन्धी अन्य

वालों का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। उसका रहन-सहन, खाना-पीना उसी स्थान के अनुकूल होता है। यदि तुम किसी गरम देश के निवासी का मुकाबला किसी ठण्डे प्रान्त के रहने-वाले से करो तो यह बात बड़ी अच्छी तरह तुम्हारी समझ मे आ सकती है। दोनो के जीवन और खान-पान में तुम जो अन्तर देखोगे, उसका मुख्य कारण यही होगा कि दोनों के रहने के स्थान भौगोलिक दृष्टि से परस्पर भिन्न हैं। यही तक नहीं, ये बातें मनुष्यों के आचार-विचार, कला, साहित्य आदि पर भी काफी प्रभाव डालती है। कभी-कभी तो देश की उन्नति और अवनति भी उसकी भौगोलिक स्थिति पर निर्भर रहती है।

इस अध्याय मे तुमने देश की भौगोलिक अवस्था अच्छी तरह समझ ली है। इसका प्रभाव हमारे देश और उसके इतिहास पर बिना पड़े कैसे रह सकता था? इस देश की भौगोलिक स्थिति का इस देश के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा है, उसका वर्णन पुस्तक के किसी अगले अध्याय मे किया जायगा, जब कि तुम इतिहास की कुछ और बाते पढ़ लोगे।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष का एक नकशा खींचो और उसमें निम्नलिखित दिखाओ—

(१) हिमालय, हिन्दूकुश, खैबर का दर्रा, विन्ध्याचल, पूर्वी और पश्चिमी घाट तथा अरावली की पहाड़ियाँ।

(२) सिन्ध, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, ताप्ती और गोदावरी।

(३) हरिद्वार, दिल्ली, प्रयाग, काशी और पाटलिपुत्र।

(४) अफ़गानिस्तान, बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिन्द महासागर।

(५) वे भाग जहाँ के निवासियों को खाने-पीने की वस्तुओं के लिए
(क) कम परिश्रम करना पड़ता हो।
(ख) अधिक परिश्रम करना पड़ता हो।

लिख लो और याद करो—

(१) हिमालय पर्वत हमारे देश का चौकीदार है और उत्तरी भाग का पालन भी करता है।
क्या तुम बता सकते हो कि हिमालय उत्तरी भाग का पालन कैसे करता है?
(२) ख़ैबर का दर्रा हमारे देश का फाटक है।

प्रश्न

१—यह देश भारतवर्ष या हिन्दुस्तान क्यों कहलाता है?
२—ख़ैबर के दर्रे पर सरकारी फ़ौज क्यों रहती है?
३—तुम देश के किस भाग में रहना पसन्द करते हो? किन कारणों से तुम्हें वह भाग अधिक पसन्द है?
४—नीचे कुछ बातें लिखी हैं। बताओ कि इनमें से कौन-कौन सी ठीक हैं और कौन-कौन सी ग़लत। ग़लत बातों को ठीक भी करो।
(क) भरत दुष्यन्त का पुत्र था।
(ख) दक्षिण के लोगों को उत्तर के निवासियों की अपेक्षा अपना जीवन व्यतीत करने के लिये कम परिश्रम करना पड़ता है।
(ग) हिमालय को पार करके भारत में आना अत्यन्त सरल है।
(घ) विन्ध्याचल के जंगल बहुत भयानक हैं।
(ङ) सिंध, गंगा और ब्रह्मपुत्र का मैदान सुख-समृद्धि का घर है।
(च) भारत का समुद्र-तट खूब कटा हुआ है।
(छ) प्राचीन काल के प्रसिद्ध नगर समुद्र-तट पर स्थित हैं।
(ज) किसी देश के निवासियों पर वहाँ की भौगोलिक स्थिति का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

वालों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। उसका रहन-सहन, खाना-पीना उसी स्थान के अनुकूल होता है। यदि तुम किसी गरम देश के निवासी का मुकाबला किसी ठण्डे प्रान्त के रहने-वाले से करो तो यह बात बड़ी अच्छी तरह तुम्हारी समझ में आ जाती है। दोनों के जीवन और खान-पान में तुम जो अन्तर देखोगे, उसका मुख्य कारण यही होगा कि दोनों के रहने के स्थान भौगोलिक दृष्टि से परस्पर भिन्न हैं। यही तक नहीं, ये बातें मनुष्यों के आचार-विचार, कला, साहित्य आदि पर भी काफी प्रभाव डालती हैं। कभी-कभी तो देश की उन्नति और अवनति भी उसकी भौगोलिक स्थिति पर निर्भर रहती है।

इस अध्याय में तुमने देश की भौगोलिक अवस्था अच्छी तरह समझ ली है। इसका प्रभाव हमारे देश और उसके इतिहास पर बिना पड़े कैसे रह सकता था? इस देश की भौगो-लिक स्थिति का इस देश के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा है, इसका वर्णन पुस्तक के किसी अगले अध्याय में किया जायगा, जब कि तुम इतिहास की कुछ और बातें पढ़ लोगे।

अभ्यास

नकशा

(५) वे भाग जहाँ के निवासियों को खाने-पीने की वस्तुओं के लिए
(क) कम परिश्रम करना पड़ता हो।
(ख) अधिक परिश्रम करना पड़ता हो।

लिख लो और याद करो—

(१) हिमालय पर्वत हमारे देश का चौकीदार है और उत्तरी भाग का पालन भी करता है।
क्या तुम बता सकते हो कि हिमालय उत्तरी भाग का पालन कैसे करता है?
(२) ख़ैबर का दर्रा हमारे देश का फाटक है।

प्रश्न

१—यह देश भारतवर्ष या हिन्दुस्तान क्यों कहलाता है?
२—ख़ैबर के दर्रे पर सरकारी फ़ौज क्यों रहती है?
३—तुम देश के किस भाग में रहना पसन्द करते हो? किन कारणों से तुम्हें वह भाग अधिक पसन्द है?
४—नीचे कुछ बातें लिखी हैं। बताओ कि इनमें से कौन-कौन सी ठीक हैं और कौन-कौन सी ग़लत। ग़लत बातों को ठीक भी करो।
(क) भरत दुष्यन्त का पुत्र था।
(ख) दक्षिण के लोगों को उत्तर के निवासियों की अपेक्षा अपना जीवन व्यतीत करने के लिये कम परिश्रम करना पड़ता है।
(ग) हिमालय को पार करके भारत में आना अत्यन्त सरल है।
(घ) विन्ध्याचल के जंगल बहुत भयानक हैं।
(ङ) सिंध, गंगा और ब्रह्मपुत्र का मैदान सुख-समृद्धि का घर है।
(च) भारत का समुद्र-तट खूब कटा हुआ है।
(छ) प्राचीन काल के प्रसिद्ध नगर समुद्र-तट पर स्थित हैं।
(ज) किसी देश के निवासियों पर वहाँ की भौगोलिक स्थिति का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

वालों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। उसका रहन-सहन, खाना-पीना उसी स्थान के अनुकूल होता है। यदि तुम किसी गरम देश के निवासी का मुकाबला किसी ठण्डे प्रान्त के रहने-वाले से करो तो यह बात बड़ी अच्छी तरह तुम्हारी समझ में आ सकती है। दोनों के जीवन और खान-पान में तुम जो अन्तर देखोगे, उसका मुख्य कारण यही होगा कि दोनों के रहने के स्थान भौगोलिक दृष्टि से परस्पर भिन्न हैं। यहीं तक नहीं, ये बातें मनुष्यों के आचार-विचार, कला, साहित्य आदि पर भी काफी प्रभाव डालती हैं। कभी-कभी तो देश की उन्नति और अवनति भी उसकी भौगोलिक स्थिति पर निर्भर रहती है।

इस अध्याय में तुमने देश की भौगोलिक अवस्था अच्छी तरह समझ ली है। इसका प्रभाव हमारे देश और उसके इतिहास पर बिना पड़े कैसे रह सकता था? इस देश की भौगो-लिक स्थिति का इस देश के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा है, इसका वर्णन पुस्तक के किसी अगले अध्याय में किया जायगा, जब कि तुम इतिहास की कुछ और बातें पढ़ लोगे।

अभ्यास

(५) वे भाग जहाँ के निवासियों को खाने-पीने की वस्तुओं के लिए
(क) कम परिश्रम करना पड़ता हो।
(ख) अधिक परिश्रम करना पड़ता हो।

लिख लो और याद करो—

(१) हिमालय पर्वत हमारे देश का चौकीदार है और उत्तरी भाग का पालन भी करता है।
क्या तुम बता सकते हो कि हिमालय उत्तरी भाग का पालन कैसे करता है?
(२) ख़ैबर का दर्रा हमारे देश का फाटक है।

प्रश्न

१—यह देश भारतवर्ष या हिन्दुस्तान क्यों कहलाता है?
२—ख़ैबर के दर्रे पर सरकारी फ़ौज क्यों रहती है?
३—तुम देश के किस भाग में रहना पसन्द करते हो? किन कारणों से तुम्हें वह भाग अधिक पसन्द है?
४—नीचे कुछ बातें लिखी हैं। बताओ कि इनमें से कौन-कौन सी ठीक हैं और कौन-कौन सी ग़लत। ग़लत बातों को ठीक भी करो।
(क) भरत दुष्यन्त का पुत्र था।
(ख) दक्षिण के लोगों को उत्तर के निवासियों की अपेक्षा अपना जीवन व्यतीत करने के लिये कम परिश्रम करना पड़ता है।
(ग) हिमालय को पार करके भारत में आना अत्यन्त सरल है।
(घ) विन्ध्याचल के जंगल बहुत भयानक हैं।
(ङ) सिंध, गंगा और ब्रह्मपुत्र का मैदान सुख-समृद्धि का घर है।
(च) भारत का समुद्र-तट खूब कटा हुआ है।
(छ) प्राचीन काल के प्रसिद्ध नगर समुद्र-तट पर स्थित हैं।
(ज) किसी देश के निवासियों पर वहाँ की भौगोलिक स्थिति का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

सोचो और बताओ—

अपने प्रतिदिन के जीवन पर दृष्टि डालते हुए बताओ कि हम कितनी बातें परस्पर एक दूसरे से मिलकर सीखते हैं। इसी प्रकार सोचो कि किसी देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के निवासियों का, या एक देश के निवासियों का दूसरे देश के निवासियों के यहाँ आना-जाना और मिलना-जुलना लाभदायक है या नहीं।

इसी विचार को ध्यान में रखकर बताओ कि निम्नलिखित का होना इस विचार से लाभदायक रहा या हानिकारक—

(१) हिमालय

(२) विन्ध्याचल और उसके जंगल

(३) असम की पहाड़ियाँ

तुमने पंजाबी को भी देखा है और बंगाली को भी। इन दोनों के जाड़े और गर्मियों के वस्त्रों का मुकाबला करो। इनमें जो अन्तर है, उसका भौगोलिक कारण बताओ।

दूर क्यों जाओ, संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी और पूर्वी भागों के निवासियों के खाने-पीने की वस्तुओं के विषय में अपने अध्यापक से पूछो कि जलवायु का खाने-पीने पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अध्याय २

भारतवर्ष के मूल निवासी

भारतवर्ष का इतिहास—पिछली कक्षाओं में तुम ऐतिहासिक कहानियाँ पढ़ चुके हो। वे केवल कहानियाँ ही न थीं जिनमें अधिकांश में झूठ और सच मिला हुआ रहता है। वरन् उनमें हमारे देशवासियों के जीवन की सच्ची घटनाओं का वर्णन है। तब तुमने थोड़े से ही व्यक्तियों के विषय में पढ़ा था, अब तुम अपने इस देश के निवासियों का वर्णन प्रारम्भ से लेकर अब तक पढ़ोगे। किसी देश के निवासियों के विकास का इस प्रकार का वर्णन ही उस देश का इतिहास कहलाता है। उस देश के लोगों ने अपने रहन-सहन, आचार-विचार और कला-कौशल आदि में किस प्रकार धीरे-धीरे उन्नति की, इन सब बातों का ब्यौरेवार वर्णन हमें इतिहास ही में पढ़ने को मिल सकता है। तुम देखते हो कि हमारे देश में अधिकतर हिन्दू हैं; फिर मुसलमान भी हैं, जिनकी संख्या उतनी नहीं है। इनके अतिरिक्त ईसाई और अंग्रेज़ भी देखे जाते हैं, जिनकी संख्या बहुत कम है। पूर्व काल में इनमें से यहाँ कोई भी न था। देश में और ही लोग बसे हुए थे, जिनके विषय में तुम्हें इस अध्याय में बतलाया जायगा। तो फिर ये हिन्दू, मुसलमान, अंग्रेज़ और ईसाई यहाँ आकर कैसे रहने लगे—ये सब बातें तुमको

भारतवर्ष का इतिहास भी बतलावेगा। इसी से तुम यह भी जानोगे कि ये लोग कहाँ से आये; प्राचीन काल में उनके रहन-सहन की क्या विधि थी और किस प्रकार उनमें परिवर्तन होते-होते देश वर्तमान अवस्था को पहुँचा है।

प्राचीन काल—आजकल हमारा देश देखने में बड़ा सुन्दर प्रतीत होता है। इसमें कई सुन्दर शहर हैं जिनकी शोभा देखने योग्य है। शहरों के अतिरिक्त देश की एक बहुत बड़ी जनसंख्या गाँवों में रहती है जहाँ उन लोगों ने अपने रहने के लिये मिट्टी के सुन्दर घर बना रक्खे हैं। लोगों का पहनाव-उढ़ाव, उनका खाना-पीना, उनकी बोल-चाल भी वर्तमान समय के सभ्य देशों के मुकाबले में बुरी नहीं है। यह अवस्था आजकल की है; परन्तु प्राचीन काल में—अब से कई हजार वर्ष पहले—यहाँ की दशा बिलकुल इसके विपरीत थी। उस समय न आजकल के से सुन्दर शहर थे, न गाँव, न सड़कें थीं और न बाजार। जो चहल-पहल तुम देश में आजकल देखते हो, उसका उन दिनों नाम भी न था। उन दिनों सारा देश घने जंगलों से ढका रहता था। इन जंगलों में कुछ थोड़े से लोग रहते थे जो बहुत ही असभ्य थे। वे बन-मानुसों की तरह पेड़ों के खोखलों में या पहाड़ों की गुफाओं में रहते थे। वे कपड़ा बुनना न जानते थे; अतः वृक्षों के पत्ते या जानवरों की खालें लपेट कर अपने शरीर की सर्दी-गर्मी से रक्षा किया करते थे। ये लोग धातुओं का प्रयोग न जानते थे और पत्थर के टुकड़ों को घिसकर उनसे भद्दे हथियार बना लिया करते थे और उन्हीं से जंगली जानवरों का शिकार करके अपना पेट पालते थे। इन लोगों के उस काल

के हथियार अब भी कहीं-कहीं भूमि में गड़े हुए पाये जाते हैं। भारतवर्ष के सबसे पुराने रहनेवाले यही लोग थे।
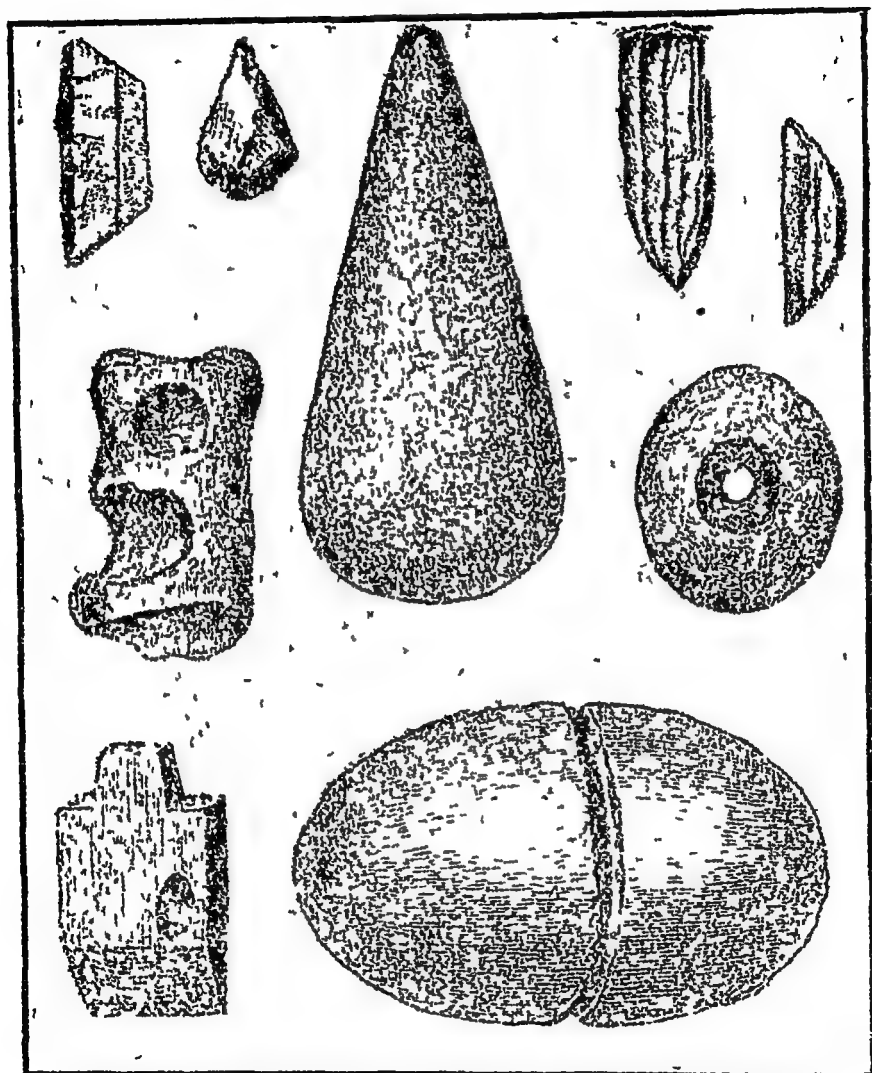
प्राचीन काल के निवासियों के पत्थर के हथियार।

द्रविड़—ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों देश में एक दूसरी जाति के लोगों ने आना आरम्भ किया। यह जाति द्रविड़ लोगों की थी। द्रविड़ लोग कहाँ से आये, यह निश्चित

रूप से नहीं कहा जा सकता। कुछ विद्वानों का मत है कि ये लोग उत्तर-पश्चिम के देशों से आये थे; और कुछ लोगों का अनुमान है कि भारत के दक्षिण में, जहाँ आजकल हिन्द महासागर है, वहाँ पहले एक देश था जो बहुत दिन हुए, समुद्र के पानी में समा गया है। कहते हैं कि द्रविड़ लोग इसी देश से भारतवर्ष में आये थे। कुछ विद्वान उन्हें यहाँ के मूल निवासी भी मानते हैं। जो हो, आर्य जाति के आने से पहले भारतवर्ष में द्रविड़ों का ही बोल-बाला था।

द्रविड़ों की सभ्यता—द्रविड़ लोग प्राचीन निवासियों की अपेक्षा अधिक सभ्य थे। ये लोग खेती करना जानते थे,

द्रविड़ों की नागपूजा

उपयोगी पशु पालते थे और गाँव में छोटे-छोटे घर बनाकर रहते थे। इन लोगों का भूत-प्रेतों पर विश्वास था और ये नागों और

शिवजी, भूमि तथा वृक्षों की पूजा किया करते थे। इन लोगों में मुर्दों को भूमि में गाड़ने की प्रथा थी और ये क़ब्र में मुर्दे की आत्मा के लिये बर्तनों में भोजन की सामग्री भरकर रख दिया करते थे। दक्षिण भारत में अब भी कहीं-कहीं पृथ्वी के खोदे जाने पर ऐसे बहुत से बर्तन मिलते हैं। द्रविड़ लोग धातुओं का प्रयोग भली भाँति जानते थे। ये नावों द्वारा व्यापार भी करते थे। इनकी भाषा मद्रास प्रान्त की तामिल भाषा से मिलती-जुलती थी। इनका क़द छोटा और रंग काला था। इनकी आँखें बड़ी-बड़ी और नाक चिपटी होती थी। द्रविड़ लोग वर्तमान काल में भी मद्रास प्रान्त और उसके आस-पास के स्थानों मे मिलते हैं।

इस युग का जो कुछ हाल हम जानते हैं, उसका पत्थरों तथा भिन्न-भिन्न धातुओं के ओज़ारों तथा बर्तनों आदि से अनुमान लगाया है। कोई लिखा हुआ वर्णन नहीं मिलता, न कोई क्रमबद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ ही है। अतः इस युग को "इतिहास से पहले का युग" कहते हैं।

नोट—मूल निवासियों की सभ्यता का दिग्दर्शनः—पञ्जाब के हरप्पा और सिन्ध के मोहेञ्जदारो नामक स्थानों में भूमि में गड़े हुए नगरों के टूटे-फूटे चिह्न मिले हैं। इससे वहाँ के लोगों के नागरिक जीवन का जीता-जागता चित्र हमारे नेत्रों के सामने उपस्थित होता है।

प्रतीत होता है कि इन स्थानों के निवासी सभ्य थे। पक्की सड़कें थीं, नगर सुन्दर और सुसज्जित थे। खाने-पीने की प्रचुर सामग्री थी। वे शिव तथा शक्ति की उपासना करते थे। विद्वानों की सम्मति है कि ये नगर आर्य्यों के आने के पूर्व प्रागैतिहासिक काल में अवस्थित थे।

अभ्यास

चित्र-चर्चा

(१) इस अध्याय में द्रविड़ों से भी पहले रहनेवाली जातियों के हथियारों

अध्याय ३

आर्य्य

आर्य्यों का आना—जब देश में द्रविड़ अच्छी तरह बस गये और सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगे, तब एक और दूसरी जाति भारत में आई। यह जाति आर्य्य लोगों की थी। आर्य्य अब से लगभग ५००० वर्ष पूर्व खैबर के मार्ग से भारतवर्ष में आये थे। वास्तव में भारतवर्ष का क्रमबद्ध इतिहास आर्य्यों के आगमन से ही प्रारम्भ होता है।

आर्य्यों की जन्म-भूमि—भारतवर्ष में आने के पहले आर्य्य लोग कहाँ रहते थे, इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग कहते हैं कि आर्य्य लोग मध्य एशिया के उस भाग से आये थे जहाँ सर और आमू नदियाँ बहती हैं। कुछ विद्वानों का कथन है कि आर्य्य लोग सबसे पहले यूरोप के उस भाग में रहा करते थे जहाँ आजकल आस्ट्रिया-हंगरी देश स्थित है। सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय बाल गंगाधर तिलक ने सिद्ध किया है कि आर्य्यों का आदिम निवास-स्थान आर्कटिक सागर के तट पर था। कोई-कोई आर्य्यों की जन्म-भूमि डैन्यूब नदी की घाटी मानते हैं और किन्हीं-किन्हीं का मत है कि आर्य्य कहीं बाहर से नहीं आये किन्तु उनका आदिम निवास भारतवर्ष ही है। किन्हीं-किन्हीं विद्वानों की सम्मति में आर्य्य लोग मध्य एशिया में रहते थे, चाहे उनकी जन्म-भूमि कहीं भी रही हो। किन्तु जब वहाँ इन लोगों की संख्या बढ़ी, तब ये अपनी जन्मभूमि को छोड़ कर अन्य-अन्य देशों की ओर चल पड़े। जैसे इनका एक समूह यूरोप की ओर चला

अथर्ववेद। इस प्रकार सब मिलाकर चार वेद हैं। इनसे हमें आर्य्यों के उस समय की रहन-सहन तथा रीति-रिवाजों का पता लगता है। इस दृष्टि से इतिहास के लिये वेद बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। यदि ये वेद न होते तो हमारा उस काल का ऐतिहासिक ज्ञान अधूरा ही रहता।

आर्य्यों की सभ्यता—आर्य्य रंग-रूप में द्रविड़ों के समान न थे। उनका रंग गोरा, नाक लम्बी, आँखें तेज, बाल चमकीले

(क)-प्राचीन काल में आर्यों का एक घर

और चेहरा सुन्दर था। वे छोटे-छोटे गाँवों में लकड़ी के सुन्दर घर बनाकर रहते थे। खेती द्वारा अन्न पैदा करते थे। वे सूत कातना और कपड़ा बुनना भी जानते थे और गाय-बैल आदि उपयोगी पशु भी पालते थे। उनका साधारण भोजन था—घी, दूध, अन्न और फल। वे नाचना-गाना भी जानते थे और सोम-रस नामक एक नशीले पदार्थ का सेवन करते थे।

आर्य्य लोग युद्ध करने में कुशल थे। वे धनुष-बाण द्वारा रथों पर चढ़कर युद्ध किया करते थे। प्रत्येक घराने में जो बूढ़ा होता था, घर के सब लोग उसकी आज्ञा का पालन करते थे। वे प्रकृति की उपासना द्वारा 'ब्रह्म' अर्थात् ईश्वर की पूजा किया करते थे। पाश्चात्य विद्वानो ने आर्यों को प्रकृति का उपासक बतलाया है। डाक्टर स्मिथ आदि विद्वानो ने भी गलती की है। वास्तव मे आर्य लोग प्रकृति द्वारा ब्रह्म की उपासना भिन्न-भिन्न नामों से करते थे। उसी ब्रह्म का सविता, इन्द्र, वरुण आदि से प्रतिपादन किया गया है। अग्नि, सूर्य्य, इन्द्र और वायु आदि उन दिनों के प्रसिद्ध देवता थे। उन दिनो आजकल के समान जाति-पाँति का भेद न था और न स्त्रियो मे पर्दे की प्रथा ही थी। वे पुरुषों के साथ बैठकर यज्ञ आदि धार्मिक कार्य्यों में स्वतन्त्रता से सम्मिलित होती थीं। ऋग्वेद के कई मंत्र भी स्त्रियों के बनाये हुए हैं। उन दिनों मूर्ति-पूजा न होती थी, अतः मन्दिरों का नाम भी न था।

(ग)—सोमलता

उस काल में झगड़े तै करने के लिये आजकल की तरह अदालतें न थीं। प्रत्येक ग्राम में एक पंचायत होती थी जिसके पंच किसी चबूतरे पर बैठकर न्याय किया करते थे। प्रत्येक समुदाय का एक अलग राजा होता था, किन्तु उसमें इतनी शक्ति नहीं होती थी कि जो चाहे सो कर सके। उसे प्रजा के बड़े-बूढ़ों से परामर्श करना पड़ता था और उनकी सम्मति के अनुसार ही चलना पड़ता था। आर्य्य बढ़ई, लुहार और सुनार का काम
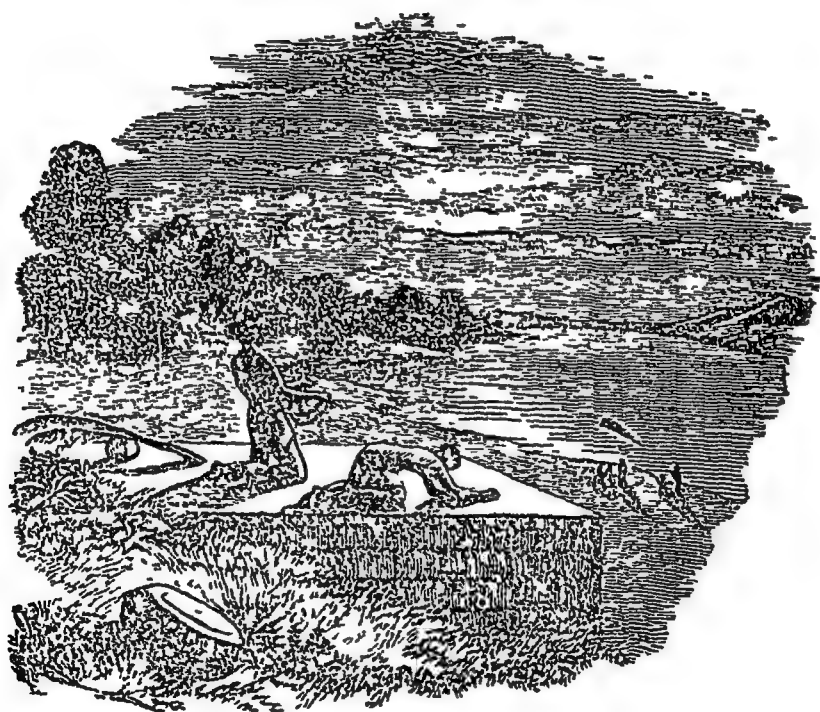
आर्यों की सूर्योपासना

जानते थे और उन्हें धातुओं का प्रयोग करना भी भली भाँति आता था। वे शिकार भी खेला करते थे और जूआ खेलने का रिवाज भी उनमें था। वे सांसारिक सुखों के साथ पारलौकिक

पुत्र भी चाहते थे। जिस घर मे बच्चों की हँसी न सुनाई दे, वह श्मशान समझा जाता था।

वैदिक काल में वर्ण-व्यवस्था—जिस काल मे आर्य लोग भारत में आकर बसे थे और वेदो के अनुसार व्यवहार करते थे, वह वैदिक काल कहलाता है। वैदिक काल मे वर्तमान काल की तरह अनेक जातियाँ न थीं। धीरे-धीरे आर्य्यों की संख्या घटी और उन्हे यहाँ के मूल निवासियो से युद्ध भी करना पड़ा। उनका बहुत सा समय युद्ध में ही बीतने लगा। नित्य के धार्मिक कार्य्य कौन और कब करे? यह देख कर उन्होने अपने समूह में से कुछ व्यक्तियो को केवल धार्मिक कार्य्य करने के लिये नियुक्त कर दिया। यही लोग बाद मे ब्राह्मण कहलाने लगे। इसी तरह कुछ लोगो का काम केवल युद्ध करना होता था। वे क्षत्रिय नाम से प्रसिद्ध हुए। तीसरा वर्ण वैश्यों का था जो खेती-बारी और व्यापार का काम करता था। इन तीन वर्णों के अतिरिक्त चौथा वर्ण शूद्रों का था। ये लोग उच्च वर्ण के लोगो की सेवा किया करते थे। इस प्रकार आर्य्य जाति चार भागों में विभक्त हो गई और प्रत्येक भाग 'वर्ण' कहलाने लगा।

चार आश्रम—आर्य्यों ने मनुष्य की आयु को चार भागों में बाँट रखा था। उन भागों को आश्रम कहते थे। पहला ब्रह्मचर्य्य आश्रम था। इस आश्रम में प्रत्येक मनुष्य का काम विद्या पढ़ना और अपने शरीर को पुष्ट बनाना होता था। दूसरा गृहस्थ आश्रम था। विद्या पढ़ कर ब्रह्मचारी इस आश्रम में प्रवेश करता था। इस समय विवाह करके वह अपनी जीविका कमाता था और पारिवारिक जीवन व्यतीत करता था। तीसरा आश्रम

वानप्रस्थ का था। इस समय उस मनुष्य की आयु पचास वर्ष के लगभग हो जाती थी और वह अपनी स्त्री को लेकर वन में चला जाता था और वहीं ईश्वर के भजन में जीवन व्यतीत करता था। उसके बाद संन्यास का चौथा आश्रम आता था। इस आश्रम में वह संसार की सब वस्तुओं को त्याग देता था, प्रत्येक पदार्थ से मोह तोड़ लेता था और साधु-संन्यासियों के समान गृहस्थों को उपदेश देता फिरता था।

अभ्यास

नक़शा

युरोप और एशिया का मिला हुआ एक नक़शा या तो अपनी कापी में खींच लो या बाज़ार से मोल ले आओ। उसमें दिखाओ—

(१) युरोप, एशिया, भारतवर्ष, अरब और फ़ारस।
(२) आर्य्यों की जन्मभूमि।
(३) तीर द्वारा आर्यों का निम्नलिखित देशों को जाने का मार्ग—
 (क) जर्मनी, इटली और इङ्गलैण्ड;
 (ख) फ़ारस और अफ़गानिस्तान;
 (ग) भारतवर्ष।

चित्र-चर्चा—

१—इस अध्याय में प्राचीन काल में आर्य्यों के घर का चित्र दिया गया है। इसे ध्यान से देखकर इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो—

(क) यह किस चीज़ का बना है? आजकल तुम्हारे घर किससे बनते हैं?

(ख) मकान का द्वार किस तरह का बना हुआ है? तुम्हारे घर का द्वार किस तरह का है?

(ग) क्या तुम ऐसे घर में रहना चाहते हो? क्यों?

२—शेष दो चित्रों में से एक में आर्यों की सूर्य-पूजा दिखाई गई है। उसका वर्णन अपनी कापी में लिखो। सोमलता का चित्र अपनी कापी में खींचो।

याद करो—

आर्य लोग अब से लगभग ५,००० वर्ष पूर्व अपनी जन्म-भूमि से चल कर संसार के भिन्न-भिन्न देशों में जाकर बसे। संसार की समस्त जातियाँ आर्यों की सन्तान हैं।

भिन्न-भिन्न जातियों की भाषाओं के अनेक शब्द परस्पर बहुत कुछ मिलते हैं। जैसे—

संस्कृत	फ़ारसी	लैटिन	अंग्रेज़ी
पितृ	पिदर	पेटर	फादर
मातृ	मादर	मेटर	मदर
भ्रातृ	ब्रादर	फ्रेटर	ब्रदर

प्रश्न

१—नीचे वैदिक काल की कुछ ऐतिहासिक बातें लिखी हैं। इनमें से कुछ ग़लत हैं और कुछ ठीक। बताओ कि कौनसी बातें ठीक हैं और कौनसी ग़लत? ग़लत के स्थान में ठीक उत्तर क्या होना चाहिए?

(क) आर्य लोग भारतवर्ष में आकर सबसे पहले बंगाल में बसे।

(ख) वे लोग युद्ध में बन्दूकों का प्रयोग करते थे।

(ग) आर्यों का रंग-रूप द्रविड़ों से सुन्दर था।

(घ) वे सूत कातना और बुनना भी जानते थे।

(ङ) वे ईंटों और पत्थरों के मकान बनाकर रहते थे।

(च) वैदिक काल में आर्य्यों की स्त्रियाँ पर्दा करती थीं।

(छ) बहुत से द्रविड़ आर्य्यों से हार कर दक्षिण की ओर चले गये।

(ज) आर्य्य लोग मूर्ति-पूजा करते थे।

(झ) उस समय आजकल के समान अनेक जातियाँ न थीं।

(ञ) आर्य्य लोग खेती करना न जानते थे।

२—वैदिक काल के आर्य्यों की नीचे लिखी बातें बतलाओ और उनकी तुलना अपने वर्तमान काल के जीवन से करो—

वैदिक काल	वर्तमान काल
(क) रहन-सहन	
(ख) खान-पान	
(ग) सभ्यता	
(घ) धर्म	

३—निम्नलिखित विषयों पर छोटे-छोटे ऐतिहासिक नोट लिखो—

(क) वेद

(ख) वर्ण

(ग) आर्य्यों की आयु के चार आश्रम।

खेल—

१—मान लो कि तुम भी उन्हीं आर्य्यों में से एक हो जो अब से लगभग ५००० वर्ष पूर्व भारत में आये थे। अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के सामने नीचे लिखे संकेतों की सहायता से उस समय की कथा का वर्णन करो—

(१) अपनी जन्मभूमि

(२) जन्मभूमि का त्याग और उसके कारण

(३) किस प्रकार तुम लोगों की भिन्न-भिन्न शाखाएँ भिन्न-भिन्न देशों को चली गईं।

(४) किस प्रकार तुम्हारा एक समूह भारतवर्ष में आया ।

[यहाँ संक्षेप में हिमालय पर्वत और खैबर के दर्रे का वर्णन करो और यह भी बताओ कि पंजाब में प्रवेश करने पर तुमने वहाँ क्या देखा—नदियाँ, जंगल आदि ।]

(५) तुम्हारा पंजाब में बसना

(६) द्रविड़ों से युद्ध और विजय

(७) द्रविड़ों का रंग-रूप, जैसा तुमने देखा हो

तुम इस प्रकार आरम्भ कर सकते हो—

हमारी जन्मभूमि··········थी । अब से लगभग ५००० वर्ष पूर्व हम लोग··········(इत्यादि)

अध्याय ४

रामायण और महाभारत

आर्य्यों के अन्य ग्रन्थ—वेदों के अतिरिक्त और भी कई ऐसे प्राचीन ग्रन्थ हैं जिनसे हमें आर्य्यों के विषय में बहुत सा वृत्तान्त ज्ञात होता है। इनमें से 'रामायण' और 'महाभारत' अधिक प्रसिद्ध हैं।

रामायण की कथा—जब आर्य्य लोगों को यहाँ रहते-रहते बहुत दिन हो गये, तब धीरे-धीरे उन्होंने यहाँ अपने राज्य भी स्थापित कर लिये। उनमें से एक राज्य कोशल था जिसकी राजधानी अयोध्या थी। वर्तमान काल में इस भाग को अवध के नाम से पुकारते हैं। कोशल राज्य के पूर्व में एक दूसरा राज्य और था जो विदेह के नाम से प्रसिद्ध था। विदेह राज्य की राजधानी मिथिला थी।

प्राचीन काल में कोशल के राजा महाराज दशरथ थे और विदेह में राजा जनक राज्य करते थे। राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं और चार पुत्र थे जिनमें से रामचन्द्रजी और लक्ष्मण-जी का नाम बहुत प्रसिद्ध है। रामचन्द्रजी महाराज दशरथ की सबसे बड़ी रानी कौशल्या के पुत्र थे और चारों भाइयों में बड़े थे। राजा दशरथ उनको बहुत प्यार करते थे।

मिथिला के राजा जनक की एक पुत्री थी जो बड़ी रूपवती और सुशीला थी। उसके सौन्दर्य की प्रशंसा बहुत दूर-दूर तक

पैदा हुई थी। उसका नाम सीता था। राजा जनक ने अपनी कन्या के विवाह के लिये 'स्वयंवर' रचा। उनके यहाँ एक बहुत बड़ा पुराना धनुष था। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जो इस धनुष को तोड़ देगा, सीताजी उसीको ब्याह दी जायँगी। रामचन्द्र-जी भी अपने भाई लक्ष्मण के साथ उस स्वयंवर में सम्मिलित हुए थे। रामचन्द्रजी ने वह धनुष तोड़ दिया और उनका विवाह सीताजी के साथ कर दिया गया।

सुमित्रा और कैकेयी दशरथजी की छोटी रानियाँ थीं। कैकेयी के पुत्र भरतजी थे। रानी कैकेयी की इच्छा थी कि राज-गद्दी मेरे लड़के भरतजी को दी जाय। रानी के इसी हठ के कारण महाराज दशरथ ने अपने प्रिय पुत्र रामचन्द्र और लक्ष्मण को १४ वर्ष तक वन में रहने के लिये भेज दिया। राम-चन्द्रजी के साथ उनकी पत्नी सीताजी भी वन को गई। अपने प्रिय पुत्र रामचन्द्रजी के वन चले जाने पर राजा दशरथ ने भी अपने प्राण त्याग दिये। (नक़शे में रामचन्द्रजी के वन जाने का मार्ग देखो।)

वन में लंका का राजा रावण एक दिन सीताजी को चुरा कर लंका से ले गया। जब रामचन्द्रजी को यह समाचार विदित हुआ तो उन्होंने रावण पर चढ़ाई करके सीताजी को पुनः अपने पास लाने का विचार किया। वन में बन्दरों के राजा सुग्रीव के साथ उन्होंने मित्रता की और उसकी सेना की सहायता से रावण को मार कर सीता को प्राप्त किया।

वनवास की अवधि समाप्त होने पर रामचन्द्रजी अपने भाई और स्त्री के साथ अयोध्या लौट आये। उनके आने पर भरतजी

ने राजसिंहासन उन्हीं को दे दिया। रामचन्द्रजी ने सुखपूर्वक बहुत काल तक राज्य किया।

महाभारत की कथा—दूसरा ग्रंथ महाभारत है। यह बहुत बड़ा है। इसमें कौरवों और पाण्डवों के युद्ध की कथा है।

पूर्व काल में गंगा और यमुना नदी के मैदान में कुरु नाम का प्रसिद्ध राज्य था। उसकी राजधानी हस्तिनापुर थी। हस्तिनापुर बहुत सुन्दर नगर था। यह आधुनिक मेरठ के समीप बसा हुआ था। इस राज्य पर क्षत्रिय वंश के दो भाई राज्य करते थे। इनमें से एक का नाम था पाण्डु और दूसरे का धृतराष्ट्र। पाण्डु के पाँच पुत्र थे। ये सब पाण्डव कहलाते थे। इनमें सबसे बड़े का नाम युधिष्ठिर था। धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव कहलाते थे और उनमें सब से बड़े का नाम दुर्योधन था।

कौरवों और पाण्डवों में परस्पर झगड़े हुआ करते थे। दुर्योधन पाण्डवों से बड़ी ईर्ष्या करता था। उसने पाण्डवों के साथ जूआ खेलकर उनका सारा राज्य जीत लिया और तेरह वर्ष के लिये उन्हें देश-निकाला दे दिया। तेरह वर्ष तक पाण्डव इधर-उधर जंगलों में अपने दिन काटते फिरे।

इस प्रकार तेरह वर्ष वन में व्यतीत करने के उपरान्त पाण्डवों ने दुर्योधन से अपना राज्य माँगा। दुर्योधन अब भी उनका राज्य देने को तैयार न हुआ। इसी पर दोनों में बहुत भीषण युद्ध छिड़ा। यह युद्ध कुरुक्षेत्र के मैदान में हुआ था। यह मैदान इन्द्रप्रस्थ से थोड़ी दूर उत्तर की ओर है। इन्द्रप्रस्थ को वर्तमान काल में दिल्ली कहते हैं।

इस युद्ध में पाण्डवों की विजय हुई। यह युद्ध महाभारत का

युद्ध कहलाता है और संसार के बहुत बड़े युद्धों में से एक समझा जाता है। इसमें लाखों योद्धाओं के प्राण गये। श्रीकृष्ण ने उस युद्ध में पाण्डवों का पक्ष लिया था।

रामायण और महाभारत के समय में आर्य्यों की सभ्यता—इस समय तक आर्य्यों की प्राचीन सभ्यता में परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया था। वर्ण-व्यवस्था वैदिक काल की अपेक्षा अब अधिक दृढ़ हो चली थी। प्रत्येक वर्ण कई अंगो मे विभक्त हो गया और इस प्रकार जातियो का विकास हुआ। एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों के साथ खान-पान और विवाह आदि न करते थे। वैदिक काल में आर्य्य लोग प्राकृतिक शक्तियों ही की पूजा करते थे, परन्तु अब लोग ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि देवताओं को भी मानने लगे थे। रामचन्द्र और कृष्णजी को ईश्वर का अवतार समझते थे। इस काल में ब्राह्मण बहुत मान्य समझे जाते थे और समाज मे उनका बड़ा आदर था। क्षत्रिय लोग राजकाज चलाने मे उनसे परामर्श लेते थे।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे खींच कर दिखाओ—

क—रामायण का समय—

(१) कोशल, अयोध्या, विदेह, मिथिला, प्रयाग, चित्रकूट, पंचवटी और लंका।

(२) रामचन्द्रजी के वन जाने का मार्ग।

ख—महाभारत का समय—

कुरु राज्य, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ और कुरुक्षेत्र।
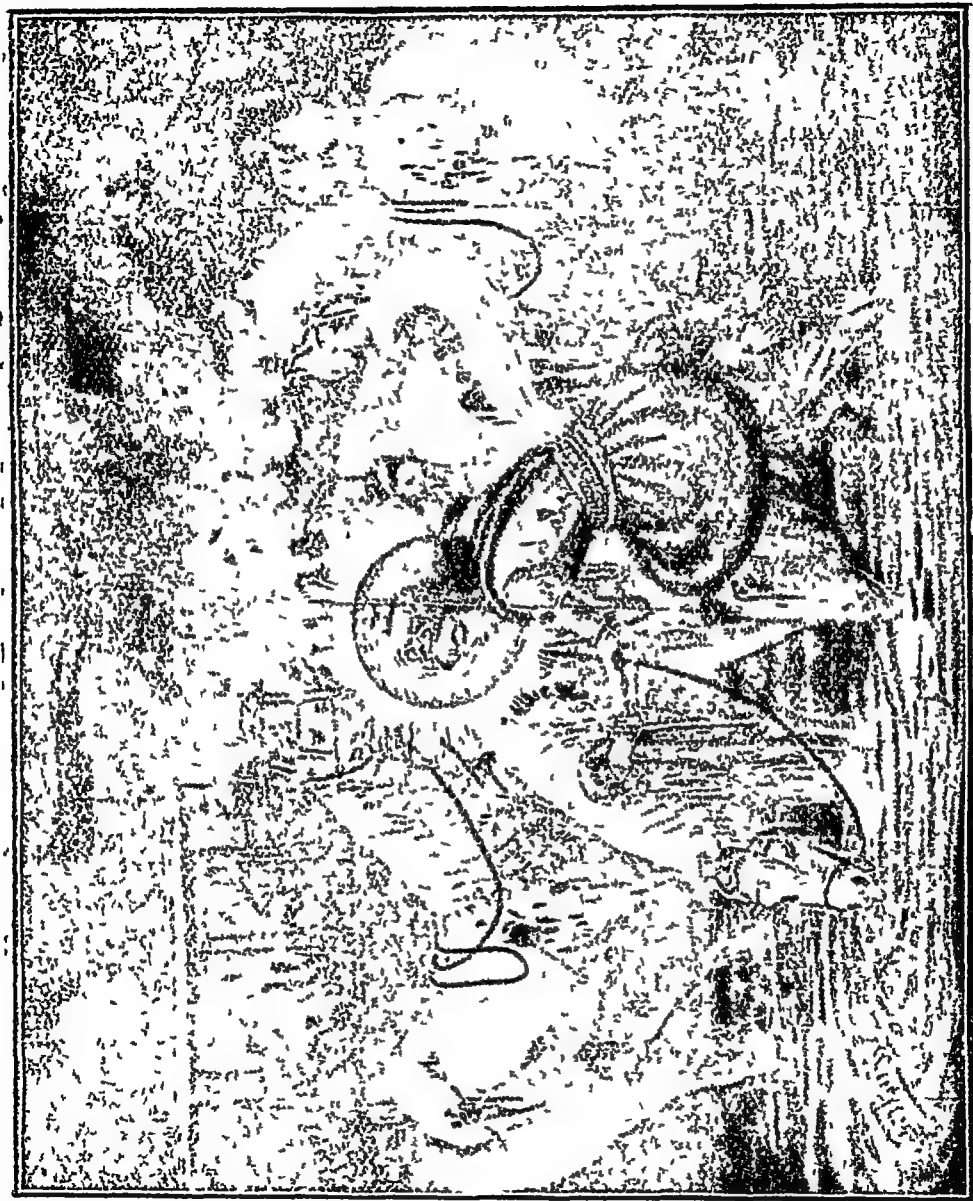
महाभारत के युद्ध का एक दृश्य

चित्र-चर्चा—

इस अध्याय का पहला चित्र देखो। यहाँ रामचन्द्रजी, सीताजी और लक्ष्मणजी वन में अपनी कुटी के आगे बैठे हैं। उनसे मिलने के लिए उनके भाई भरत और शत्रुघ्न अयोध्या से आये हैं। देखकर बताओ।

(१) भरतजी क्या कर रहे हैं?

(२) शत्रुघ्न कहाँ हैं?

(३) लक्ष्मणजी क्या कर रहे हैं?

(४) रामचन्द्रजी अपनी दोनों भुजाएँ किस लिए पसार रहे हैं?

इन सब लोगों का पहनावा देखो। ध्यानपूर्वक उनके सिरों को देखो। प्राचीन काल में प्रायः राजकुमार भी सिर पर जटाएँ रखते थे।

वन मे रामचन्द्रजी की कुटी को देखो। उसके द्वार पर जो अस्त्र-शस्त्र टँगे हैं, उनके नाम बताओ। इनमें से कुछ के चित्र अपनी कापी में खींचो।

दूसरा चित्र कुरुक्षेत्र के मैदान का है। युद्ध में बाणों की चोट से घोड़े घायल हो गये हैं। अर्जुन (युधिष्ठिर का छोटा भाई) रथ रोक कर घोड़ों के घाव धो रहा है। प्राचीन काल में युद्ध में ऐसे ही रथों का प्रयोग होता था। अगर तुम ऐसे रथ का चित्र बना सकते हो तो अपनी कापी में बनाओ।

प्रश्न

१—नीचे के प्रत्येक वाक्य के लिये कोष्ठ में दिए हुए शब्दों में से एक शब्द छाँटो जिससे वाक्य का कथन सत्य समझा जाय—

(क) दशरथजी (अयोध्या, हस्तिनापुर, प्रयाग) के राजा थे।

(ख) राजा जनक की राजधानी (चित्रकूट, मिथिला, इन्द्रप्रस्थ) थी।

(ग) पाण्डवों में सबसे बड़े भाई (रामचन्द्र, युधिष्ठिर, दुर्योधन) थे।

(घ) महाराज दशरथ की सबसे छोटी रानी का नाम (कैकेयी, सुमित्रा, कौशल्या) था।

२—इन वाक्यों के निम्नलिखित स्थान को पूरा करने के लिये नीचे दिये हुए शब्दों में से प्रत्येक वाक्य में एक शब्द लगाओ—

सीता	कुरुक्षेत्र	रावण
पाण्डव	कौरव	हस्तिनापुर

(क) धृतराष्ट्र के पुत्र ...... कहलाते थे।

(ख) सीताजी को वन में ...... चुराकर ले गया।

(ग) रामचन्द्रजी की माँ का नाम ...... था।

(घ) कुरु राज्य की राजधानी ...... थी।

(ङ) महाभारत का युद्ध ...... के मैदान में हुआ था।

(च) महाराज पाण्डु के लड़के ...... कहलाते थे।

३—इनमें कौनसी बातें ठीक हैं और कौन सी गलत?

(क) सुग्रीव रामचन्द्रजी का बैरी था।

(ख) महाराज दशरथ रामचन्द्रजी को बहुत प्यार करते थे।

(ग) भरतजी १४ वर्ष तक रामचन्द्रजी के साथ वन में रहे।

(घ) रामायण और महाभारत के काल में जातियों की उत्पत्ति हो चुकी थी।

(ङ) रामचन्द्रजी के लौट आने पर भरतजी ने उन्हें राजगद्दी दे दी।

(च) रामायण और महाभारत के समय में ब्राह्मणों का बहुत आदर था।

(छ) श्रीकृष्ण ने महाभारत के युद्ध में कौरवों की सहायता दी।

(ज) महाभारत के युद्ध में कौरवों की जीत हुई।

४—स्वयंवर किसे कहते हैं? क्या आधुनिक काल में भी स्वयंवर की प्रथा प्रचलित है? इस प्रथा को तुम कैसा समझते हो?

५—प्राचीन काल में युद्ध करने का क्या तरीका था? आजकल क्या है?

निम्नलिखित बातें याद करो—

रामायण—यह हिन्दुओं का प्राचीन पद्य में लिखा हुआ एक ग्रंथ है। इसमें रामचन्द्रजी की कथा लिखी है। इसे वाल्मीकि ऋषि ने

संस्कृत भाषा में लिखा था। गोस्वामी तुलसीदास ने बहुत सुन्दर भाषा में इसी को हिन्दी में लिखा है। हिन्दू लोग इसे अपना पवित्र ग्रंथ समझते हैं और बहुत श्रद्धा तथा भक्ति के साथ इसे पढ़ते हैं।

अपने स्कूल के पुस्तकालय से रामायण लेकर घर पर पढ़ो।

महाभारत—रामायण की तरह यह भी हिन्दुओं का पवित्र और प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें कौरवों और पाण्डवों की कथा विस्तारपूर्वक लिखी है। सबसे पहले वेदव्यास ऋषि ने इसे संस्कृत में लिखा था। इसके पढ़ने से हिन्दुओं के उस समय के बहुत से रीति-रिवाजों का पता चलता है।

यदि तुम्हारे स्कूल के पुस्तकालय में यह किताब हो तो उसे घर पर ले जाकर पढ़ो। हिन्दुओं में आज तक रामायण और महाभारत से सम्बन्ध रखनेवाले भजन और गीत आदि गाये जाते हैं। अगर तुम्हें कोई ऐसा भजन या गीत याद हो तो वह अपने मास्टर साहब को सुनाओ।

श्रीकृष्ण—इनका जन्म मथुरा में हुआ था। ये अर्जुन के सखा थे। महाभारत के युद्ध में इन्होंने पाण्डवों की सहायता की थी और अर्जुन के सारथी थे। कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को गीता का उपदेश इन्हीं ने दिया था। आजकल भी उनकी याद में हिन्दुओं में प्रतिवर्ष जन्माष्टमी का त्योहार मनाया जाता है।

स्वयंवर—प्राचीन काल मे आजकल की तरह विवाह नहीं होते थे। कन्या के विवाह के अवसर पर दूर-दूर तक खबर भेज दी जाती थी और उस कन्या से विवाह करने की इच्छा रखनेवाले अनेक पुरुष कन्या के पिता के घर इकट्ठे हो जाया करते थे। उन्हीं में से कन्या जिसको अपना वर चुनती थी, उसी के गले में जयमाला डाल देती थी।

ड्रामा

वीर अभिमन्यु (अर्जुन का पुत्र) का नाटक आजकल प्रायः खेला जाता है। तुम भी अपने मास्टर साहब की सहायता से इतिहास की कक्षा में इसे खेलो।

अध्याय ५

जैन धर्म और बौद्ध धर्म

ब्राह्मण धर्म का विरोध—पिछले अध्याय में यह बतलाया जा चुका है कि रामायण और महाभारत के समय मे ब्राह्मणो की बहुत प्रतिष्ठा होती थी। धार्मिक विषयो में वे अपने आपको सर्वोपरि समझते थे। उस समय लोगों में जात-पाँत का भेद-भाव भी अधिक बढ़ चला था। ब्राह्मणों की तूती बोल रही थी और अन्य वर्णों की अपेक्षा वे अपने वर्ण को कही उच्च समझते थे। सारी धार्मिक क्रियाएँ करने का अधिकार उन्होंने ले रखा था। उन्होंने धार्मिक नियमो को इतना कठोर बना दिया था कि वहाँ तक सर्वसाधारण की पहुँच नही हो सकती थी। नीच जातियों के लिये तो धार्मिक कर्मों का करना एक प्रकार से असम्भव ही हो गया था। उन्हे यज्ञ आदि कर्म करने का अधिकार ही न रह गया था। अतः साधारण जनता, विशेषतः क्षत्रिय राजकुमार, ब्राह्मणों से निराश होकर तंग आ गये थे और लोग सुधार की आवश्यकता का अनुभव करने लगे थे। इसका फल यह हुआ कि कई सुधारकों ने अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार सुधार करना आरम्भ किया। लोगों में धार्मिक विषयों में मतभेद बढ़ा और जनता मे अनेक प्रकार के धार्मिक विश्वासो का जन्म हुआ।

महावीर—यों तो अनेक क्षत्रिय राजकुमारों ने सुधार का

बीड़ा उठाया लेकिन उनमें गौतम बुद्ध और महावीर सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। वर्तमान काल में जिस भाग में विहार का सूबा स्थित है, वहाँ प्राचीन काल में **मगध** नामक एक बहुत प्रसिद्ध राज्य था। इसी के समीप **विदेह** राज्य था। लगभग २५०० वर्ष पूर्व इसी की राजधानी **वैशाली** में बसे हुए एक प्रतिष्ठित क्षत्रिय घराने में महावीर का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था और माता का त्रिशला। महावीर का पहला नाम वर्द्धमान था। माता-पिता का देहान्त हो जाने के उपरान्त जब वर्द्धमान की अवस्था तीस वर्ष की हुई, तब उन्होंने घर-बार छोड़ कर संन्यास धारण कर लिया। १२ वर्ष तक उन्होंने देश के भिन्न-भिन्न भागों में चक्कर लगाया। कुछ दिनों तक वे पार्श्वनाथ के चेले भी रहे। जब उन्हें पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई तब उन्होंने घूम-घूम कर लोगों को उपदेश दिया और अपना नाम महावीर रख लिया। इतिहास में वे इसी नाम से प्रसिद्ध हैं।

जैन धर्म की शिक्षाएँ—महावीर ने जिस धर्म की स्थापना की, वह जैन धर्म कहलाता है और उसके अनुयायी जैनी कहलाते हैं। उनकी मुख्य शिक्षाएँ ये थीं—

(१) अच्छे काम करो; सदा सत्य बोलो और सच्चा ज्ञान प्राप्त करो।

(२) किसी जीव को न सताओ; अहिंसा परम धर्म है।

(३) मनुष्य के जीवन का अन्तिम ध्येय जन्म-मरण के बन्धनों से छुटकारा अर्थात् मोक्ष पाना है जो ब्राह्मण, शूद्र, सभी को, सत्कर्म करने से समान रूप से प्राप्त हो सकता है।

(४) केवल यज्ञ आदि करने से मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती। ये सब कृत्य व्यर्थ हैं। मुक्ति सत्कर्मों द्वारा ही मिल सकती है।

जैन धर्म का प्रचार—जैन धर्म की अधिक उन्नति नहीं हुई। भारतवर्ष के बाहर तो यह गया ही नहीं। यहाँ भी देश के थोड़े से भाग में ही यह फैल सका, क्योंकि जैनियों ने लोगों को अपने मत में लाने के लिये कभी कोई विशेष चेष्टा नहीं की थी। इस सम्बन्ध में उन्होंने शान्ति की नीति बरती। आजकल भी देश के भिन्न-भिन्न भागों में इस धर्म के अनुयायी पाये जाते है। गुजरात में इनकी संख्या अधिक है। अनेक स्थानों में जैनियो के बड़े सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं। जैनी अहिंसा के सिद्धान्त के इतने पक्के माननेवाले हैं कि वे प्राय: नंगे पैर रहते हैं, पानी छानकर पीते हैं, मुँह और नाक में कपड़ा बाँधे रहते हैं और सायकाल के पश्चात् भोजन नहीं करते। जैनियों के दो सम्प्रदाय हैं—दिगम्बर और श्वेताम्बर। दिगम्बर सम्प्रदाय के जैनी वस्त्र धारण नहीं करते, पर श्वेताम्बर सम्प्रदायवाले कपड़े पहनते हैं।

गौतम बुद्ध—इसी काल के दूसरे प्रसिद्ध सुधारक बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया। बुद्ध का पहला नाम सिद्धार्थ था। ये कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे। कपिलवस्तु नैपाल की तराई में एक प्रसिद्ध नगर था। राजा शुद्धोदन चाहते थे कि राजकुमार सिद्धार्थ बड़ा प्रतापी राजा बने; पर सिद्धार्थ के विचार कुछ और ही थे। वे कुछ और ही सोचा करते थे। जनता की उस समय की दशा देखकर उन्हें बहुत दुःख पहुँचता था और वे इसी विचार में रहते थे कि किन उपायों से सांसारिक मनुष्यों का दुःख से छुटकारा हो सकता और उन्हें सुख मिल सकता है।

सिद्धार्थ की ये बातें उनके पिता को अच्छी न लगीं। उन्होंने राजकुमार का मन इधर से हटाने के अनेक प्रयत्न किये। महल में आमोद-प्रमोद की सामग्री एकत्र की गई। यशोधरा नामक एक सुन्दर राजकुमारी से उनका विवाह भी कर दिया गया, परन्तु राजकुमार सिद्धार्थ अपने विचारों से एक पग भी न हटे। सच है—'मेरे मन कछु और है, कर्त्ता के मन और।' उन्हें तो जीवन में राजा से कहीं अधिक ऊँचा पद मिलना था। उनका यश भारत में ही नहीं, भारत से बाहर भी समस्त संसार में फैलना था। एक साधारण राजा को यह कब नसीब हो सकता था।

बुद्ध-वैराग्य

होते-होते सिद्धार्थ ने घर छोड़ने को सोची। एक दिन रात्रि के समय, जब सब लोग सो रहे थे, वे अपना घर-बार और

स्त्री-पुत्र आदि सबको छोड़कर निकल गये। उन्होंने अनेक स्थानों में भ्रमण किया। काशी, गया आदि स्थान उन दिनों भी धार्मिक दृष्टि से उच्च समझे जाते थे। वे वहाँ भी गये और वहाँ रहनेवाले साधु-महात्माओं से उन्होंने अपने मन की बात कही, पर उन लोगों की बातों से सिद्धार्थ को सन्तोष न हुआ। अनेक प्रकार के व्रत और तप करने से भी सिद्धार्थ को शान्ति न मिली। व्रत और तप से कुछ परिणाम न निकलता देख सिद्धार्थ अपना सारा समय ध्यान में व्यतीत करने लगे। एक दिन जब वे गया में एक पीपल के पेड़ के नीचे इसी तरह ध्यान में मग्न थे, उनके मस्तिष्क में विचारों की एक झलक चमक उठी। उन्हें निश्चय हो गया कि इन्हीं विचारों के अनुकूल कार्य्य करने से लोग सांसारिक दुःखों से छुटकारा पा सकेंगे। बस, वे वहाँ से चल पड़े और देश के भिन्न-भिन्न स्थानों में जाकर उन्होंने अपने धार्मिक सिद्धान्तों का प्रचार किया। जिस पेड़ के नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान हुआ था, वह 'बोधि वृक्ष' कहलाता है। बौद्ध धर्म के अनेक अनुयायी अब तक इस स्थान के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ज्ञान होने के बाद ही वे 'बुद्ध' के नाम से प्रसिद्ध हुए। बुद्ध का अर्थ है—ज्ञानी।

बौद्ध धर्म—जो धर्म बुद्ध ने चलाया, वह बौद्ध धर्म के नाम से प्रसिद्ध है। बुद्ध ने अपने उपदेश में बताया कि प्रत्येक मनुष्य का धर्म है कि वह जीव मात्र पर दया करे। किसी को सताना या किसी की हत्या करना घोर पाप है। यदि लोग बुरे काम करना—जैसे चोरी करना, झूठ बोलना—छोड़ दें तो वे अवश्य सुखी रह सकते हैं। अच्छे कर्म और सदाचरण से ही मनुष्य को निर्वाण या मोक्ष मिल सकता है। जात-पाँत

मोक्ष प्राप्त करने में कुछ बाधा नहीं डाल सकती, और नीच जाति के लोग भी सत्कर्मों द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। केवल यज्ञ अथवा तपस्या द्वारा मनुष्य आवागमन के चक्कर से छुटकारा नहीं पा सकता। मनुष्य को अपने किये हुए भले या बुरे कामों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। बुद्धजी कहते थे कि जब तक जीव में "वासना" है, तब तक उसे निर्वाण प्राप्त नहीं हो सकता। सत्कर्म करना और वासना का त्यागना ही जीवन का लक्ष्य है।

बुद्ध की शिक्षाओं का प्रभाव—बुद्ध की बातें ऐसी सीधी-सादी और सच्ची थीं कि वे सबको प्रिय लगीं। बुद्ध लोगों की बोल-चाल की भाषा में उपदेश देते थे, जो सुगमता से लोगों की समझ में आ जाते थे। उस समय की बोल-चाल की भाषा 'पाली' थी। बुद्ध ने शूद्रों के लिए भी, जो ब्राह्मणों की नीति से निराश हो गए थे, मोक्ष का मार्ग खोल दिया था। इन सब कारणों से अनेक लोग उनके शिष्य बन गये। बुद्ध के मरने के बाद कुछ लोगों ने अपना सारा जीवन बौद्ध धर्म के प्रचार में लगा दिया। तत्कालीन राजा-महाराजाओं ने इस

भगवान् बुद्ध

धर्म को स्वीकार कर लिया। उनके प्रभाव से उनकी प्रजा में बहुत से लोग बौद्ध हो गये। इस प्रकार बौद्ध धर्म ने बहुत उन्नति की। बुद्ध की मृत्यु के कई सौ वर्ष पीछे तक यह भारतवर्ष का प्रधान धर्म रहा; लेकिन होते-होते भारतवर्ष से यह ऐसा नष्ट हुआ कि आजकल इस देश में कोई विरला ही इस धर्म का अनुयायी मिलेगा। हाँ चीन, जापान और लंका आदि में अब तक इसके अनुयायी बहुत बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। यहाँ तक कि मनुष्य जाति का एक तिहाई भाग आज तक बौद्ध धर्म को माननेवाला समझा जाता है।

अभ्यास

नक्शा

भारतवर्ष के नक्शे में दिखाओ—

वैशाली, कपिलवस्तु, गया, काशी (सारनाथ)।

चित्र-चर्चा

इस अध्याय में 'बुद्ध-वैराग्य' नामक चित्र देखो। बुद्ध खड़े हैं और उनके आगे उनका सारथी बैठा हुआ निराशापूर्ण नेत्रों से उन्हें देख रहा है। बुद्ध ने अपने राजसी वस्त्राभूषण उतार दिये हैं और साधुओं के से वस्त्र धारण कर लिये हैं। उतारी हुई वस्तुएँ सारथी के सामने पड़ी हैं। इनमें ध्यान से देखो—

(१) उनका राजमुकुट।
(२) मोतियों के हार।
(३) कुंडल।
(४) वस्त्र।
(५) तलवार।

बाएँ हाथ से बुद्ध अपने केश सारथी को दे रहे हैं और दाहिने हाथ से आगे जाने का संकेत कर रहे हैं। यह चित्र बुद्ध के गृह-त्याग के समय का है।

दूसरे चित्र में बुद्धजी की मूर्त्ति है। यह उस समय की है जब वे संन्यासी होकर बौद्ध धर्म का उपदेश किया करते थे। बुद्ध ध्यान लगाये बैठे हैं। मूर्त्ति की भुजाएँ टूट गई हैं।

निम्नलिखित को याद करो—

अहिंसा—(किसी को न मारना या न सताना) बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों ही का प्रधान सिद्धान्त है।

भिक्षु—बुद्ध के मरने के बाद उनके अनुयायियों में से बहुतों ने अपना जीवन बौद्ध धर्म के प्रचार में लगाया। ये लोग भिक्षु कहलाते थे। इनका काम जगह-जगह घूमकर बौद्ध धर्म का उपदेश करना होता था। ये लोग विशेष प्रकार के वस्त्र पहनते थे और जीवन भर ब्रह्मचारी रहकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे।

संघ—भिक्षुओं के समूह का नाम 'संघ' था।

प्रश्न

१—महावीर की जीवनी संक्षेप में लिखो। इसमें ये बातें बतलाओ—

(क) जन्म-स्थान, वंश, काल।

(ख) गृह-त्याग।

(ग) शिक्षाएँ।

२—नीचे बुद्ध की जीवनी संक्षेप में लिखी है। इसमें कहीं-कहीं कुछ शब्द छोड़ दिये गये हैं। छूटे हुए स्थानों में अपनी ओर से शब्द लगाकर इन्हें पूरा करो—

बुद्ध.........के राजा.............के पुत्र थे। उनका जन्म अब से लगभग.........वर्ष पूर्व हुआ था। उनका पहला नाम.........था।

बुद्ध के पिता चाहते थे कि मेरा पुत्र बड़ा प्रतापी.........बने। परन्तु बुद्ध सोचा करते थे कि मैं किस प्रकार लोगों के कष्टों को दूर कर सकता हूँ। इनके पिता ने.........नामक राजकुमारी से बुद्ध का विवाह कर दिया। कुछ दिनों बाद बुद्ध अपना ....छोड़कर जंगल को चले गये। इन्होंने .... धर्म का प्रचार किया जो बहुत दिनों तक भारतवर्ष का प्रधान धर्म रहा।

३—बुद्ध की शिक्षाएँ लिखो। बौद्ध धर्म के अनुयायी को इनमें से कौन सी बातें करनी चाहिएँ और कौन सी नहीं—

(क) चिड़ियों का शिकार करना चाहिए।
(ख) चोरी करनी चाहिए।
(ग) सत्य बोलना चाहिए।
(घ) देवताओं के आगे पशुओं की बलि देनी चाहिए।
(ङ) शूद्रों को उच्च कार्य करने से रोकना चाहिए।
(च) रोगियों को औषध देना चाहिए।

४—जैन और बौद्ध धर्मों की वर्तमान दशा—

(क) भारत में।
(ख) विदेशों में.........बताओ।

५—बौद्ध धर्म की उन्नति के क्या कारण थे?

विशेष कार्य (साधारण से अधिक योग्यता रखनेवाले छात्रों के लिये)

१—अपने स्कूल के पुस्तकालय से बुद्ध की जीवनी लेकर पढ़ो।

२—यदि तुम्हारे घर कोई मासिक या साप्ताहिक समाचार पत्र आता हो तो उसमें बुद्ध के सम्बन्ध में कोई चित्र तलाश करो। उसे अपनी कापी में चिपका लो। इस प्रकार के ऐतिहासिक चित्रों के संग्रह के लिये तुम्हें एक कापी अलग बना लेनी चाहिए। प्रत्येक चित्र के सामने संक्षेप में उसका वर्णन भी लिख दो।

छठा अध्याय

सिकन्दर का आक्रमण

सिकन्दर और उसका देश—युरोप मे यूनान एक देश है। वर्तमान काल में उसकी दशा अधिक अच्छी नही है, पर प्राचीन काल मे वह संसार के उन्नतिशील देशो में से था। अब से लगभग २२५० वर्ष पूर्व इस देश पर सिकन्दर नाम का एक बादशाह राज्य करता था। वह बड़ा वीर था। उसने आस-पास के अनेक देशो पर विजय प्राप्त करके उन्हें अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया था। इन देशों पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त उसका ध्यान भारतवर्ष की ओर गया और उसकी इच्छा हुई कि इसे भी जीत कर अपने राज्य में मिला लूँ।

सिकन्दर के आक्रमण के समय भारतवर्ष की दशा—उस समय उत्तरी भारतवर्ष अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था और प्रत्येक पर भिन्न-भिन्न वंशो के राजा राज्य करते थे। पंजाब मे दो प्रसिद्ध राज्य थे। एक सिन्ध और झेलम नदी के बीच स्थित था। उसकी राजधानी तक्षशिला थी। तक्षशिला उस काल मे बड़ी प्रसिद्ध नगरी थी। यहाँ एक बड़ा विश्वविद्यालय था, जिसमें सहस्रों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। झेलम और रावी नदी के बीच दूसरा राज्य राजा पोरस (सं० नाम पुरु) का था। इससे दक्षिण-पूर्व की दिशा मे मगध का प्रसिद्ध राज्य था। यह उन दिनों उन्नति के शिखर पर था।

सिकन्दर का आक्रमण—ईसा के जन्म से ३२६ वर्ष पूर्व मिस्र और फारस आदि देशों को विजय करते हुए, खैबर के मार्ग से सिकन्दर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया। ओहिन्द नामक स्थान पर उसकी सेना ने पुल बाँध कर सिन्ध नदी को पार किया और तक्षशिला के राजा के राज्य में प्रवेश किया।

विजयी सिकन्दर

तक्षशिला के राजा ने सिकन्दर से युद्ध नहीं किया और वह तुरन्त उसका प्रभुत्व स्वीकार करके उसकी शरण में आ गया। उसने सिकन्दर को अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ भेंट कीं और ५०० सैनिक भी उसे अपनी ओर से दिये।

पोरस से युद्ध—तक्षशिला से चलकर सिकन्दर आगे बढ़ा और राजा पोरस (पुरु) के राज्य में आया। राजा पोरस ने तक्षशिला
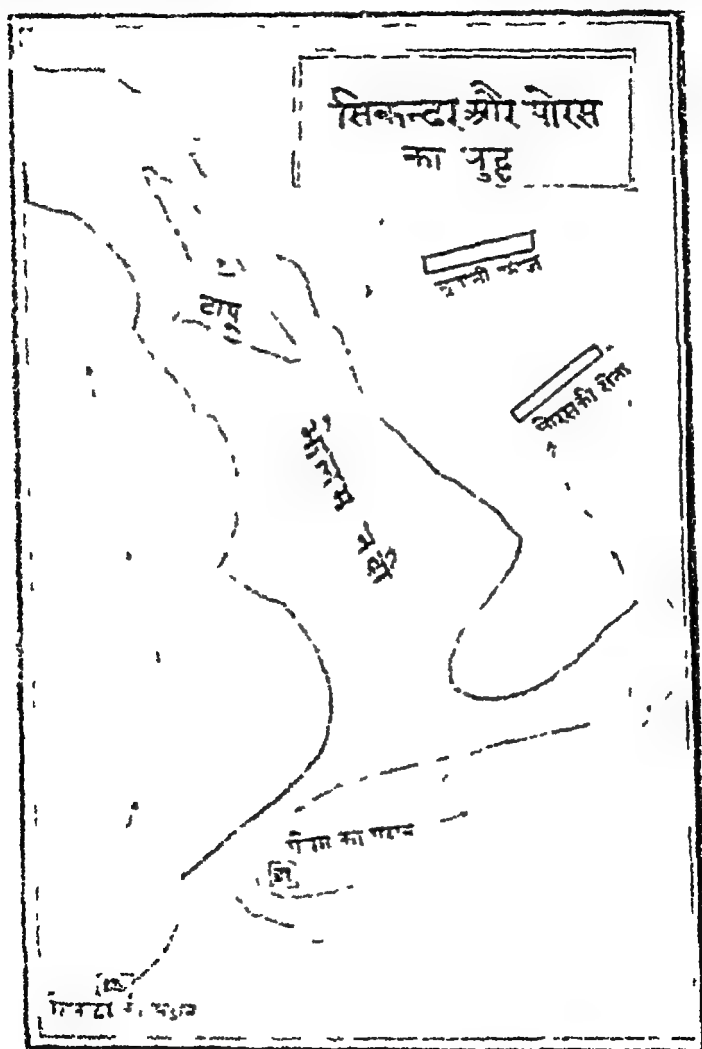
पोरस और सिकन्दर का युद्ध

के राजा की तरह सिकन्दर के आगे आत्म-समर्पण नहीं किया।

सिकन्दर और पोरस

सिकंदर का मार्ग
हिन्दुकुश पर्वत
काबुल
जलालाबाद
ओहिन्द
तक्षशिला
अटक
सिन्धु नदी
चिनाब नदी
समुद्र की ओर

उसने युद्ध करने का निश्चय कर लिया। झेलम के एक ओर सिकन्दर की सेना ने पड़ाव डाला और दूसरी ओर पोरस अपनी सेना सहित पड़ा हुआ था। जूलाई का महीना था और वर्षा के कारण नदी में जल चढ़ आया था। कुछ दिनों तक दोनों सेनाएँ इसी प्रकार डेरा डाले पड़ी रहीं। एक रोज रात के समय सिकन्दर की सेना ने नदी के बहाव की ओर जाकर एक ऐसे स्थान का पता लगाया जहाँ नदी के बीच में एक टापू था जिसके कारण वहाँ गहराई कम थी। अब क्या था! सिकन्दर और उसकी सेना ने सरलता-पूर्वक नदी को पार कर लिया और प्रातःकाल होते ही पोरस की सेना पर आक्रमण कर दिया। दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में पोरस बुरी तरह घायल हुआ और उसकी सेना हार गयी। युद्ध समाप्त होने पर पोरस पकड़ कर सिकन्दर के सामने लाया गया। सिकन्दर ने पूछा—"कहो, तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय? तुमने हमारे साथ युद्ध किया है। अब तुम हमारे बन्दी हो।" यह सुनकर पोरस ने बहुत निडर होकर उत्तर दिया—"मेरे साथ उसी प्रकार का व्यवहार किया जाय जैसा राजा लोग किसी दूसरे राजा के साथ किया करते हैं।" पोरस के इस उत्तर से सिकन्दर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने पोरस को अपना मित्र बना लिया।

सिकन्दर का लौटना—पोरस पर विजय प्राप्त करके सिकन्दर आगे बढ़ा। उसकी इच्छा मगध राज्य को जीतने की थी। वह अपनी सेना सहित व्यास नदी तक ही पहुँचा था कि उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। उसके सैनिकों को अपना घर छोड़े बहुत दिन

हो गये थे और पंजाब की कड़ी गर्मी ने उन्हें व्याकुल कर दिया था। ऐसी अवस्था में सिकन्दर को विवश होकर अपनी सेना का कहना मानना पड़ा और वह वहाँ से वापस चला गया।

चित्र नं० ११
प्राचीन भारतीय हथियार

सिकन्दर के लौटने का मार्ग—सिकन्दर जिस मार्ग से आया था, उससे वापस नहीं गया। वह झेलम और सिन्ध नदी के किनारे होता हुआ स्वयं तो बलोचिस्तान होकर थल के मार्ग से गया और अपनी शेष सेना को समुद्री मार्ग से भेजा। आगे बैबिलोन नगर में पहुँच कर ३१ वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई। अपने जीते हुए प्रान्तों का प्रबन्ध करने के लिये वह अपने कुछ सरदारों को छोड़ गया था। उनमें से एक का नाम सैल्यूकस था।

अभ्यास

नक़्शा
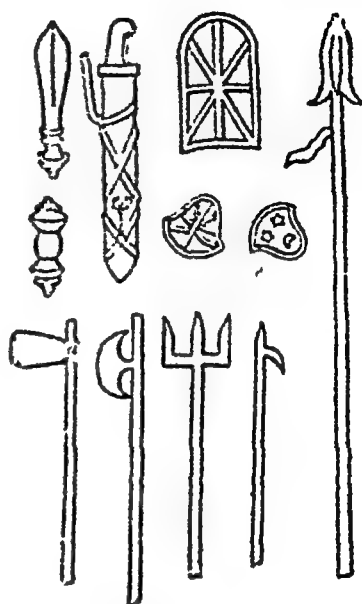
(क) युरोप या संसार के नक़्शे में यूनान देखो। बताओ कि किस प्रकार विजय प्राप्त करता हुआ सिकन्दर भारत में आया था।

(ख) भारतवर्ष के नक़शे में निम्नलिखित दिखाओ—
खैबर का दर्रा, पंजाब की नदियाँ, ओहिन्द, तक्षशिला, पोरस का राज्य, मगध, पाटलिपुत्र, पोरस और सिकन्दर की युद्धभूमि, सिकन्दर का मार्ग।

याद करो—

तिथियाँ—ईसा से ३२६ वर्ष पूर्व सिकन्दर का आक्रमण।

सिकन्दर के आक्रमण का भारत पर प्रभाव—भारतीय सभ्यता पर सिकन्दर के आक्रमण का कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा। इस आक्रमण द्वारा संसार की दो सभ्य और प्राचीन जातियों में मेल-मिलाप बढ़ा, परन्तु भारतीय शीघ्र सिकन्दर को भूल गये।

चित्र-चर्चा

१—इस अध्याय में सिकन्दर की पत्थर की मूर्ति का जो चित्र दिया है, उसे ध्यान से देखो। मूर्ति के चेहरे से वीरता टपकती है।

२—दूसरे चित्र में सिकन्दर के आगे पोरस पकड़ कर लाया गया है। विजयी सिकन्दर पोरस से पूछ रहा है कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय। पोरस वीर योद्धा के समान उसके प्रश्नों का उत्तर दे रहा है। पोरस और सिकन्दर का पहनावा ध्यान से देखो।

३—तीसरे चित्र में युद्ध में काम आनेवाले भारतीय हथियार दिखलाये गये हैं। जिस समय सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया था, उस समय भारतवासी ऐसे ही हथियारों से युद्ध किया करते थे। हथियारों के नाम ये हैं—(१) कटार, (२) कन्धे से लटकनेवाली तलवार, (३) पैदल सेना के सिपाहियों की ढाल, (४) और (५) सवारों की ढाल, (६) भाला, (७) वज्र—यह राजा के हाथ में रहता था, (८) और (९) फरशा और (१०) त्रिशूल।

सोचो—

१—इन नये हथियारों की शकल अपनी कापी में खींचो और हर एक के नीचे उसका नाम भी लिख दो।

२—पुस्तक में पोरस और सिकन्दर के युद्ध का चित्र (Plan) भी दिया हुआ है। इसे समझो और ऐसा ही अपनी कापी में खींचो।

प्रश्न

१—कोष्ठ में दिये हुए शब्दों में से एक शब्द छाँट कर इन कथनों को ठीक करो—

(क) सिकन्दर (यूनान, अरब, फ़ारस) का निवासी था।

(ख) सिकन्दर ने (पेशावर, तक्षशिला, ओहिन्द) के पास सिंध को पार किया।

(ग) सिकन्दर (सिंध, झेलम, व्यास) नदी तक आकर लौट गया।

(घ) सिकन्दर की (काबुल, बेबिलोन, तक्षशिला) में मृत्यु हो गई।

२—कल्पना करो कि तुम सिकन्दर हो। अपने सहपाठियों के आगे भारतवर्ष पर अपने आक्रमण का बयान करो। इसमें निम्नलिखित बातों का वर्णन करो।

(क) तुमने किस प्रकार खैबर के दर्रे को पार करके भारत में प्रवेश किया।

(ख) सिंध नदी को पार करना—ओहिन्द पर पुल।

(ग) तक्षशिला के राजा का शरण में आना।

(घ) पोरस पर चढ़ाई—तुम्हारा पड़ाव।

(ङ) पोरस की हार—उससे तुम्हारा वार्तालाप—उसका वीरतापूर्ण उत्तर—उसके विषय में तुम्हारे विचार।

(च) तुम्हारी मगध जीतने की इच्छा—सेना का इनकार और वापसी।

३—जिस समय सिकन्दर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया, उस समय पंजाब में कौन-से दो प्रसिद्ध राज्य थे ? उनका वर्णन करो।

४—पोरस की हार क्यों हुई ?

५—सिकन्दर का चरित्र संक्षेप में वर्णन करो।

नाटक

सिकन्दर और पोरस के वार्त्तालाप का छोटा-सा ड्रामा नाटक करके खेलो। एक लड़का सिकन्दर का पार्ट करे और कुछ लड़के उसकी सेना के जनरल आदि बन जायँ। पोरस को सिकन्दर के सैनिक पकड़ कर लावें।

नाटक में सम्मिलित होनेवाले छात्रों के वस्त्र उसी प्रकार के हों जैसे उस काल में पहने जाते थे। यूनानी लोगों की पोशाक यूनानियों की सी हो और भारतवासियों की भारतीयों की सी।

पार्ट करनेवालों के अतिरिक्त जो लड़के शेष रहें, वे वस्त्र और जरूरी सामान इकट्ठा करने में अपने साथियों की सहायता करें। तुम्हारे इतिहास पढ़ानेवाले अध्यापक इस नाटक की तैयारी में तुम्हारी सहायता करेंगे।

अध्याय ७

तिथियाँ

इतिहास पढ़ते समय केवल इतना जान लेने ही से काम नहीं चल सकता कि अमुक घटना हुई। हमें यह भी जानना आवश्यक होता है कि वह घटना कब हुई। पिछले पाठों में घटनाओं का समय बतलाते हुए हमने लिखा है कि अमुक घटना अब से इतने वर्ष पूर्व हुई। आर्यों का आना, वेदों की रचना, बुद्ध का जन्म आदि सबका समय इसी प्रकार बताया गया है।

समय बतलाने की एक दूसरी विधि और भी है। कोई बहुत प्रसिद्ध घटना चुन ली जाती है और उससे पहले होनेवाली घटनाओं को कहते हैं कि वे इससे इतने वर्ष पूर्व हुई; और जो घटनाएँ उसके बाद होती हैं, उन्हे उसके बाद में होनेवाली घटनाएँ कहते हैं। प्रायः गाँव के लोगों को तुमने यह कहते सुना होगा कि अमुक घटना सन् ५७ * के गदर के इतने दिन पहले या पीछे हुई थी अथवा अमुक घटना छपनियाँ अकाल † से इतने समय पूर्व या बाद में हुई थी। इसी प्रकार कहीं-कहीं लोग किसी ताऊन से समय का हिसाब लगाते हैं। उनके लिए गदर, अकाल या ताऊन ही प्रसिद्ध घटनाएँ हैं।

ईसवी सन्—ये बातें गाँववालों की या उन लोगो की हैं जो पढ़े-लिखे नहीं हैं। हम-तुम लोग प्रतिदिन तारीख लिखते समय सन् 'ईसवी' लिखा करते हैं। क्या तुम जानते हो कि

---

* सन् १८५७ ई० का गदर। इसका वर्णन तुम अगली कक्षा में पढ़ोगे।

† एक बड़ा अकाल जो संवत् १९५६ में पड़ा था।

'ईसवी' शब्द का क्या तात्पर्य है ? ईसवी सन् महात्मा ईसा के नाम पर चला है। **महात्मा ईसा** संसार के एक महान् व्यक्ति समझे जाते हैं। उनका जन्म जैरूसलम में हुआ था जो सीरिया देश का एक नगर है। उनके जन्म के दिन से ही ईसवी सन् माना जाता है* सन् १९३४ ईसवी लिखने से यही अभिप्राय है कि महात्मा ईसा को जन्म लिये अब १९३३ वर्ष व्यतीत हो चुके। जो घटनाए ईसा के जन्म के बाद हुई हैं, वे सब ईसा के जन्म के बाद होनेवाली कही जाती हैं और व्यतीत हो जाने-वाले वर्षों की संख्या के आगे ईसवी (A. D.) शब्द लिख दिया जाता है। जो घटनाएँ ईसा के जन्म लेने से पहले ही हो चुकीं, वे **'ईसा के जन्म से पूर्व'** होनेवाली घटनाएँ कही जाती हैं। ऐसी घटनाओं के वर्षों की संख्या के साथ ई० पू० (B. C.) लिख देते हैं, जिसका अर्थ है 'ईसा से पूर्व।' यहाँ तुम्हारे मन में यह प्रश्न उठता होगा कि हम हिन्दुस्तानियों का महात्मा ईसा से क्या सम्बन्ध है जो हम उनके जन्म से अपना समय मानते हैं ? ऐसा करने का कारण यह है कि हमारी सरकार महात्मा ईसा द्वारा चलाए हुए ईसाई धर्म की अनुयायी है।

अब तुम्हें यह बताया जाता है कि समय का हिसाब कैसे लगाया जाता है। यदि कोई घटना ई० पू० हुई हो और हम यह मालूम करना चाहें कि उसे हुए अब कितने वर्ष व्यतीत हो चुके, तो उन वर्षों को वर्तमान सन् ईसवी में जोड़ देना चाहिए। एक उदाहरण से यह बात भली भाँति तुम्हारी समझ में आ

---

* इस स्थान पर अध्यापक को चाहिए कि जो वर्ष चल रहा हो, उसी के अनुसार परिवर्त्तन करा दे।

जायगी। बुद्धजी का जन्म ५६७ ई० पू० हुआ था*। उनके जन्म को अब ५६७ + १९३३ = २५०० वर्ष व्यतीत हो चुके।

यदि कोई घटना सन् ईसवी में हुई हो तो यह जानने के लिये कि उसे अब कितने वर्ष व्यतीत हो चुके, उन वर्षों को वर्तमान ईसवी सन् में से घटा देना चाहिए। उदाहरण के लिये मान लो कि अकबर बादशाह की मृत्यु सन् १६०५ ईसवी में हुई। अब अकबर को मरे १९३३—१६०५ = ३२८ वर्ष हो गये।

ई०पू० ६००–
५००–
४००–
३००
२००–
१००–
ईसा से पूर्व (B.C.)

–ईसा का जन्म

ईसवी १००–
२००–
३००–
४००–
५००–
६००–
७००–
८००–
९००–
१०००–
११००–
१२००–
१३००–
१४००–
१५००–
१६००–
१७००–
१८००–
१९००–
२०००–
ईसा के जन्म के बाद (A.D.)

अभ्यास

समय की लाइन—

अपनी कापी पर ७ या ८ इंच लंबी एक लाइन खींचो और उसके बराबर बराबर २६ भाग कर लो। प्रत्येक भाग को १०० वर्ष के बराबर मान लो। इस प्रकार यह लाइन ईसा के जन्म के ६०० वर्ष पूर्व से लेकर उसके जन्म के २००० वर्ष तक के लिये हो जायगी। इसमें 'ईसा का जन्म' दिखाओ। नमूने के लिये अपनी किताब की लाइन देखो।

---

* बुद्ध जी की जन्म तिथि के विषय में मतभेद है।

प्रश्न

अपनी समय की लाइन की सहायता से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताओ—

१—किसी मनुष्य ने ३५० ई० पू० जन्म लिया। बताओ कि उसे जन्म लिये अब कितने वर्ष व्यतीत हो चुके।

२—मान लो कि आर्यों का पहला समूह ३००० ई० पू० भारत में आया। बताओ सन् १००० ईसवी में उसे आये कितने वर्ष हो चुके।

३—सन् १२५६ ईसवी में इस देश में एक बड़ा भारी भूकंप आया था। बताओ कि उसे आये कितने वर्ष व्यतीत हो चुके।

४—सन् ७४० ईसवी में गंगा नदी में एक बड़ी भारी बाढ़ आई थी। बताओ कि उसे सन् १५८० ईसवी में कितने वर्ष हो चुके थे।

५—राम का जन्म १०० ई० पू० पूर्व हुआ और मोहन का जन्म सन् ५८० ईसवी में। बताओ कि दोनों के जन्मों के बीच में कितने वर्ष व्यतीत हुए।

अध्याय ८

मगध और मौर्य्य-वंश

चन्द्रगुप्त—*सिकन्दर के आक्रमण के समय पाटलिपुत्र पर नन्द वंश का राज्य था। महापद्मनंद बड़ा शक्तिशाली नन्द-वंशीय सम्राट् था। उसके साम्राज्य की झलक यूनानी लेखकों की पुस्तकों में मिलती है। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि महापद्मनन्द की बढ़ती हुई शक्ति का अनुभव करके ही सिकन्दर के सिपाहियों की हिम्मत न हुई कि वे आगे बढ़ें। चाहे जो हो, यह तो निस्सन्देह है कि महापद्मनंद एक अत्यन्त प्रभावशाली सम्राट् था, परन्तु वह उतना ही अप्रिय भी था। उसकी प्रजा उससे तंग आ गई थी। इधर पिप्पलीवन के मौर्य्य-वंशीय राजकुमार चन्द्रगुप्त ने देखा कि एक साम्राज्य अप्रिय सम्राट् के हाथ नीचे पिसा जा रहा है। झट चाणक्य जैसे राजनीतिक गुरु की सहायता से उसने एक दल तैयार किया और सारे राज्य को उभाड़ कर क्रान्ति द्वारा महापद्मनन्द के वंश का नाश कर डाला और वह स्वयं पाटलिपुत्र की राजगद्दी पर आ विराजा।

सैल्यूकस और चन्द्रगुप्त—सिकन्दर की मृत्यु हो जाने पर उसके सेनापति सैल्यूकस ने उसके विजय किये हुए प्रदेशों पर अपना अधिकार जमा लिया। ३०५ ई० में उसने भारतवर्ष को जीत कर अपने राज्य में मिला लेने की चेष्टा की; परन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य्य ने उसे युद्ध में हरा दिया और दोनों में परस्पर

---

* सम्राट् चन्द्रगुप्त के विषय में यह किंवदंती है कि वह मुरा नाइन का पुत्र था किन्तु ऐतिहासिक अनुसंधान से यह गलत सिद्ध हुआ है। अपितु चंद्रगुप्त एक क्षत्रिय सम्राट् था।

सन्धि हो गई। सैल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को काबुल, कंधार, हिरात और बलोचिस्तान के प्रान्त दे दिये और अपनी पुत्री का ब्याह भी चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया। मेगस्थनीज नामक एक यूनानी राजदूत भी उसने चन्द्रगुप्त के दरबार में रहने को पाटलिपुत्र भेज दिया। मेगस्थनीज ने उस काल के भारत का वर्णन लिखा है। सैल्यूकस को चन्द्रगुप्त से ५०० हाथी भेंट में मिले।

मेगस्थनीज का वृत्तान्त—मेगस्थनीज कई वर्षों तक चन्द्रगुप्त के दरबार में रहा। उसने यहाँ के विषय में यह वर्णन किया है—

"भारतवर्ष एक धनी और उन्नतिशील देश है। यहाँ के निवासी बहुत सच्चे और विश्वासपात्र हैं। पाटलिपुत्र बहुत सुन्दर और विशाल नगर है। नगर के चारों ओर लकड़ी की एक सुदृढ़ दीवार है। उसमें लगभग ५७० बुर्ज और ६४ दरवाज़े हैं। शहर के चारों ओर गहरे पानी की एक खाई से सुरक्षित है। सम्राट् लकड़ी के सुन्दर भवन में रहता था जो एक मनोहर बाग़ के बीच स्थित था। महल की दीवारों पर बहुत सुन्दर सुनहला काम हो रहा था और उसकी शोभा अद्वितीय थी।" अभी थोड़े दिन हुए, यह लकड़ी का महल खोद कर निकाला गया है। इसकी दीवारें अब भी टूटी-फूटी अवस्था में खड़ी हैं।

नगर का प्रबन्ध—मेगस्थनीज ने लिखा है कि पाटलिपुत्र का प्रबन्ध करने के लिये नागरिकों की एक सभा थी जिसे आजकल 'म्युनिसिपल बोर्ड' कह सकते हैं। इस बोर्ड की छः कमेटियाँ थीं। प्रत्येक कमेटी का काम अलग-अलग बँटा हुआ था। जैसा प्रबन्ध पाटलिपुत्र का था, वैसा ही अन्य प्रसिद्ध नगरों

अध्याय ८

मगध और मौर्य्य-वंश

चन्द्रगुप्त—*सिकन्दर के आक्रमण के समय पाटलिपुत्र पर नन्द वंश का राज्य था। महापद्मनंद बड़ा शक्तिशाली नन्द-वंशीय सम्राट् था। उसके साम्राज्य की झलक यूनानी लेखकों की पुस्तकों में मिलती है। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि महापद्मनन्द की बढ़ती हुई शक्ति का अनुभव करके ही सिकन्दर के सिपाहियों की हिम्मत न हुई कि वे आगे बढ़ें। चाहे जो हो, यह तो निस्सन्देह है कि महापद्मनंद एक अत्यन्त प्रभावशाली सम्राट् था, परन्तु वह उतना ही अप्रिय भी था। उसकी प्रजा उससे तंग आ गई थी। इधर पिप्पलीवन के मौर्य्य-वंशीय राजकुमार चन्द्रगुप्त ने देखा कि एक साम्राज्य अप्रिय सम्राट् के हाथ नीचे पिसा जा रहा है। झट चाणक्य जैसे राजनीतिक गुरु की सहायता से उसने एक दल तैयार किया और सारे राज्य को उभाड़ कर क्रान्ति द्वारा महापद्मनन्द के वंश का नाश कर डाला और वह स्वयं पाटलिपुत्र की राजगद्दी पर आ विराजा।

सैल्यूकस और चन्द्रगुप्त—सिकन्दर की मृत्यु हो जाने पर उसके सेनापति सैल्यूकस ने उसके विजय किये हुए प्रदेशों पर अपना अधिकार जमा लिया। ३०५ ई० में उसने भारत-वर्ष को जीत कर अपने राज्य में मिला लेने की चेष्टा की; परन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य्य ने उसे युद्ध में हरा दिया और दोनों में परस्पर

---

* सम्राट् चन्द्रगुप्त के विषय में यह किंवदंती है कि वह मुरा नाई का पुत्र था किन्तु ऐतिहासिक अनुसंधान से यह गलत सिद्ध हुआ है। अपितु चंद्रगुप्त एक क्षत्रिय सम्राट् था।

सन्धि हो गई। सैल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को काबुल, कंधार, हिरात और बलोचिस्तान के प्रान्त दे दिये और अपनी पुत्री का ब्याह भी चन्द्रगुप्त के साथ कर दिया। मेगस्थनीज नामक एक यूनानी राजदूत भी उसने चन्द्रगुप्त के दरबार में रहने को पाटलिपुत्र भेज दिया। मेगस्थनीज ने उस काल के भारत का वर्णन लिखा है। सैल्यूकस को चन्द्रगुप्त से ५०० हाथी भेंट में मिले।

मेगस्थनीज का वृत्तान्त—मेगस्थनीज कई वर्षों तक चन्द्रगुप्त के दरबार में रहा। उसने यहाँ के विषय में यह वर्णन किया है—

"भारतवर्ष एक धनी और उन्नतिशील देश है। यहाँ के निवासी बहुत सच्चे और विश्वासपात्र हैं। पाटलिपुत्र बहुत सुन्दर और विशाल नगर है। नगर के चारों ओर लकड़ी की एक सुदृढ़ दीवार है। उसमें लगभग ५७० बुर्ज और ६४ दरवाज़े हैं। शहर के चारों ओर गहरे पानी की एक खाई से सुरक्षित है। सम्राट् लकड़ी के सुन्दर भवन में रहता था जो एक मनोहर बाग़ के बीच स्थित था। महल की दीवारों पर बहुत सुन्दर सुनहला काम हो रहा था और उसकी शोभा अद्वितीय थी।" अभी थोड़े दिन हुए, यह लकड़ी का महल खोद कर निकाला गया है। इसकी दीवारें अब भी टूटी-फूटी अवस्था में खड़ी हैं।

नगर का प्रबन्ध—मेगस्थनीज ने लिखा है कि पाटलिपुत्र का प्रबन्ध करने के लिये नागरिकों की एक सभा थी जिसे आजकल 'म्युनिसिपल बोर्ड' कह सकते हैं। इस बोर्ड की छः कमेटियाँ थीं। प्रत्येक कमेटी का काम अलग-अलग बँटा हुआ था। जैसा प्रबन्ध पाटलिपुत्र का था, वैसा ही अन्य प्रसिद्ध नगरों

का भी रहा होगा। तक्षशिला, उज्जैन आदि नगरों में भी सम्भवतः इसी प्रकार के म्युनिसिपल बोर्ड थे।

देश का शासन—चन्द्रगुप्त का शासन-प्रबन्ध जैसा संघटित था, उसे देख कर उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा सकता। सारा साम्राज्य चार भागों में विभक्त था। उनके नाम ये थे—(१) **उत्तरापथ**, (२) **उज्जैन**, (३) **प्राच्य** और (४) **दक्षिणापथ**। कुछ लोगो का मत है कि दक्षिण को चन्द्रगुप्त ने जीता था और कुछ कहते है कि उसको जीतनेवाला उसका पुत्र बिन्दुसार था। किन्तु मैसूर राज्य मे, कुछ दिन हुए, ऐसे ताम्रपत्र और शिला-लेख मिले हैं। जिनसे सिद्ध होता है कि दक्षिण को भी चन्द्रगुप्त ने जीता था। दूर-दूर के प्रान्तों पर शासन करने के लिये राजकुमार या राजा के अन्य सम्बन्धी शासक नियुक्त होते थे। सम्राट् प्रत्येक विभाग का उच्चतम अधिकारी था। उसे सलाह देने के लिये मन्त्रियों और सम्मति-दाताओं की दो सभाएँ हुआ करती थीं। नगरो का प्रबन्ध करने के लिये, जैसा पहले लिख चुके है, म्यूनिसिपैलिटियाँ थीं।

साम्राज्य की रक्षा के लिये सम्राट् एक विशाल सेना रखता था, जिसमें ६ लाख पैदल, ३० हजार सवार, ९ हज़ार हाथी तथा ८ हज़ार रथ थे। इसके अतिरिक्त जल-सेना भी थी। सेना का प्रबन्ध करने के लिये भी नगरों की भाँति पाँच-पाँच सदस्यों की छः कमेटियाँ थीं।

देश के भिन्न-भिन्न भागों के समाचारों से सम्राट् को परिचित कराने के लिये गुप्तचर (खुफिया पुलिस) नियुक्त थे। ये लोग गुप्त भाषा में समाचार लिखकर एक स्थान से दूसरे स्थान को,

कबूतरों द्वारा भेजते थे। गाँवों का प्रबन्ध करने के लिये प्रत्येक गाँव में पञ्चायत होती थी, जिसका एक मुखिया होता था। दण्ड कठोर दिया जाता था। साधारण अपराधियों के हाथ-पैर काट डाले जाते थे। सिंचाई का प्रबन्ध अच्छा था। किसानों से उपज का $\frac{१}{४}$ भाग कर-स्वरूप लिया जाता था। यात्रियों के आराम के लिये देश में सड़कें बनी हुई थीं। ऐसे उत्तम शासन-प्रबन्ध में प्रजा सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करती थी।

बिन्दुसार—२९९ ई० पू० में चन्द्रगुप्त के बाद उसका पुत्र **बिन्दुसार** मगध का स्वामी हुआ और वह २७२ ई० पू० तक रहा। वह बड़ा वीर और विजयी था। इसी कारण उसे '**अमित्रघात**' (शत्रुओं को मारनेवाला) भी कहते हैं। अपने पिता के समान उसने भी मौर्य्य साम्राज्य को सुदृढ़ बना रक्खा। उसके विषय में इतिहास में अधिक सामग्री नहीं मिलती।

अशोक—बिन्दुसार की मृत्यु हो जाने पर उसका पुत्र सुप्रसिद्ध सम्राट् **अशोक** राजसिंहासन पर बैठा। वह बहुत यशस्वी और धर्मात्मा राजा था। उसके प्रताप से मौर्य्य-वंश का नाम समस्त भूमण्डल में प्रसिद्ध हो गया है। इसलिये कुछ विद्वान उसे '**अशोक महान्**' कहते हैं।

कलिङ्ग युद्ध—उन दिनों **कलिङ्ग** नामक एक प्रसिद्ध राज्य था। यह राज्य आजकल के मद्रास के इलाके के उत्तरी भाग में स्थित था। २६१ ई० पू० में अशोक ने इस देश पर आक्रमण किया। बड़ी घमासान लड़ाई के बाद उसकी जीत हुई और वह राज्य मौर्य्य-साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। इस युद्ध में लगभग एक लाख मनुष्य मारे गये। इतने मनुष्यों

की मृत्यु देखकर अशोक को अपार दुःख हुआ। इस भयानक हत्याकाण्ड का उसपर गहरा प्रभाव पड़ा। उसने प्रण कर लिया कि अब भविष्य मे राज्य जीतने की इच्छा से मैं कभी युद्ध न करूँगा। उस काल में जैन और बौद्ध धर्मों के विचारों का अधिक प्रचार था। इसी लिये अशोक का भी बौद्ध धर्म की ओर झुकाव हो गया। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब अपने जीवन का शेष भाग बौद्ध धर्म के प्रचार में ही व्यतीत करूँगा; और लोगो के हृदय पर तलवार के बल से नहीं वरन् अपने उच्च धार्मिक भावों के बल से, अधिकार जमाऊँगा।

बौद्ध धर्म के प्रचार में सहायता—अशोक ने देश-देशान्तरों में बौद्ध धर्म के प्रचार का बड़ा उद्योग किया। उसकी प्रजा के अधिकांश लोगों ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। कहा जाता है कि २४२ ई० पू० मे उसने पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्म की एक बड़ी भारी सभा की, जिसमें लगभग १००० विद्वान् और बौद्ध महात्मा उपस्थित थे। वह सभा नौ महीने तक होती रही और उसमे बौद्ध धर्म के अनेक सिद्धान्तो का निर्णय किया गया। **लंका, मिस्र, यूनान** आदि देशों में राज्य की ओर से अनेक भिक्षु भेजे गये जिन्होंने वहाँ जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया। उसकी आज्ञा थी कि किसी जीव की हत्या न की जाय। उसने स्वयं भी शिकार खेलना और बहुत अंशों तक मांस खाना भी बन्द कर दिया। पशु-वध या मांस-भक्षण के अपराध में कठिन दण्ड दिया जाता था। इन सारी बातों से उसके शासन-काल में बौद्ध धर्म की बड़ी उन्नति हुई।

प्रजा के साथ व्यवहार—अशोक अपनी प्रजा को अपनी

सन्तान के समान प्यार करता था। वह उसके दुःख-सुख की सदैव चिन्ता रखता था। उसका कहना था कि जिस किसी को कुछ कहना हो, वह मुझसे हर समय आकर कह सकता है। अशोक भोजन के समय भी प्रजा की शिकायतें सुनने के लिये तैयार रहता था। उसने प्रजा के आराम के लिये सड़कें बनवाईं और उनके किनारे छायादार वृक्ष लगवा दिये। स्थान-स्थान पर प्याऊ, सराएँ और धर्मशालाएँ आदि बनवा दीं। राज्य की ओर से औषधालय खुलवाये गये, जहाँ रोगियों की चिकित्सा मुफ्त होती थी। पशुओं की चिकित्सा का भी सुप्रबन्ध था। नहरों द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध था। राज्य के अफ़सरों को आज्ञा थी कि वे प्रजा के लोगों को न सतावें। अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जाता था। जिन अपराधियों को फाँसी दी जाती थी, उन्हें फाँसी से पहले तीन दिन की मुहलत मिलती थी।

अशोक की शिक्षाएँ—यों तो संसार में एक से एक बढ़ कर राजा और बादशाह हुए हैं, परन्तु अशोक अपने ढंग का अद्वितीय सम्राट् था। उसने अपनी प्रजा के चरित्र की ओर विशेष ध्यान दिया। उसकी इच्छा थी कि लोगों का आचरण धार्मिक सिद्धान्तों के अनुकूल हो। वह स्वयं भी इसी प्रकार से रहता था, क्योंकि वह जानता था कि मेरी प्रजा पर मेरे व्यक्तिगत जीवन का बहुत कुछ प्रभाव पड़ेगा। कोई मनुष्य तब तक दूसरों को नहीं सुधार सकता जब तक वह स्वयं अपना आचरण शुद्ध न कर ले। अनेक स्थानों पर उसने शिला-लेख और स्तम्भ आदि लगवा दिये और प्रजा के लिए उनपर शिक्षाएँ खुदवा दीं। उसकी मुख्य शिक्षाएँ ये थीं—

१—माता-पिता की आज्ञा मानो।

२—प्राणि-मात्र की रक्षा करो।
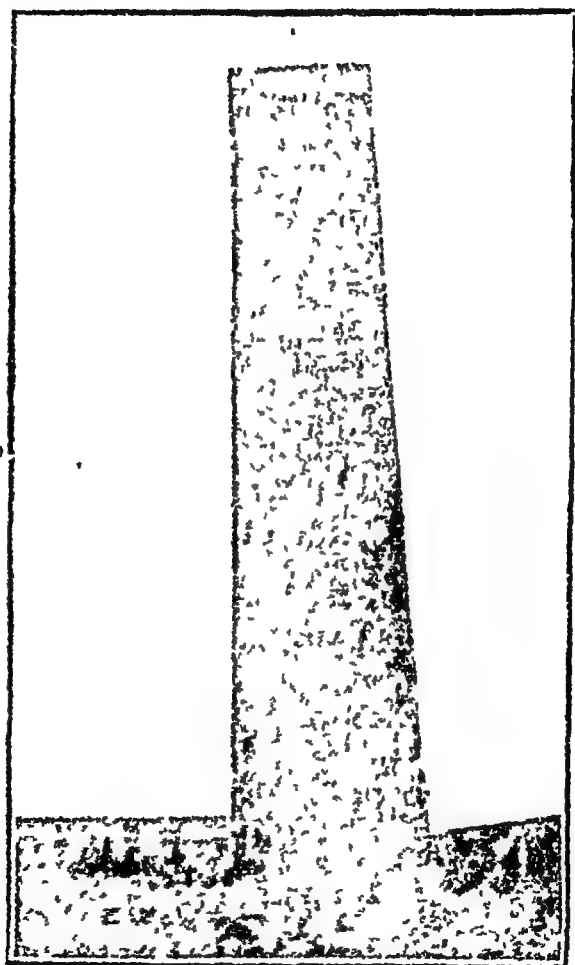
दिल्ली में अशोक की लाट

३—सदा सत्य बोलो।

४—अपने गुरु का आदर करो।

५—अपने सेवकों से प्रेमपूर्ण व्यवहार करो।

६—अपने सम्बन्धियों के साथ सद्व्यवहार करो।

अशोक ने ऐसे कर्मचारी नियुक्त कर दिये जिनका कर्त्तव्य था कि वे लोगों से इन शिक्षाओं का पालन करावें।

तत्कालीन विशेष बातें—ऊपर के वृत्तान्त से विदित हो गया होगा कि मौर्य्य काल में देश सब प्रकार से सुखी था। लोगों का जीवन पवित्र था और धार्मिक विद्या की उन्नति थी। जगह-जगह पर विहार बने हुए थे जिनमें भिक्षु लोग निवास करते थे। इन्हीं विहारों में शिक्षा का भी प्रबन्ध था। कला-कौशल उन्नत अवस्था में था। अशोक के समय के बने हुए स्तूप, लाट और शिलालेख इसके प्रमाण हैं। इनमें से अनेक आज तक दिल्ली, इलाहाबाद, साँची और सारनाथ आदि नगरों में खड़े हैं। उनसे उस काल के कला-कौशल की उन्नति देख कर आश्चर्य्य होता है। लोग खेल-तमाशों के भी शौकीन थे। सुन्दर और भड़कीले वस्त्र पहनते थे। दासों की प्रथा प्रचलित थी, पर उनके साथ अच्छा व्यवहार होता था। कुछ विद्वानों की सम्मति में कुलीन परिवारों में पर्दे की प्रथा थी।

अशोक की महत्ता—अशोक की गिनती संसार के महापुरुषों में की जाती है। वह एक बड़े साम्राज्य का स्वामी था। संसार की तत्कालीन सबसे प्रबल सैनिक शक्ति उसके अधीन थी। वह चाहता तो संसार के अनेक देशों को जीतकर उन्हें मौर्य्य-साम्राज्य में मिला लेता; परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। कलिङ्ग-विजय के बाद ही उसने अनुभव किया कि जो विजय शस्त्रों द्वारा प्राप्त की जाती है, वह असली विजय नहीं है। इसी

विचार से उसने जीवन मे और कोई युद्ध नहीं किया; परन्तु उसका यश देश-देशान्तरो में फैल गया। उसका आदर्श कितना ऊँचा था—उसमें कितना त्याग भरा हुआ था! संसार के इतिहास में कोई ऐसा दूसरा सम्राट् नहीं हुआ जिसने इस तरह की सच्ची "धार्म्मिक" विजय प्राप्त की हो। अशोक का सबसे बड़ा
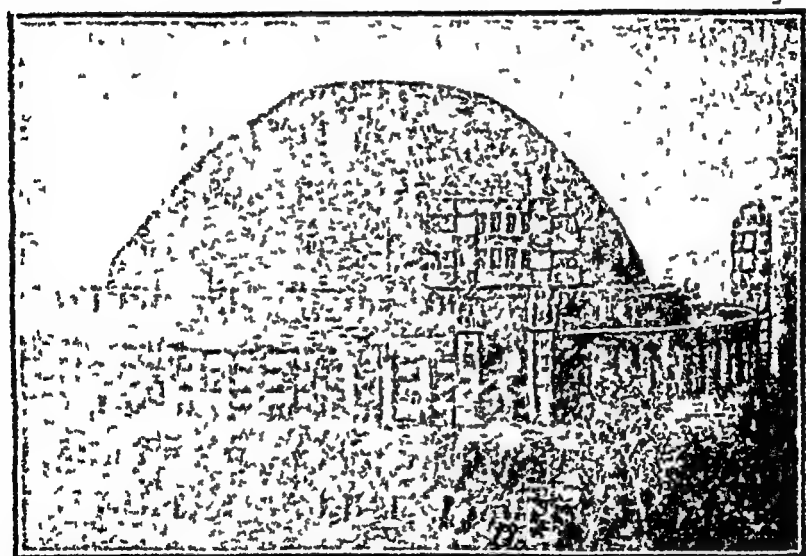
साँची का स्तूप

गुण उसका प्रजा-प्रेम था। वह सम्पूर्ण मनुष्य जाति को अपना पुत्र या भाई समझता था। उसकी प्रजा उससे प्रेम करती थी और उसे 'प्रियदर्शी' के नाम से पुकारती थी। धार्मिक दृष्टि से विचार करने पर उसका महत्त्व और भी ऊँचा दिखाई देता है। वह चाहता तो अन्य धर्मावलम्बियों पर अत्याचार करके बौद्ध

सारनाथ के अशोक-स्तम्भ का ऊपरी भाग

धर्म का प्रचार कर सकता था; पर उसने ऐसा नहीं किया। उसने एक धर्म मानने की राजाज्ञा दी। धार्मिक सहिष्णुता उसका

आदर्श था। उसकी रहन-सहन सादी थी। अन्य सम्राटों की तरह वह अपना जीवन भोग-विलास में व्यतीत न करता था। अपने
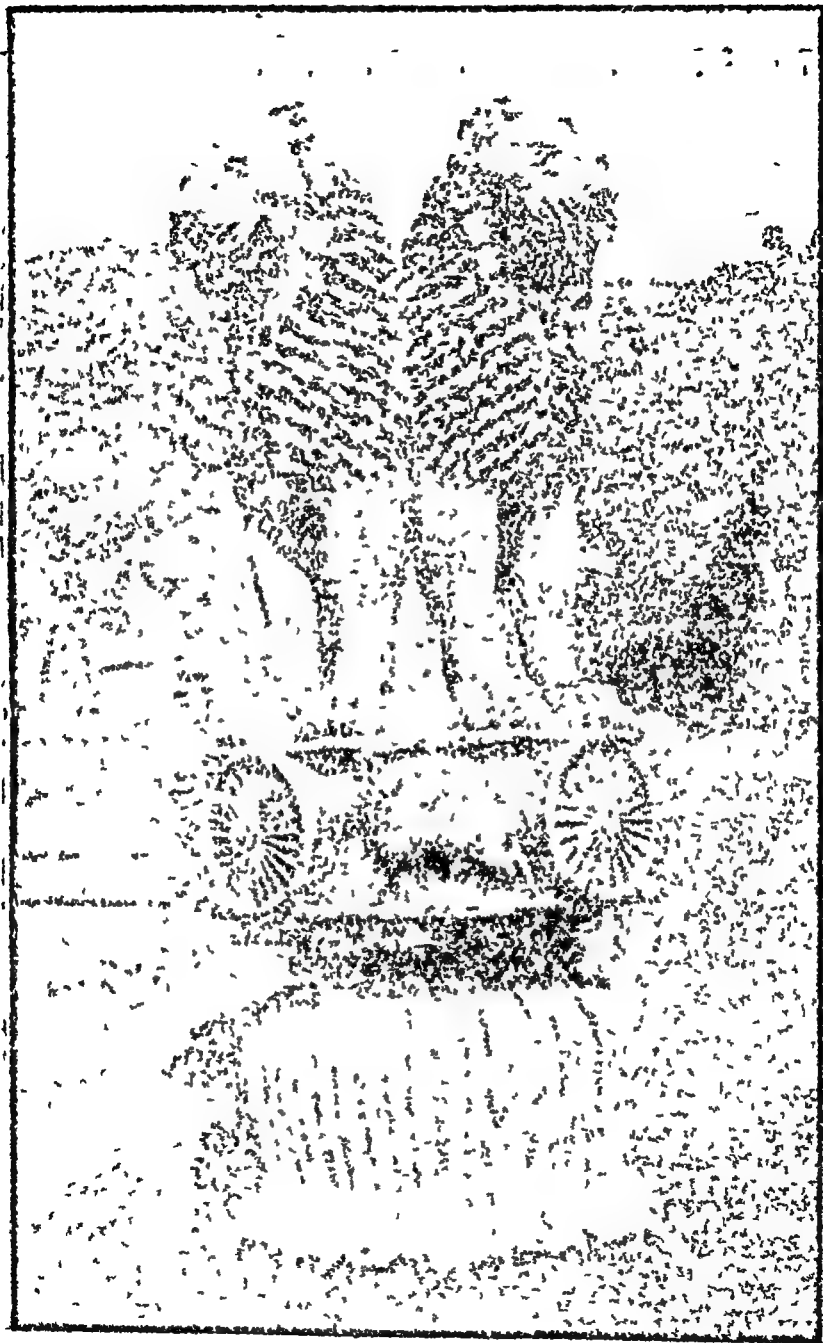
जीवन का एक-एक क्षण वह अपनी प्रजा की भलाई के काम सोचने में व्यतीत करता था।

इन बातों को देखकर, यदि हम संसार के इतिहास में किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ना चाहें, जो उपर्युक्त गुणों में अशोक की बराबरी कर सके, तो हमें निराशा ही होगी।

मौर्य्य-साम्राज्य का अन्त—२३२ ई० पू० में सम्राट् अशोक का परलोकवास हो गया। उसके मरने के बाद उसके साम्राज्य का पतन होना प्रारम्भ हो गया। उसके उत्तराधिकारियों में न चन्द्रगुप्त का सा बल था और न अशोक का सा चातुर्य्य। मौर्य्य-वंश का अन्तिम राजा बृहद्रथ था उसके सेनापति पुष्य-मित्र ने, १८५ ई० पू० में, उसे मार डाला और मगध में 'शुङ्ग' वंश के राज्य की स्थापना की। इस प्रकार अशोक की मृत्यु के थोड़े ही समय बाद मौर्य्य-साम्राज्य का अन्त हो गया।

अभ्यास

नक़्शा

भारतवर्ष के नक़्शे में दिखाओ—

क—मगध, पाटलिपुत्र, मथुरा, प्रयाग, काशी, कलिंग और साँची।

ख—मौर्य्य-साम्राज्य का विस्तार और सैल्यूकस द्वारा चन्द्रगुप्त को दिया हुआ भाग।

चित्र-चर्चा—

इस अध्याय में अशोक की लाट का चित्र देखो। यह दिल्ली में फीरोजशाह के किले में खड़ी है। यह लाट समूचे शिलाखंड की बनी हुई है। इसकी ऊँचाई ४२ फुट है। इसका वजन तौल में लगभग १४०० मन है।

यह लाट टोपरा नामक गाँव मे थी जो अम्बाला के निकट है। अशोक ने २४२ ई० पू० मे इसे वहाँ खड़ा कराया था। मुसलमान बादशाह फीरोजशाह ने इसे वहाँ से उखाड़ कर मँगवाया था।

इस लाट पर अशोक का धर्मोपदेश अंकित है जिसे अशोक ने अपने राज्य-काल के २८वें वर्ष में अंकित कराया था। यह उपदेश तत्कालीन बोल-चाल की भाषा मे है जिसका सारांश यह है--

"मै अपनी प्रजा को धर्माचारी बनाने का उद्योग करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि लोग अपने आचरणों को शुद्ध बनावें। मैं जीव-हत्या तथा नर-हत्या से बचना सबका मुख्य कर्त्तव्य समझता हूँ।"

यदि तुम कभी दिल्ली जाओ तो इस लाट को अवश्य देखना।

साँची उज्जैन के निकट स्थित है। वहाँ का स्तूप अशोक के समय मे बना था। स्तूपों मे बौद्ध भिक्षुओं की समाधियाँ हैं। इस स्तूप के चार विशाल फाटक हैं। दूसरे चित्र में साँची का स्तूप ही दिया गया है।

तीसरा चित्र सारनाथ के स्तम्भ का शिखर है। यह आज तक इतना चमकदार है कि ऐसा ज्ञात होता है कि मानो अभी बना है। मौर्य्य-काल की शिल्पकला का यह एक बढ़िया नमूना है।

याद करो—

तिथियाँ—

३२२ ई० पू० से २९८ ई० पू० तक—चन्द्रगुप्त मौर्य्य का राज्य काल

३०५ ई० पू० सैल्यूकस का आक्रमण

२९८ ई० पू० से २७२ ई० पू० तक—बिन्दुसार का राज्य-काल

२७२ ई० पू० से २३२ ई० पू० तक—अशोक का राज्य काल

२६१ ई० पू० कलिङ्ग विजय

२४२ ई० पू० बौद्ध-सभा

चाणक्य-यह बड़ा विद्वान् ब्राह्मण था। कहा जाता है कि राजा महा-पद्मनंद ने श्राद्धों के दिनों में एक दिन इसे ब्राह्मणों की पंक्ति में से उठा दिया था। उसी दिन से यह नंद से कुपित हो गया था। इसी की सहायता से चन्द्रगुप्त को मगध का राज्य मिला। इसको कौटिल्य के नाम से भी पुकारते हैं। 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रन्थ इसी ने लिखा था। चन्द्रगुप्त का मंत्री हो जाने पर भी यह अपनी कुटिया में साधारण जीवन व्यतीत करता था।

प्रश्न

१—पाटलिपुत्र चन्द्रगुप्त मौर्य्य चाणक्य बिन्दुसार
कलिङ्ग अशोक नन्द वंश सैल्यूकस

नीचे के वाक्यों में खाली स्थान में ऊपर के शब्दों में से एक-एक शब्द बैठाओ—

(क) चन्द्रगुप्त मौर्य्य ने.........को हराया।

(ख).........की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य्य ने मगध का राज्य प्राप्त किया।

(ग) मौर्य्य-वंश की नींव......ने डाली।

(घ) मौर्य्य-वंश से पूर्व मगध पर......के राजा राज्य करते थे।

(ङ) चन्द्रगुप्त मौर्य्य के बाद......मगध का स्वामी हुआ।

(च) मगध की राजधानी......थी।

(छ) ....ने पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्म की सभा की थी।

(ज) अशोक ने .....पर विजय प्राप्त की।

२—मेगस्थनीज ने भारतवर्ष का वर्णन करते समय क्या लिखा है? इन बातों के विषय मे बताओ।

(क) देश की तत्कालीन अवस्था।

(ख) यहाँ के निवासी।

(ग) राजा का रहन-सहन।

(घ) पाटलिपुत्र।

३—मौर्य्य-काल की शासन-सम्बन्धी निम्नलिखित बातें बताओ। इनकी वर्तमान काल मे तुलना करो—

(क) अपराधियों को दण्ड

(ख) किसानो से कर

(ग) गुप्तचर

(घ) सूबों का प्रबन्ध

४—सेल्यूकस से चन्द्रगुप्त मौर्य्य को क्या-क्या मिला?

५—कलिङ्ग-युद्ध के बाद अशोक ने किस बात की प्रतिज्ञा की? उसने ऐसी प्रतिज्ञा क्यों की थी?

६—कल्पना करो कि तुम अशोक की बौद्ध-सभा देखने गये थे। अपने सहपाठियों के सामने इस सभा का वर्णन करो। ये बातें बताओ—

(क) कहाँ हुई?

(ख) कब हुई?

(ग) सभा का उद्देश्य।

(घ) कितने दिनों तक रही।

(ङ) विद्वानों की संख्या।

७—अशोक ने अपनी प्रजा के लाभ के लिए क्या-क्या किया? वर्तमान सरकार ने हमारे लिये वैसे कौन-कौन से काम कर रक्खे हैं?

८—मौर्य्य-काल के सम्बन्ध में नीचे कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से कुछ ग़लत हैं, कुछ ठीक। बताओ कि कौन-कौन सी ठीक हैं और कौन-कौन सी ग़लत। ग़लत बातों को ठीक करो—

(क) भारतीय बड़े सच्चे और विश्वासपात्र थे।
(ख) नगर का प्रबन्ध राजा स्वयं करता था।
(ग) बौद्ध धर्म की अवनति हो रही थी।
(घ) अशोक ने अपनी प्रजा के चरित्र को ऊँचा बनाया।
(ङ) बिन्दुसार बड़ा निर्बल शासक था।
(च) अपराधियों को दण्ड नहीं मिलता था।
(छ) अशोक के राज्य-काल में जीवों की हत्या न होती थी।
(ज) अशोक ने कई लड़ाइयाँ लड़ीं।
(झ) वह अपनी प्रजा को बहुत प्यार करता था।
(ञ) उसने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दे रखी थी कि वे प्रजा को न सतावें।

विशेष कार्य्य—

तुम्हारे स्कूल के पुस्तकालय में 'मुद्रा-राक्षस-नाटक' नामक पुस्तक होगी। उसे घर पर ले जाकर पढ़ो।

अध्याय ९

सम्राट् कनिष्क

मौर्यों के बाद मगध—पिछले अध्याय मे तुम पढ़ चुके हो कि मौर्य्य-वंश के अन्तिम राजा बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्य-मित्र ने मार डाला था। यह पुष्यमित्र शुङ्ग वश का था। पुष्य-मित्र की मृत्यु के पश्चात् कुछ काल तक मगध पर इसी वंश का राज्य रहा। इसके पश्चात् मगध राज्य कण्व वंश के अधिकार में चला गया। इस वंश के राजा इतिहास में अधिक प्रसिद्ध नहीं हैं। उन दिनों उत्तरी भारत में जैसे मगध राज्य प्रसिद्ध था, उसी तरह दक्षिण में आन्ध्र राज्य की उन्नति हो रही थी। कण्व वंश के अन्तिम राजा को, जिसका नाम सुशर्मा था, आन्ध्र वंश के राजा ने मार डाला और इस तरह मगध राज्य कुछ दिनों तक इस वंश के राजाओं के अधिकार मे रहा। अन्त मे आन्ध्र वंश के राजाओं को विदेशी जातियों के मुकाबिले में हार माननी पड़ी और परि-णाम-स्वरूप वे भी मगध राज्य से हाथ धो वैठे। उस समय मगध राज्य का सारा प्राचीन वैभव नष्ट हो गया था। यही संक्षेप में एक इतने बड़े राज्य के पतन की कहानी है, जिसकी धाक किसी समय केवल सम्पूर्ण भारतवर्ष में ही नहीं थी, वरन् जिसकी शक्ति के आगे विदेशी सम्राटों के भी छक्के छूट जाते थे।

भारत में यूनानी—जब सिकन्दर अपने देश को लौटा था, तब वह अपने जीते हुए प्रान्तों का शासन करने के लिए

अपने सेनापतियों और सरदारों को पीछे छोड़ गया था। इनमें से कितने ही उत्साही सरदारों की इच्छा भारत-विजय करने की थी। सैल्यूकस का नाम तुम्हें अच्छी तरह याद होगा। वह भी अपने इस उद्देश्य में सफल न हो सका। उन दिनों मगध की शक्ति प्रबल थी। मौर्य्य राजाओं के विनाश के बाद जब मगध का ह्रास हो गया तो यूनानियों ने फिर भारत पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। इन आक्रमणों में यूनानियों को सफलता मिली और यूनानी सरदार **मिलिन्द (मिनान्डर)** ने पंजाब प्रान्त पर अपना अधिकार जमा लिया। उसने **स्यालकोट** को अपनी राजधानी बनाया और शासन करने लगा। वह बड़ा बुद्धिमान् और विद्या-प्रेमी शासक था।

पुष्यमित्र की जीत—जिस समय यूनानी लोगों के आक्रमण हो रहे थे, उस समय मगध में पुष्यमित्र राज करता था। पुष्यमित्र का वर्णन पहले किया जा चुका है। यूनानियों ने पंजाब को अपने अधिकार में कर ही लिया था। उनकी इच्छा हुई कि मगध पर भी यूनानी झंडा फहराया जाय। लेकिन सफलता पंजाब ही तक रही। पुष्यमित्र के सामने उन्हें हार माननी पड़ी। इस विजय के उपलक्ष में पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ किया। यूनानियों को पंजाब और सिन्ध पर ही सन्तोष करना पड़ा।

शक जाति का आगमन—कुछ दिनों पश्चात् भारत में एक नई जाति के लोगों ने आना शुरू कर दिया। यह जाति **शक** लोगों की थी। शकों ने यूनानियों को उत्तरी भारत से निकाल दिया और पश्चिमी भारतवर्ष, पंजाब, सिन्ध और काठिया-वाड़ पर अपना अधिकार कर लिया। तक्षशिला और मथुरा

इनके उत्तरी राज्यों की राजधानियाँ थीं। ये लोग अपने राजाओं को 'क्षत्रप' के नाम से पुकारते थे। 'क्षत्रप' गवर्नर को कहते हैं।

कुशान जाति—शकों के बाद कुशान वंश के लोग भारतवर्ष में आये। इन्होंने शकों को परास्त करके अफगानिस्तान और पंजाब पर अधिकार कर लिया और वहाँ अपना राज्य स्थापित कर लिया। इस वंश के राजाओं में कनिष्क नामक एक बड़ा प्रतापी सम्राट् हुआ। कुशान लोग चीन के उत्तर-पश्चिमी भाग से आये थे।

कनिष्क—सन् ७८ ई० में कनिष्क राज-सिंहासन पर बैठा। पुरुषपुर में, जिसे आजकल पेशावर कहते हैं, उसकी राजधानी थी। यहाँ उसने लकड़ी का ४०० फीट ऊँचा एक मीनार बनवाया था जिसे देखकर आश्चर्य्य होता था। यह मीनार उत्तर-पश्चिम की आक्रमणकारी जातियों द्वारा नष्ट कर दिया गया। कनिष्क का राज्य भारतवर्ष में पाटलिपुत्र और नर्मदा नदी तक फैला हुआ था। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष से बाहर अफगानिस्तान, यारकन्द, खुतन और काशगर भी इसके राज्य में सम्मिलित थे।

बौद्ध धर्म की सभा—कनिष्क भी, अशोक की तरह, पीछे से बौद्ध हो गया था। उस समय बौद्ध धर्म में बहुत से मत-भेद उत्पन्न हो गये थे। कनिष्क ने इन सबका निर्णय करने के लिये काश्मीर में एक बड़ी भारी सभा की। इस सभा में बड़े बड़े विद्वान् एकत्र हुए और बौद्ध धर्म सम्बन्धी प्रश्नों का निपटारा किया गया।

बौद्ध धर्म की उन्नति—कनिष्क के शासन-काल में भी बौद्ध धर्म की बड़ी उन्नति हुई। उसी के समय में यह धर्म चीन

देश में पहुँचा जहाँ अब भी उसके अनेक अनुयायी हैं। सम्राट् कनिष्क के राजत्व काल के विषय में बहुत मत-भेद है। बौद्ध धर्म के भिक्षुओं के रहने के लिये उसने अनेक विहार बनवाये थे। इन

कनिष्क

विहारों में यूनानी कारीगरों की बनाई हुई मूर्तियाँ स्थापित करायी गयी। ये मूर्तियाँ उन खँडहरों में अब भी निकलती हैं।

साहित्य और कला की दशा—कनिष्क स्वयं बड़ा विद्या-प्रेमी था और विद्वानों का बहुत आदर करता था। उसके समय में तक्षशिला का विश्वविद्यालय उन्नति पर था। नागार्जुन नाम

का प्रसिद्ध पण्डित इसी के शासन-काल मे रहता था। ससार का प्रसिद्ध वैद्यक का ज्ञाता चरक भी कनिष्क के दरबार में रहा करता था। देश का व्यापार भी अच्छी दशा मे था। शिल्प-कला की भी अच्छी उन्नति हुई थी। कनिष्क को इमारतें बनवाने का शौक था। उसने कई स्थानो पर स्तूप और मठ बनवाये थे। उस समय मे गान्धार देश मे लकड़ी और पत्थर की खुदाई का काम बहुत सुन्दर होता था। वह शिल्प-कला आजकल "गान्धार कला" के नाम से प्रसिद्ध है।

कनिष्क का सोने का सिक्का

कनिष्क की मृत्यु—लगभग ४० वर्ष राज्य करने के उपरान्त कनिष्क की मृत्यु हो गयी। कहते हैं, जब वह चीन पर आक्रमण करने जा रहा था, असन्तुष्ट सामन्तों ने उसका वध कर डाला। मथुरा के पास कनिष्क की एक मूर्ति मिली है जो वहाँ के अजायब-घर में रक्खी

कनिष्क

भारतवर्ष
कनिष्क का साम्राज्य
बुखारा
काशगर
यारकन्द
खुतन
कनिष्क
का
पुरुषपुर
साम्रा
ज्य
पाटली पुत्र
उज्जैन
कलिङ्ग
आन्ध्र
चोल
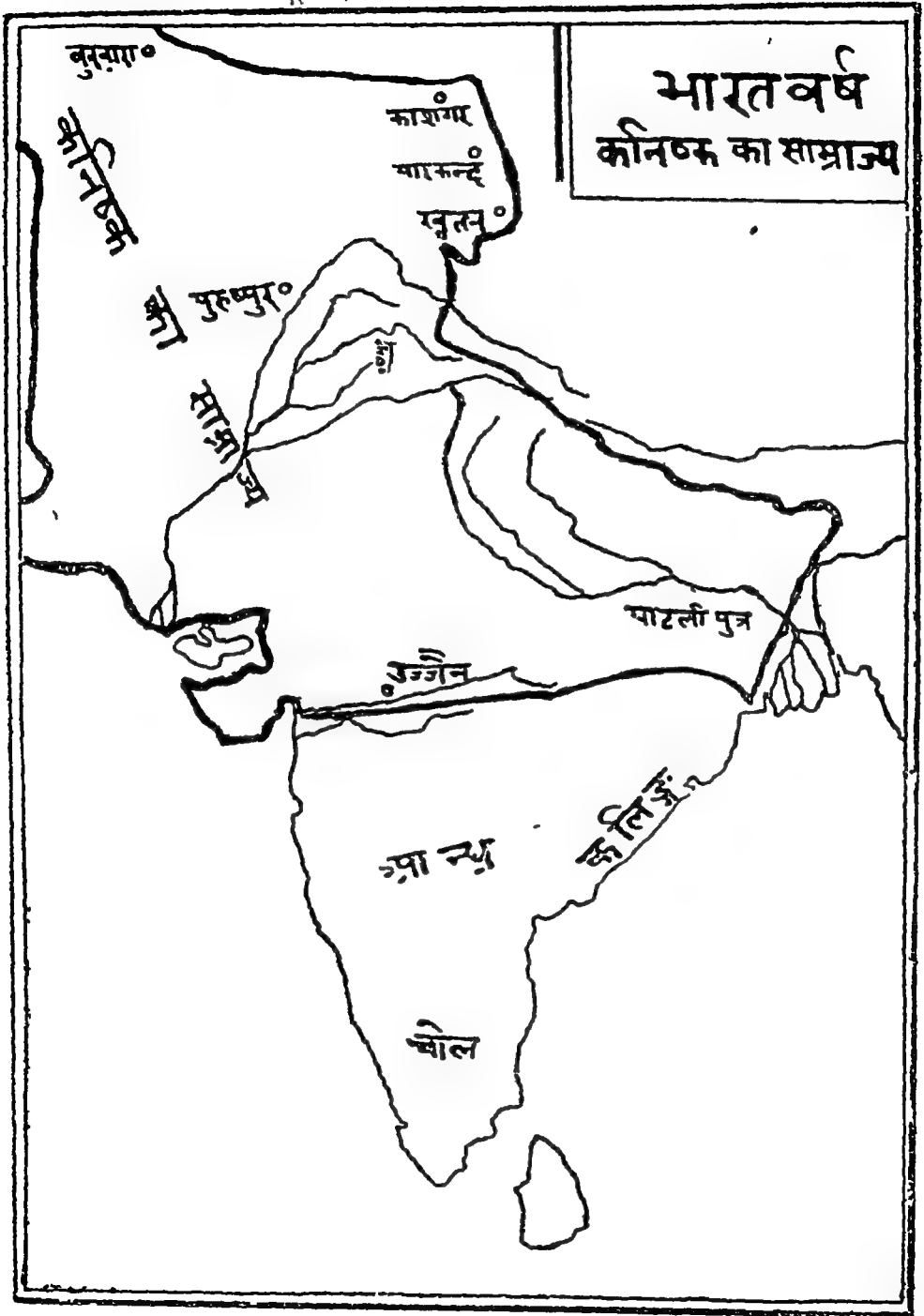
हुई है। कनिष्क की मृत्यु के बाद ही उसके वंश की अवनति होने लगी।

अभ्यास

नक़शा

नक़शे में दिखाओ—

(क) पाटलिपुत्र, पुरुषपुर, मथुरा, प्रयाग, काशी, खुतन, काशगर और यारकन्द।

(ख) अफ़ग़ानिस्तान, कनिष्क के राज्य की सीमा।

चित्र-चर्चा—

इस अध्याय में सम्राट् कनिष्क के दो चित्र दिये हुए हैं। पहला चित्र उसके एक सिक्के से लिया गया है। इसे ध्यान से देखो। उसका पहनावा और हथियारों को देखकर इसका वर्णन अपनी कापी में लिखो।

दूसरा चित्र पेशावर के कौंसिल भवन में टँगा हुआ है। इसे भी ध्यान से देखकर अपनी कापी में उसका वर्णन लिखो।

सिक्के का परिचय

इस अध्याय में कनिष्क के सोने के सिक्के का चित्र भी दिया हुआ है। सिक्के पर एक ओर कनिष्क का चित्र बना हुआ है। वह हाथ में भाला लिये है। नाक और दाढ़ी को देखो। सिर पर पारसी टोपी है और कमर में तलवार है। घेरदार अचकन और पाजामा पहने है। सिक्के के चारों ओर यूनानी अक्षरों में लिखा हुआ है—शाओ नाओ शाओ कनिष्की कुशानो। इसका अर्थ है—सम्राट् कनिष्क कुशान।

सिक्के पर दूसरी ओर बुद्ध का चित्र है। वे बाएँ हाथ में भिक्षा-पात्र लिये खड़े हैं। यूनानी अक्षरों में लिखा है—"बोड्डो" अर्थात् बुद्ध। सोच कर बताओ कि सिक्के के इस ओर बुद्ध का चित्र क्यों है?

याद करो—

तिथियाँ—सन् ७८ ई०—कनिष्क राजसिंहासन पर बैठा।
सन् १२० ई०—कनिष्क की मृत्यु।

अश्वमेध यज्ञ—प्राचीन काल में बड़े-बड़े राजा-महाराज यह यज्ञ किया करते थे। इसमें एक घोड़ा छोड़ा जाता था। यह यज्ञ वही राजा कर सकता था जिसके छोड़े हुए घोड़े को कोई पकड़ न सके और जो युद्ध में हारा न हो। जो घोड़े को पकड़ता था, उसे घोड़ा छोड़नेवाले के साथ युद्ध करना पड़ता था। यह यज्ञ करनेवाला राजा उस समय का सबसे बड़ा सम्राट् समझा जाता था।

क्या तुम्हें कुछ और ऐसे राजाओं के नाम मालूम है जिन्होंने अश्वमेध यज्ञ किये हों?

प्रश्न

१—मिलिंद	चीन	गान्धार	पुरुषपुर
कुशान	चरक	शक	पुष्यमित्र

नीचे के वाक्यों के खाली स्थान में ऊपरवाले शब्दों मे से एक-एक लगाओ—

(क) मौर्य्य राजाओं के विनाश के पश्चात्⋯⋯मगध का स्वामी हुआ।
(ख) उसने⋯⋯नामक यूनानी राजा को परास्त किया।
(ग) कनिष्क⋯⋯जाति का राजा था।
(घ) कुशान जाति ने⋯⋯जाति के लोगों को परास्त किया।
(ङ) कनिष्क की राजधानी⋯⋯थी।
(च) कनिष्क के समय बौद्ध धर्म⋯⋯देश में पहुँचा।
(छ) उसके शासन-काल में⋯⋯नामक प्रसिद्ध वैद्य हुआ।
(ज) उन दिनों⋯⋯देश में लकड़ी और पत्थर की खुदाई का काम बहुत अच्छा होता था।

२—कनिष्क की बौद्ध-सभा का वर्णन करो। क्या उसका (क) उद्देश और
(ख) स्थान वही था जो अशोक की सभा का था?

३—'विहार' से क्या मतलब समझते हो? बताओ—
(क) उनमें कौन रहते थे?
(ख) वे क्या करते थे?
(ग) उनकी जीविका के क्या साधन थे?

विशेष—

वर्तमान काल के ईसाइयों के 'मिशन हाउस' प्राचीन काल के विहारों से कुछ बातों में मिलते-जुलते हैं।

अध्याय १०

भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग

गुप्त वंश—कनिष्क की मृत्यु के लगभग १५० वर्ष बाद तक देश मे कोई शक्तिशाली सम्राट् नहीं हुआ। अनेक राजा भिन्न-भिन्न प्रान्तों पर राज्य करते रहे। धीरे-धीरे एक नये राजवंश का उदय हुआ। भारतीय इतिहास में यह **गुप्त वंश** के नाम से प्रसिद्ध है।

चन्द्रगुप्त--गुप्तवंश का प्रारम्भिक इतिहास अभी तक अँधेरे में है, किन्तु इतना निश्चित है कि गुप्त वंश का सर्वप्रथम ऐतिहासिक राजा **चन्द्रगुप्त** हुआ। इसने वैशाली के लिच्छवि-वश की राज-कुमारी से विवाह करके मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पर अपना अधिकार जमाया। सन् ३२० ईसवी में उसका राज्याभिषेक हुआ था। उसका राज्य प्रयाग तक फैला हुआ था। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र **समुद्रगुप्त** लगभग ३२६ ई० में राज-सिंहासन पर बैठा।

समुद्रगुप्त—समुद्रगुप्त बहुत चतुर और पराक्रमी राजा था। उसने सन् ३७५ ईसवी तक राज्य किया। इस काल में वह जहाँ गया, वहीं से विजय प्राप्त करके लौटा। इस प्रकार उसने गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया। राज-सिंहासन पर बैठने के कुछ समय बाद वह बड़ी भारी सेना लेकर विन्ध्याचल पर्वत की

नोट—ऐसा प्रतीत होता है कि कुशान शासकों के अत्याचारों का प्रति-रोध भारशिवों एवं वाकाटक राजाओं ने किया था। कुशानों का शासन अप्रिय था। भारशिवों ने कुशानों को दोआब तथा मथुरा से निकाल बाहर किया और पञ्जाब का पूर्वी भाग भी जीता। इसी विजय के उपलक्ष में भारशिव या नागवंशी सम्राट् वीरसेन ने काशी के दशा-श्वमेध घाट पर दश अश्वमेध यज्ञ किये।

इसके पश्चात् वाकाटक नरेशों ने नागवंशियों का कार्य अपने कन्धों पर लिया। उन लोगों के समय में कला और साहित्य की उन्नति हुई थी। इसप्रकार भारशिव या नागवंशी और वाकाटक नरेशों की डाली हुई नींव पर गुप्तवंशी सम्राटों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया।

श्रेणियों को पार करता हुआ दक्षिण-विजय के लिए चला। वहाँ के अनेक राजाओं को परास्त करके वह अपनी राजधानी को लौट आया और कहा जाता है कि उसने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया। दक्षिणी भारत को उसने जीत तो लिया, परन्तु वह उसे अपने राज्य में सम्मिलित नहीं कर सका। उत्तर में सब जगह उसकी शक्ति की धाक जमी हुई थी। इस विजय के उपलक्ष में उसने एक बड़ा भारी अश्वमेध यज्ञ किया। लंका के राजा ने भी उसके दरबार में अपना राजदूत भेजा था।

समुद्रगुप्त का चरित्र—समुद्रगुप्त केवल असाधारण योद्धा ही नहीं था; उसे विद्या और सङ्गीत से भी बहुत प्रेम था। वह वीणा बहुत अच्छी बजाता था और कविता भी करता था। उसके शरीर पर घावों के कई चिह्न थे। वह स्वयं ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था; परन्तु बौद्ध धर्म के साथ भी सहानुभूति रखता था। इलाहाबाद के किले में अशोक के समय की एक लाट है। उसके ऊपरी भाग पर समुद्रगुप्त की विजय और उसके गुणों का वर्णन अंकित है। लंका के दूतों की प्रार्थना पर उसने गया में उन्हें एक बौद्ध मठ बनाने की आज्ञा दी थी।

चन्द्रगुप्त 'विक्रमादित्य'—सन् ३७५ ईसवी में समुद्रगुप्त का देहान्त हो गया और उसका पुत्र चंद्रगुप्त विक्रमादित्य राजगद्दी पर बैठा। वह इस वंश का बड़ा प्रतापी सम्राट् था। वह अपने पिता ही के समान वीर और पराक्रमी था। उसने कई युद्ध किये और मालवा तथा गुजरात को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। कुछ समय पश्चात् उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की जिसका अर्थ 'वीरता का सूर्य' है। हिन्दुओं में उज्जैन के राजा
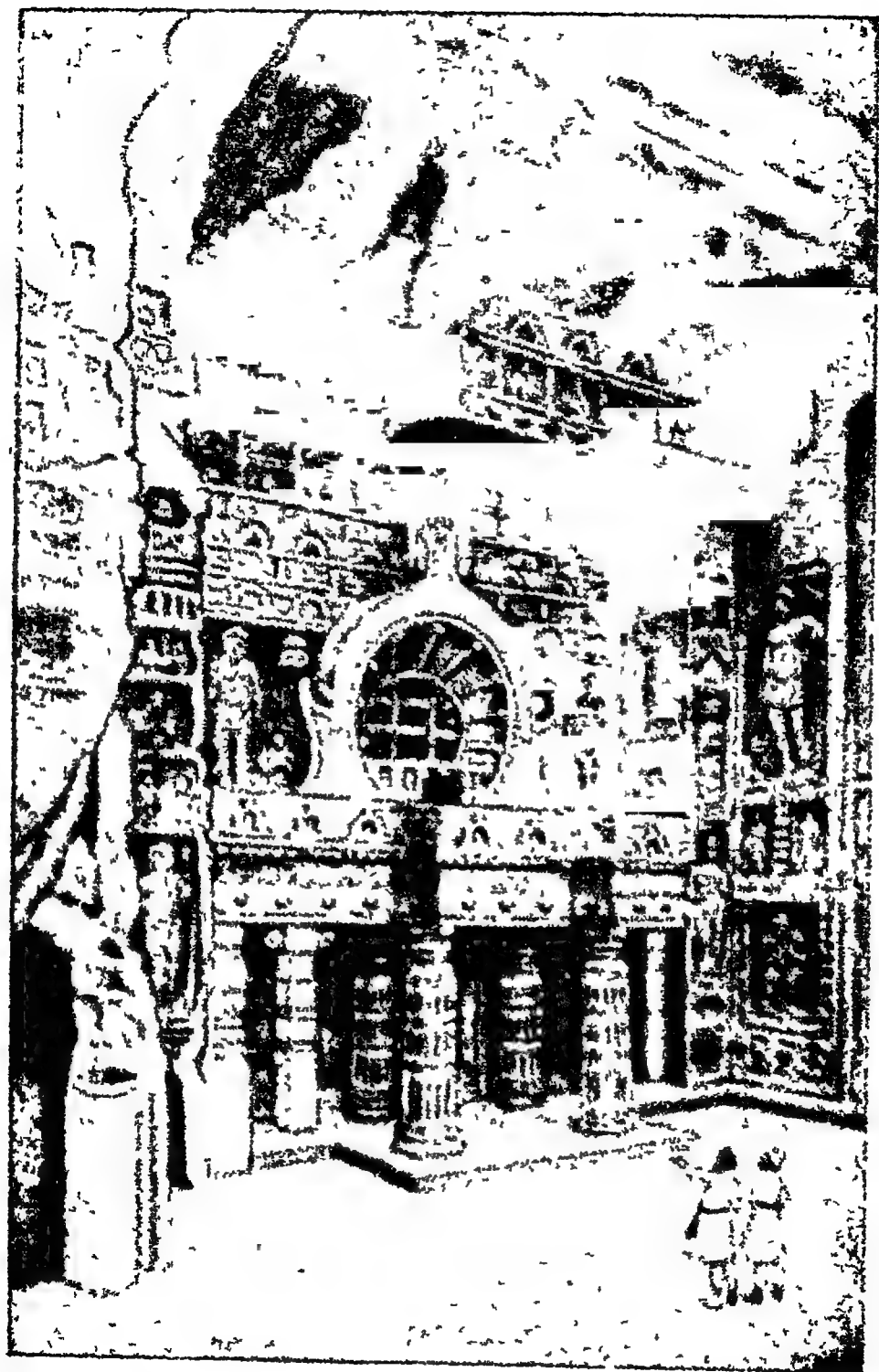
अजन्ता की गुफा का भीतरी भाग

विक्रमाजीत के विषय में अनेक किस्से-कहानियाँ प्रचलित हैं। वे कदाचित् इसी विक्रमादित्य के बारे में हैं। इसी के नाम का संवत् चला आता है। कहा जाता है कि मालवा में, जहाँ उज्जैन है, मालव नामक एक संवत् ईसा के ५७ वर्ष पूर्व से प्रचलित था। जब विक्रमादित्य ने मालवा को जीत लिया तब वहाँ के ज्योतिषियों ने इस संवत् का नाम अपने सम्राट् के नाम पर बदल कर **विक्रमी संवत्** रक्खा। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मालवा में लगभग ४०० वर्ष **पहिले विक्रेन नामी** एक राजा हुआ था। ये जो कहानियाँ प्रचलित हैं, वे इसी राजा के सम्बन्ध में हैं; किन्तु इतिहास में इसका वर्णन कहीं नहीं मिलता।

फ़ाहयान—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में **फ़ाहयान** नामक एक चीनी यात्री बौद्ध ग्रन्थों की खोज में भारतवर्ष में आया था। इसने कई वर्ष तक देश के भिन्न-भिन्न भागों में भ्रमण किया। फ़ाहयान ने तत्कालीन भारतवर्ष की दशा का वर्णन लिखा है। उसे पढ़ने से पता चलता है कि उस समय प्रजा सुखी थी। बौद्ध धर्म की अवनति आरम्भ हो गयी थी और प्राचीन काल का ब्राह्मण धर्म धीरे-धीरे जोर पकड़ रहा था। विक्रमादित्य स्वयं भी **ब्राह्मण धर्म** को मानता था। गुप्त राजाओं के समय में मौर्य्य काल की भाँति कठोर दण्ड नहीं दिये जाते थे। प्रजा से कर कम लिया जाता था। फ़ाहयान ने लिखा है—"देश में न तो कोई शराब की दूकान है और न कोई प्याज-लहसुन आदि खाता है। बाजार में मांस कहीं नहीं बिकता। पाटलिपुत्र बहुत सुन्दर और विशाल नगर है जिसमें बौद्ध भिक्षुओं के अनेक

विहार और मठ बने हुए हैं। उज्जैन नगरी चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की राजधानी है।"

: काल 'स्वर्ण युग' क्यों कहलाता है—गुप्त काल

भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से प्रसिद्ध है। इस वंश के राजाओं ने लड़ कर युद्ध में केवल विजय ही प्राप्त नहीं की, वरन् अपने बाहुबल से सारे देश में शान्ति स्थापित कर सुशासन किया। इसी कारण प्रजा सुख और शान्ति से अपना जीवन व्यतीत कर रही थी। इस काल में विद्या की अपूर्व उन्नति हुई। विक्रमादित्य के दरबार में नव विद्वान् पुरुष रहते थे; जिन्हे 'नवरत्न' कहते थे। संस्कृत-भाषा की बहुत उन्नति हो रही थी। अजन्ता, तक्षशिला आदि अनेक विश्वविद्यालय थे। संस्कृत का सुप्रसिद्ध कवि कालिदास इसी काल में हुआ था। गणित, ज्योतिष और वैद्यक की भी बड़ी उन्नति हुई।

गुप्त राजाओं के काल में कला-कौशल और व्यापार भी उन्नति की सीमा पर पहुँच गया था। अगर तुम अजन्ता की गुफाओं को जाकर देखो तो अचम्भे में आ जाओगे। वहीं तुमको पता लगेगा कि उस काल की कारीगरी क्या थी। यही नहीं, भारतवर्ष के व्यापारी रोम जैसे दूरस्थ प्रदेशों से भी व्यापार करते थे।

हूणों का आक्रमण और गुप्त साम्राज्य की अवनति— सन् ४१३ ईसवी में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का देहान्त हो गया। उसके बाद उसका पुत्र कुमारगुप्त राजा हुआ। इसके शासन-काल में मध्य एशिया से हूण नामक एक जाति ने भारत पर आक्रमण किया। कुमारगुप्त ने बहुत वीरतापूर्वक हूणों का सामना किया, परन्तु हूणों के आक्रमण बराबर होते ही रहे। कुमारगुप्त की मृत्यु के पश्चात् स्कन्दगुप्त राजा हुआ। उसका

जीवन भी हूणों के साथ युद्ध करने में बीता। सन् ४६७ ईसवी में उसकी मृत्यु हो गई। उसके उत्तराधिकारी हूणों के लगातार आक्रमणों का सामना न कर सके जिससे गुप्त साम्राज्य का अन्त हो गया।

हूणों का शासन और अन्त—हूण मध्य एशिया की जंगली और लड़ाकू जाति के लोग थे। उन्होने उत्तर-पश्चिमी भारत और काश्मीर में अपना राज्य स्थापित किया। उनके प्रसिद्ध सरदार तोरमाण का पुत्र मिहिरकुल अपनी क्रूरता और अत्याचारों के लिये भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि मालवा के राजा यशोधर्मन् और मगध के स्वामी बाला-दित्य ने मिल कर उसे भगा दिया (सन् ५२८ ई०)। इसप्रकार हूण साम्राज्य का भी अन्त हो गया।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में दिखाओ—

क—पाटलिपुत्र, प्रयाग, तक्षशिला, नालन्द, इन्द्रप्रस्थ और उज्जैन।

ख—गुप्त साम्राज्य की सीमा।

चित्र-चर्चा

गुप्त काल में कला-कौशल की बड़ी उन्नति हुई। इस अध्याय में उसका एक नमूना दिखाया गया है। यह अजंता की गुफा के अन्दर पत्थर काट-काट कर बनाया गया है। पत्थर की कटान का काम ध्यान से देख कर तुम उस समय की शिल्प-कला की उन्नति का अनुमान कर सकते हो।

याद करो—

गुप्त काल हिन्दू-काल का सबसे उन्नतिशाली युग था।

तिथियाँ

यहाँ ३०० ईसवी से लेकर ६०० ईसवी तक की समय की लाइन दी हुई है। इसकी सहायता से गुप्त काल की तिथियाँ याद करो। ऐसी दो एक लाइनें अपनी कापी में खींचो।
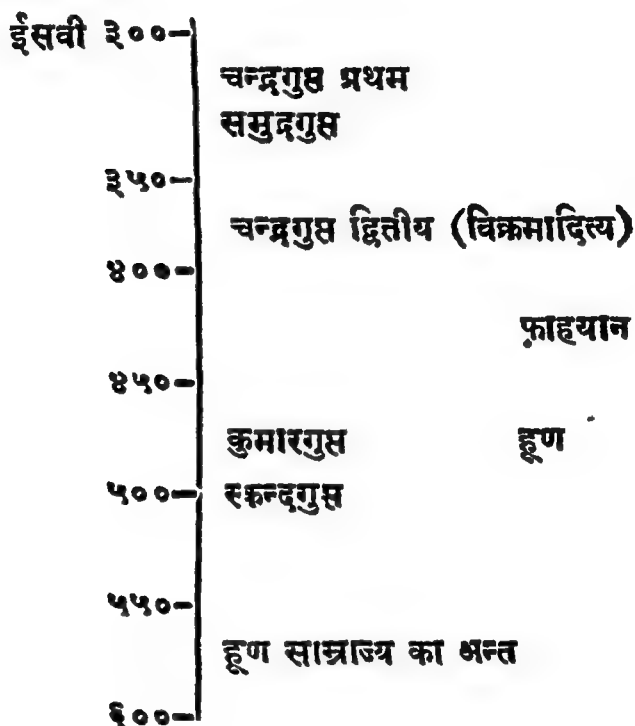
प्रश्न

१. गुप्त काल सम्बन्धी कुछ बातें नीचे लिखी हैं। इनमें से कौन सी ग़लत हैं और कौन सी ठीक? ग़लत बातों को ठीक भी करो—

(क) समुद्रगुप्त ने दक्षिण पर विजय प्राप्त की।

(ख) बौद्ध धर्म की अवनति होती जा रही थी।

(ग) फ़ाहयान यूनान से आया था।

(घ) ब्राह्मण धर्म की अवनति हो रही थी।

(ङ) मौर्य्य काल के समान कठोर दण्ड दिया जाता था।

(च) शराब और मांस खूब बिकता था।

(छ) संस्कृत भाषा का प्रचार था।

(ज) समुद्रगुप्त कवि और योद्धा था।

२. विक्रमी संवत् ईसवी सन् से ५७ वर्ष पूर्व से चला है। इस हिसाब से आज-कल कौन सा विक्रमी संवत् है ?

३. इनके विषय में क्या जानते हो—

(क) विक्रमादित्य का नाम (ख) कालिदास (ग) अजन्ता (घ) हूण।

४. गुप्त काल का वर्णन करते हुए निम्नलिखित की दशा बताओ—

(क) विद्या

(ख) व्यापार

(ग) कला-कौशल

(घ) प्रजा की अवस्था

५. नीचे लिखे हुए नाम समय के विचार से बे-तरतीब लिखे हैं। तुम इन्हें तरतीब दो—

(क) चरक (ख) कालिदास (ग) चाणक्य (घ) बुद्ध।

६. फ़ाहियान के विषय में ये बातें बतलाओ—

(क) वह कहाँ से आया ?

(ख) क्यों आया ?

(ग) उसने तत्कालीन भारत की दशा के विषय में क्या लिखा है ?

७. इन तीनों में से गुप्त वंश के नाश का क्या कारण था—

(क) पिछले गुप्त राजाओं में उत्साह का अभाव

(ख) हूणों का आक्रमण

(ग) राज्य में शान्ति

अध्याय ११

हर्षवर्धन

हर्षवर्धन—गुप्त वंश के पतन के बाद फिर लगभग सौ वर्षों तक का इतिहास ठीक-ठीक नहीं ज्ञात होता। ऐसा मालूम होता है कि बहुत से छोटे-छोटे राज्य आपस में एक दूसरे से लड़ते भिड़ते रहे होंगे। सातवीं शताब्दी के आरम्भ में एक व्यक्ति ने ख्याति प्राप्त कर ली। इसका नाम हर्षवर्धन था। यह थानेश्वर का राजा था।

हर्ष के पिता ने पंजाब के हूणों पर विजय प्राप्त करके देश के पश्चिमी भाग पर अपना सिक्का जमा लिया था। इसके दो पुत्र थे। बड़ा राज्यवर्धन था और छोटा हर्षवर्धन। सिंहासन पर बैठने के उपरान्त राज्यवर्धन हूणों का सामना करने के लिये गया। उसी बीच में मालवा के राजा ने उसके बहनोई को मार डाला और उसकी बहन को क़ैद कर लिया। राज्यवर्धन ने हूणों को परास्त करके मालवा-नरेश पर चढ़ाई की। उस पर विजय प्राप्त करके जब वह अपनी राजधानी को लौट कर आ रहा था तो मार्ग में बंगाल के राजा ने उसे मार डाला। अब हर्षवर्धन राजगद्दी पर बैठा (६०६ ई०) और उसने बंगाल पर चढ़ाई करके उसे परास्त किया। उसने फिर हूणों को मार भगाया। पश्चिम में काश्मीर से लेकर पूर्व में आसाम तक और उत्तर में नैपाल से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक के सब देश उसके अधीन थे, लेकिन राजपूताना और सिंध बच गये थे।

उसने दक्षिण पर भी चढ़ाई की थी, परन्तु वहाँ के चालुक्य

वंशीय राजा पुलकेशिन् द्वितीय ने उसे आगे न बढ़ने दिया।

विवश होकर उसे दक्षिण-विजय का विचार त्यागना पड़ा। अब कन्नौज को राजधानी बनाकर उसने शान्तिपूर्वक राज्य करना आरम्भ कर दिया।

हुआन च्वाँग—सन् ६३० ईसवी में हुआन च्वाँग नामक एक चीनी यात्री बौद्ध साहित्य की खोज में भारतवर्ष में आया। वह १५ वर्ष तक यहाँ रहा था। अपनी पुस्तक में उसने उस समय के भारतवर्ष की दशा का वर्णन किया है। वह लिखता है कि हर्ष राज-काज का सारा काम स्वयं देखता था। प्रजा की दशा जानने के लिये वह कभी-कभी दौरा भी किया करता था। अपराधियों के हाथ-पैर और नाक-कान आदि काट लिये जाते थे। शिक्षा का प्रबन्ध उत्तम था। नालन्द का विश्वविद्यालय बड़ी उन्नति पर था। उसके लिये राज्य की ओर से १०० गाँव लगे हुए थे। किसानों से पैदावार का छठा अंश लिया जाता था। सड़कों के किनारे वृक्ष लगे थे और धर्मशालाएँ बनी हुई थीं। मांस-भक्षण की मनाही थी। देशवासी सच्चे और सज्जन थे।

हर्ष शिव और सूर्य का उपासक था, परन्तु उसका झुकाव बौद्ध मत की ओर अधिक था। अपनी राजधानी कन्नौज में उसने बौद्ध धर्म की एक सभा की, जिसमें चीनी यात्री हुआन च्वाँग भी उपस्थित था। इस सभा में अनेक धर्मों के अनुयायी सम्मिलित हुए थे। यह सभा १८ दिन तक होती रही। हर्ष ने बौद्ध विहारों को बहुत सा धन दान दिया।

हर्ष जैसा वीर था, वैसा ही उदार और दानी भी था। हर पाँचवें वर्ष प्रयाग जाकर गंगा-यमुना के संगम पर, अपने शत्रों

के सिवा अपनी सारी शेष सम्पत्ति दान कर दिया करता था। वह बड़ा विद्यानुरागी भी था। उसके लिखे हुए अनेक ग्रन्थ अब तक प्रसिद्ध हैं। उसका राजपण्डित प्रसिद्ध बाणभट्ट था। अपनी 'हर्ष-चरित' नामक पुस्तक में उसने हर्ष के राज्य की प्रशंसा लिखी है। सन् ६४७ ईसवी में हर्ष की मृत्यु हो गयी।

उसकी मृत्यु के बाद उसका मंत्री अर्जुन राज-सिंहासन पर बैठा, परन्तु वह उसे सँभाल न सका। कहते हैं कि कुछ चीनी राजदूत हर्ष से मिलने के लिये आ रहे थे। अर्जुन ने अपनी मूर्खता से उन्हें मरवा डाला। इसपर चीन और तिब्बतवालों ने मिल कर उसे मार डाला और हर्ष का साम्राज्य उसके मरने के बाद शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट हो गया।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में दिखाओ—

क—मथुरा, थानेश्वर, कन्नौज, काशी, प्रयाग, पाटलिपुत्र।

ख—हर्ष के साम्राज्य का विस्तार।

याद करो—

गुप्त वंश के काल से हर्ष के समय तक फिर भारतवर्ष में कोई प्रभावशाली राजा नहीं हुआ।

तिथियाँ

६०६ ई० से ६४७ ई० तक—हर्ष का राज्यकाल।

६३० ई० से ६४५ ई० तक—भारत में ह्वेनसांग।

प्रश्न

1. कोष्ठक में लिखे हुए शब्दों में से एक एक शब्द छाँट कर इन वाक्यों को पूरा करो—

(क) राज्यवर्धन हर्ष का (भाई, पिता, बहनोई) था ।
(ख) हर्ष की राजधानी (उज्जैन, पाटलिपुत्र, कन्नौज) थी ।
(ग) राज्यवर्धन को (बंगाल, कलिंग, मगध) के राजा ने मार डाला।
(घ) हर्ष को (समुद्रगुप्त, कनिष्क, पुलकेशिन् द्वितीय) ने हराया ।
(ङ) हर्ष ने (काश्मीर, कन्नौज, तक्षशिला) में बौद्ध धर्म की सभा की ।
(च) हर्ष बड़ा (दानी, घमण्डी, मूर्ख) राजा था ।
(छ) उसके समय में (मेगस्थनीज, फ़ाह्यान, हुआन च्वाँग) भारत में आया ।
(ज) हर्ष ने (हूणों, शकों, कुशानों) को परास्त किया ।
(झ) हर्ष-चरित नामक पुस्तक (बाण, हर्ष, हुआन च्वाँग) ने लिखी थी ।
(ञ) हुआन च्वाँग (फ़ारस, यूरोप, चीन) से आया था ।

हुआन च्वाँग ने भारत के वर्णन में इन बातों के विषय में क्या लिखा है—
(क) हर्ष का चरित्र,
(ख) दंड,
(ग) शिक्षा,
(घ) राज-कर और
(ङ) सड़कें तथा धर्मशालाएं ।

अध्याय १२

नया हिंदू धर्म और राजपूत

राजपूतों की उत्पत्ति—राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में बड़ा मत-भेद है। राजपूत कौन थे, ये कहाँ से आये इसपर अभी तक कोई निश्चित सम्मति न हो पायी।

अनेक जातियाँ जो बाहर से आयीं जैसे शक, कुशान प्रभृति वे भारतीय समाज में सम्मिलित हो गयीं। वे भी चातुर्वर्ण्य के अंतर्गत हो गयीं अर्थात् वे भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि जातियों में मिल गयीं।

हूणों के आक्रमण से गुप्त साम्राज्य जब नष्ट-भ्रष्ट हो गया तो अनेक जातियों को अपना-अपना छोटा राज्य स्थापित करने का अवसर मिल गया। एक नये समाज का आविर्भाव हुआ। हूण, गुर्जर आदि जातियों ने भारत को अपना स्थायी निवास-स्थान बना लिया और वे भारतीय बन गये। इन लोगों ने वैदिक मत को अपनाया और भारतीय संस्कृति के रंग में रँग गये। कहा जाता है कि अधिकांश राजपूत इन्हीं बाहर से आनेवाले आक्रमणकारियों की संतान हैं। स्मिथ, टाड प्रभृति यूरोपीय विद्वानों की धारणा है कि आधुनिक राजपूत इन्हीं आक्रमण-कारियों की संतान हैं, किन्तु उनकी यह धारण निर्मूल सिद्ध हुई है। अनेक विद्वान इन्हें शुद्ध प्राचीन क्षत्रियों की संतान मानते हैं। जो हो अभी तक कोई निश्चित सिद्धान्त स्थिर न हो पाया। तत्त्वत. क्षत्रिय और राजपूतों में कोई विशेष अन्तर नहीं

मालूम होता। महाभारत में कुलीन क्षत्रियों को राजपुत्र कहते थे*। कालान्तर में राज्य से सम्बन्धित होने के कारण क्षत्रिय ही राजपूत कहे जाने लगे और परम्परानुसार उन्होंने ब्राह्मणों से सहयोग किया। इन्हीं की सहायता से ब्राह्मणों ने नया हिंदू धर्म स्थापित किया। इन राजपूतों ने ब्राह्मणों का सब प्रकार से सम्मान किया और बौद्ध धर्म को जड़ से उखाड़ने का उद्योग किया। इन राजपूतों ने कला तथा साहित्य की बड़ी सेवा की और एक ऐसी सभ्यता को जन्म दिया जिसे आज तक राजपूती सभ्यता कहते हैं।

नया हिन्दू धर्म—एक और तरह से भी हिन्दू धर्म का प्रचार किया गया। अन्धकार का युग था और लोग बौद्ध धर्म की वास्तविकता को भूलते जा रहे थे। ब्राह्मणों ने यह सोचा कि पुराने हिन्दू धर्म को, जिसमें यज्ञ और प्राकृतिक शक्तियों की पूजा पर अधिक जोर दिया जाता था, किसी ऐसे रूप में जनता के सामने रखा जाय, जिससे लोग आसानी से उसे स्वीकार कर लें। अतएव उन शक्तियों को देवी-देवता माना गया और ईश्वर के अवतार के सिद्धान्त का भी लोगों में प्रचार किया गया। खुले-मैदान जो प्राकृतिक शक्तियों की उपासना होती थी,

---

*म० म० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, श्री चिंतामणि विनायक वैद्य प्रभृति विद्वानों ने अखंडनीय प्रमाणों से सिद्ध किया है कि राजपूत भी उन्हीं प्राचीन क्षत्रियों की संतति हैं। यद्यपि हूण प्रभृति आक्रमणकारी भारतीय समाज में मिल गये तथापि उनके हिंदू-समाज में मिल जाने से आर्यों की रक्त-शुद्धि में कोई अंतर न आया। अभी कुछ प्रमाण मिले हैं जिनसे सिद्ध होता है कि हूण आदि भी आर्य-संतान थे।

उसकी जगह मन्दिरों मे उनकी मूर्तियाँ स्थापित करायी गयीं। लोगों को देवी-देवताओ की कथाएँ सुनायी गयीं। ये कथाएँ लिख डाली गयीं जिनसे पीछे के पुराण बने। लोगों को यह भी बतलाया गया कि इन देवी-देवताओं की पूजा करने से आत्मा को शान्ति मिलती है। कर्म करके निर्वाण प्राप्त करने की अपेक्षा लोगों को यह मार्ग सरल जान पड़ा कि मन्दिरों में जाकर मूर्तियों की पूजा की जाय। इसी लिये नये हिन्दू धर्म की उन्नति हुई।

राजपूतों के राज्य—हर्ष के मरने के बाद दो-ढाई सौ वर्षों तक, केवल राजपूतों की सहायता से हिन्दू धर्म की उन्नति तो हुई ही, साथ ही राजपूतों का शनः शनैः उत्तरीय भारत पर अधिकार भी हो गया। उस समय के राजपूतों के प्रसिद्ध राज्य ये थे—

कन्नौज-परिहार-वंश—नवीं शताब्दी में कन्नौज परिहार वश के राजपूतो के हाथ में आया। इस वंश का मिहिर भोज नामक राजा बहुत प्रसिद्ध हुआ है। उसके पास एक विशाल सेना थी और उसका शासन-प्रबन्ध उत्तम था। संस्कृत का प्रसिद्ध कवि राजशेखर उसी के समय में हुआ था। पीछे से यह राज्य गहरवार वंशीय राजपूतों के हाथ में चला गया। पृथ्वीराज का समकालीन राजा जयचन्द इसी वंश का था।

बुन्देलखंड—चंदेल वंश—चन्देल वंश के राजपूतों का लगभग तीन शताब्दियों तक उत्तरी भारतवर्ष में अच्छा प्रभाव रहा। इस वंश का कालिंजर में प्रसिद्ध गढ़ था। मुसलमानों की विजय तक ये लोग मध्य भारत मे शासन करते रहे। इन लोगो ने कई सुन्दर महल और मंदिर बनवाये थे।

मालवा–प्रमर वंश—मालवा में प्रमर-वंशीय राजपूतों का राज्य था। ग्यारहवीं शताब्दी में यहाँ का राजा भोज बहुत प्रसिद्ध हुआ है जिसकी विजय की अनेक कथाएँ अब तक प्रचलित हैं। भोज बड़ा विद्या-प्रेमी था। धारा नगरी उसकी राजधानी थी।

दिल्ली–तोमर वंश—दिल्ली तोमर वंश के राजपूतों के अधीन थी। अनंगपाल के समय में दिल्ली राज्य उन्नति पर था। तोमर-वंशीय राजाओं ने अनेक मंदिर और सुन्दर महल बनवाये थे। पीछे से दिल्ली-राज्य चौहान-वंशीय राजपूतों के हाथ में चला गया।

अजमेर–चौहान—चौहान वंश के राजा अजमेर में राज्य करते थे। इस वंश का राजा पृथ्वीराज बड़ा प्रतापी हुआ है। इसके चाचा विग्रहराज (विशालदेव) ने दिल्ली तोमरों से जीती थी। 'पृथ्वीराज रासो' नामक प्रसिद्ध पुस्तक में उसका सविस्तर वर्णन है। यह ग्रंथ उसके दरबारी कवि चंद बरदाई ने लिखा था।

मेवाड़–सिसौदिया—सिसौदिया वंश की बाप्पा रावल नामक एक वीर राजपूत ने स्थापना की थी। सिसौदिया वंश के राजा आत्म-गौरव की रक्षा के लिये अब तक प्रसिद्ध हैं।

विहार-बंगाल–पाल और सेन वंश—विहार में पाल वंश के राजपूतों का राज्य था और बंगाल में सेन वंश के राजपूत राज्य करते थे।

राजपूती सभ्यता—हर्ष की मृत्यु से लेकर मुसलमानों की भारत-विजय तक भारत का अधिकांश भाग राजपूतों के अधिकार में रहा। राजपूत अद्वितीय वीर और साहसी

अवश्य थे, परन्तु एक दूसरे से मिलकर न रहते थे। इस कारण देश में अशान्ति और फूट फैली हुई थी। राजपूतों के समय में पौराणिक धर्म की उन्नति हो रही थी और बौद्ध धर्म का बड़े वेग से पतन हो रहा था। संस्कृत का प्रचार बढ़ रहा था। शिल्पकला भी उन्नत अवस्था में थी। राजपूत स्त्रियों में सती होने की प्रथा थी। इनमें आत्म-गौरव कूट-कूट कर भरा था। वे अपने सम्मान की रक्षा के लिये अपनी जान देने को तैयार रहती थीं। ये बड़ी पतिभक्ता तथा सुशीला होती थीं। ये अपने पति और पुत्रों को युद्ध करने में प्रोत्साहित करती थीं। राजपूत विजित शत्रु पर उदारता दिखाते थे और शरणागत की रक्षा के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा देते थे।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष का नक़शा खींच कर इस अध्याय में वर्णन किये हुए राजपूत राज्य दिखलाओ। जहाँ-जहाँ जो वंश राज्य करता था, उस भाग में उसका नाम लिख दो। निम्नलिखित नगर भी दिखाओ—

दिल्ली, अजमेर, कन्नौज, चित्तौड़ और कालिंजर।

प्रश्न

१. जो कुछ तुमने इस अध्याय में पढ़ा है, उसके विषय में नीचे कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से कुछ ग़लत हैं और कुछ ठीक? बताओ कि कौन सी ग़लत हैं और कौन सी ठीक। ग़लत बातों को ठीक भी करो—

(क) बाहर से आनेवाली जातियों ने धीरे-धीरे हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया।

(ख) राजपूतों ने बौद्ध धर्म का विरोध किया।

(ग) वे बड़े शान्तिप्रिय थे।

(घ) राजपूत स्त्रियों में सती होने की प्रथा थी।

(ङ) राजपूतों ने हिन्दू धर्म के प्रचार में ब्राह्मणों की सहायता की।

(च) नये हिन्दू धर्म में मूर्तियों और अवतारों की पूजा होने लगी।

(छ) बाप्पा रावल ने सिसौदिया वंश की स्थापना की।

(ज) राजपूत राजा परस्पर एकता से रहते थे।

२. राजपूतों की उत्पत्ति कैसे हुई?

३ निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो?

(क) पुराण,

(ख) राजा भोज और

(ग) चन्द बरदाई का पृथ्वीराज रासो।

समय की लाइन—

अब तक तुमने इतिहास में जो कुछ पढ़ा है, उसकी मोटी-मोटी बातें समय की लाइन में दिखाई गई हैं। ऐसी ही लाइन तुम अपनी कापी में खींचो और उसकी सहायता से सारे काम को दुहरा जाओ।

वैदिक काल

—महात्मा बुद्ध

ई० पू० ५००—

४००—

३००— सिकन्दर का आक्रमण

२००— मौर्य्य वंश

शुङ्ग वंश

१००—

हिन्दू काल का प्रथम अंधकार युग

ईसा

ईसवी १००— कनिष्क—कुशान वंश

२००—

हिन्दू काल का द्वितीय अंधकार युग

३००—

गुप्त वंश (स्वर्ण युग)

फ़ाहयान

४००—

५००— हिन्दू काल का तृतीय अंधकार युग

६००—

हर्षवर्धन

७००— ह्वेनसांग

राजपूत

बौद्ध काल

नया हिन्दू धर्म

अध्याय १३

दक्षिण का इतिहास

अब तक तुमने जो कुछ पढ़ा है, वह उत्तरी भारत का वर्णन है। दक्षिणी भाग का वर्णन तुमने बहुत कम पढ़ा है। इसका कारण यह है कि विन्ध्याचल की पर्वत-श्रेणियों ने देश को दो भागों में बाँट रक्खा है। जिन जातियों ने उत्तरी भारत को अपना कार्यक्षेत्र बनाया, वे विन्ध्याचल पर्वत और उसके जंगलों के कारण दक्षिण की ओर न बढ़ सकीं। उस समय आजकल की तरह रेलें और मोटरें न थीं। इसीलिये वहाँ का इतिहास उत्तरी भारत के इतिहास से बिल्कुल भिन्न ही रहा है। कभी-कभी कोई दिलचले राजा-महाराज उधर चले अवश्य गये थे, लेकिन वास्तव में वहाँ के और यहाँ के इतिहास में है अन्तर ही। जो राजा दक्षिण की ओर गये उनमें समुद्रगुप्त और हर्ष का नाम तुम्हें याद होगा। हम इस अध्याय में तुम्हें दक्षिण का वृत्तान्त ही बतलावेंगे।

आंध्र—दक्षिण का बहुत कम वृत्तान्त इतिहास में मिलता है। अशोक के राज्य का नकशा खींचते समय तुमने देखा होगा कि उस समय दक्षिण का बहुत सा भाग अशोक के साम्राज्य में सम्मिलित था। जब मौर्य्य साम्राज्य क्षीण हो गया, तब एक नये वंश ने, जिसका नाम आंध्र था, दक्षिण पर अपना अधिकार जमा लिया। लगभग साढ़े-चार शताब्दियों तक दक्षिण में इन्हीं लोगों का राज्य रहा।

पल्लव—आंध्र वंश का अन्त हो जाने पर पल्लव वंश का उदय हुआ। जिस समय समुद्रगुप्त ने दक्षिण को विजय किया था, उन दिनों पल्लव वंश के राजा कांची में राज्य करते थे। कांची को आजकल काञ्जीवरम् कहते हैं।

चालुक्य वंश–पुलकेशिन् द्वितीय—दक्षिण में दूसरी शक्ति चालुक्य राजाओं ही की थी। छठी शताब्दी के मध्यकाल मे इन लोगों का दक्षिण में राज्य स्थापित हुआ था। पल्लवों से इनकी कई वार लड़ाइयाँ हुई थीं। चालुक्य वंश के राजा राजपूत थे और हिन्दू धर्म के पक्षपाती थे। इनकी राजधानी वातापी में थी जो आजकल वीजापुर जिले में है। राजा पुलकेशिन् द्वितीय, जिसने हर्ष को हराया था, इसी वंश का सम्राट् था। इसके शासन काल मे चालुक्य राज्य बड़ी उन्नति पर था। चीनी यात्री हुआन च्वाँग इसके दरवार में भी गया था। इस राजा की धाक फारस तक थी। उसके दरवार मे फारस के वादशाह ने अपना राजदूत भी भेजा था। चालुक्य वंश का कुछ समय बाद ह्रास होना प्रारम्भ हो गया और इनके हाथ से पश्चिमी भाग निकल कर राष्ट्रकूट राजपूतों के हाथ में चला गया। कुछ दिनों वाद फिर चालुक्य वंश की उन्नति हुई।

पांड्य, चोल और चेर—सुदूर दक्षिण में कई छोटे-छोटे तामिल राज्य थे। इनमें पांड्य, चोल और चेर (या केरल) अधिक प्रसिद्ध थे। ये तीनो राज्य व्यापार और कला-कौशल में वड़े चतुर थे। इनका रोम, मिश्र आदि पश्चिम के देशों से व्यापारिक सम्बन्ध था। दक्षिण में कला की भी अच्छी उन्नति हुई।
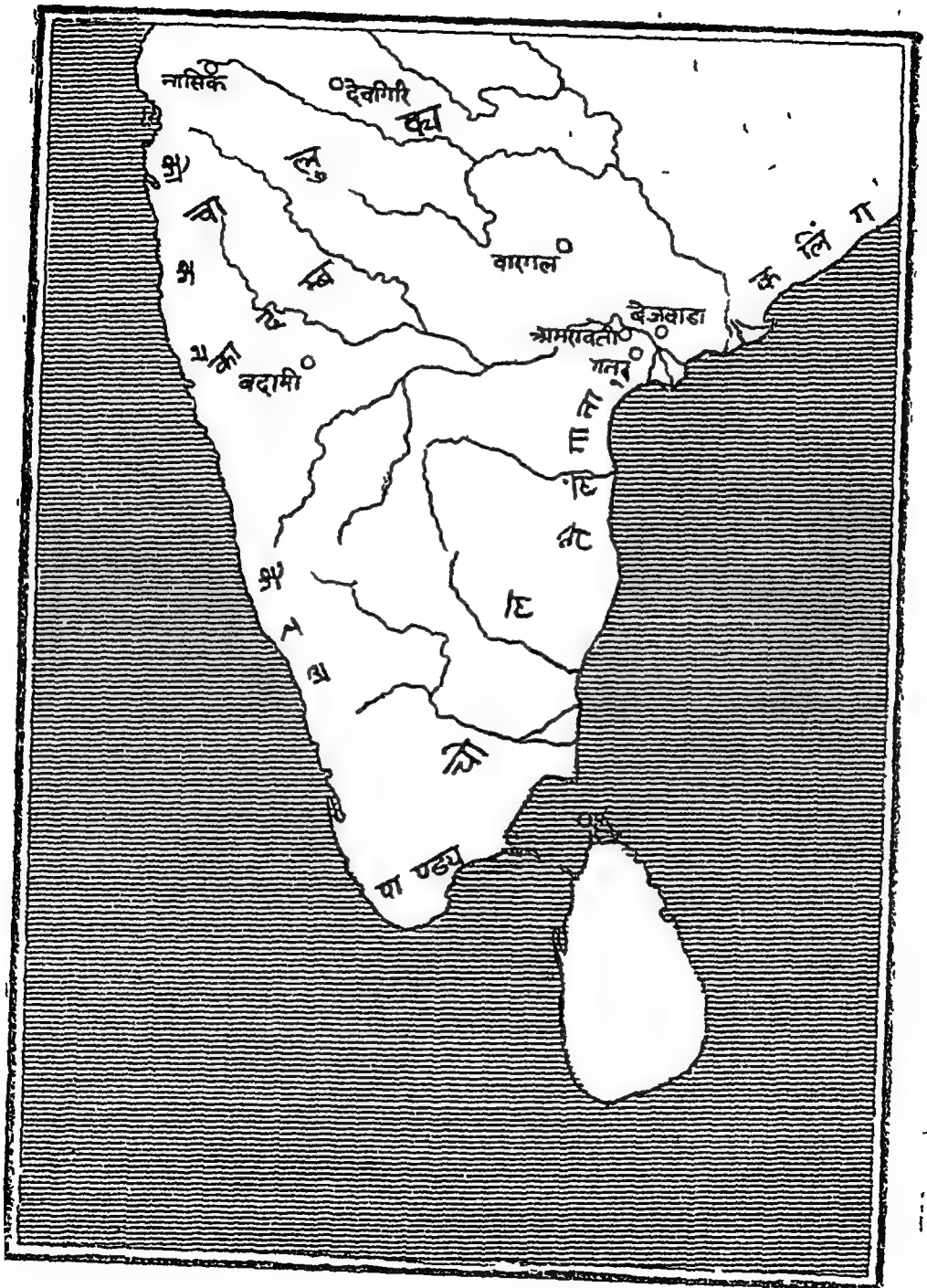
दक्षिण की प्राचीन रियासतें

पहाड़ियों और गुफ़ाओं में काट-काट कर बड़े सुन्दर मन्दिर और मूर्तियाँ बनायी गयीं।

दक्षिण में राजपूत राज्य—जिस समय भारत को मुसलमानों ने विजय किया था, उस समय तक वहाँ राजपूतों के कई राज्य स्थापित हो चुके थे। इनमें से होयशल, यादव और काकतीय वंश अधिक प्रसिद्ध थे।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष का नक़शा खींच कर दक्षिणी भारत के वे राज्य यथास्थान दिखाओ जिनका इस अध्याय में वर्णन किया गया है। कुछ प्रसिद्ध नगर भी दिखाओ।

याद करो—

प्राचीन काल ही से दक्षिण में उत्तरी भारत की आर्य-सभ्यता की चर्चा फैली और इसी सभ्यता का फिर प्रचार हुआ। यहाँ तक कि लगभग आठवीं शताब्दी में सभ्यता को देखते हुए उत्तरी और दक्षिणी भारत में कुछ अन्तर न मालूम देता था। इन दिनों में दक्षिण की बड़ी उन्नति हुई।

व्यापार की यह दशा थी कि विदेशों से व्यापारी जहाजों में आकर व्यापार करते थे। पूर्वी भाग में चीन के व्यापारी आकर भारत से व्यापार करते थे और पश्चिमी भाग के मिश्र, यूनान और रोम के व्यापारी आया करते थे।

इस युग में कला-कौशल की भी अच्छी उन्नति हुई। भिन्न-भिन्न प्रकार की मूर्त्तियाँ बनती थीं। सलोरा और अजन्ता की गुफाओं को काट-काट कर मंदिर और मूर्तियाँ बनायी गयीं।

विद्या की भी काफी उन्नति हुई।

प्रश्न

१. दक्षिण के आन्ध्र राज्य के विषय में क्या जानते हो ?

२. चालुक्य वंश की राजधानी कहाँ थी ? पुलकेशिन् द्वितीय के विषय मे क्या जानते हो ? उस समय उत्तरी भारत में कौन राज्य करता था ? चालुक्य वंश पर किस वंश ने विजय प्राप्त की थी ?

३. सुदूर दक्षिण के राज्यों का संक्षेप में वर्णन करो ।

अध्याय १४

नया हिन्दू धर्म और इस्लाम

तुमने अब तक जो कुछ पढ़ा है, वह सब हिन्दुओं के विषय मे पढ़ा है। जितनी जातियाँ बाहर से आती रहीं, वे सब हिन्दुओं में मिल-जुल कर हिन्दू बन गयीं। बहुत काल तक यही अवस्था रही। कहा जाता है कि वेदों की रचना सबसे पहले ईसा के तीन हजार वर्ष पूर्व हुई थी, अर्थात् अबसे लगभग ५००० वर्ष पूर्व। इस काल से लेकर राजपूतों के समय तक जितनी जातियाँ भारत मे आयीं, उन्होने यहाँ आकर केवल हिन्दू धर्म स्वीकार किया और वे उनकी ही जात-पाँत में सम्मिलित हो गयीं। अब राजपूतों के समय में एक नयी जाति भारतवर्ष में आती है और एक नया धर्म अपने साथ लाती है। इस जाति ने प्राचीन आक्रमणकारी जातियो की भाँति हिन्दू धर्म स्वीकार नहीं किया और ये लोग हिन्दुओं में सम्मिलित नहीं हुए। ये **मुसलमान** थे। वास्तव मे मुसलमान जाति कोई विशेष जाति नही है। एशिया भर की वे सारी जातियाँ जिन्होने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया, मुसलमान के नाम से पुकारी जाती हैं। सातवी शताब्दी ईसवी से लेकर पन्द्रहवी शताब्दी ईसवी तक इस धर्म ने ऐसी उन्नति की कि पश्चिम में स्पेन से लेकर पूर्व में गंगा के किनारे और चीन तक इस्लाम का ही डंका बजा। देश के देश और जातियाँ की जातियाँ मुसलमान हो गयीं। यह तुम संक्षेप मे पहले ही पढ़ चुके

हो कि हमारे देश में हिन्दुओं के अतिरिक्त मुसलमानों की संख्या भी अच्छी है; अर्थात् भारतवर्ष की कुल जन-संख्या ३५ करोड़ है जिसमें से हिन्दू लगभग २३ करोड़ के हैं और मुसलमान लगभग ८ करोड़। इस प्रकार हिन्दुओं के बाद जिन लोग ने भारतीय इतिहास बनाया है, वे मुसलमान हैं। उनका इतिहास लगभग ११ शताब्दियों को अपने गर्भ में लिये हुए है। नीचे की समय की लाइन से तुम इन दोनों जातियों के ऐतिहासिक काल का अनुमान कर सकते हो।

३००० ई० पू०
२०००
१०००
ईसा का जन्म
१००० ई० — मुसलमान
वर्तमान काल — अंग्रेज़

इस्लाम—जिस समय ब्राह्मण नये हिन्दू धर्म के फैलाने में लगे थे और एक ईश्वरीय प्राकृतिक शक्ति की आराधना के स्थान में अनेक देवी-देवताओं और अवतारों की पूजा का प्रचार हो रहा था, उन्हीं दिनों अरब मे एक महान् आत्मा का जन्म हुआ जिसने इस बात पर ज़ोर दिया कि खुदा (ईश्वर) एक है और उसके साथ कोई दूसरा सम्मिलित नहीं। उसी की उपासना करना प्रत्येक प्राणी का धर्म है। ईश्वर की दृष्टि में प्रत्येक मनुष्य बराबर है। कोई छोटा-बड़ा नहीं। मनुष्य मात्र भाई भाई है। इन शिक्षाओं ने अरब निवासियों में बिल्कुल परिवर्तन कर दिया। जहाँ पहले वे मूर्त्ति-पूजक थे, वहाँ कट्टर ईश्वर की उपासना करनेवाले बन गये।

जहाँ छोटी-छोटी बातों पर परस्पर लड़ा-भिड़ा करते थे, वहाँ अब एकता के सूत्र में बँध गये और उन्होंने बीड़ा उठाया कि इन शिक्षाओं को, जिन्हे 'इस्लाम' कहते है, सारे संसार में फैलावेंगे। अब तुम अच्छी तरह समझ सकते हो कि इस्लाम की शिक्षाएँ, जो इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद साहब ने दी थीं, उन शिक्षाओ से कितनी भिन्न थीं, जिनका उस समय भारतवर्ष में प्रचार हो रहा था। इस्लाम के माननेवाले 'मुसलमान' कहलाते हैं और उनके धर्म की शिक्षाएँ उनकी पवित्र धार्मिक पुस्तक कुरान मे पढ़ने को मिलती हैं। हिन्दुओ की उस समय की शिक्षाएँ पुराणों में लिखी हैं।

अभ्यास

याद करो

इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद साहब थे। ये अरब देश के मक्का नगर में पैदा हुए थे। अरब के अशिक्षित और असभ्य लोगों को उन्होंने ईश्वर की पूजा की शिक्षा दी। प्रारम्भ में लोगों ने उनका विरोध किया जिसके कारण उन्हें मक्का छोड़ कर मदीने जाना पड़ा। एक जगह को छोड़ कर दूसरी जगह जाने को अरबी भाषा में 'हिजरत' कहते हैं। यह हिजरत हजरत मुहम्मद साहब ने सन् ६२२ ई० में की थी। मुसलमानों का संवत् इसी घटना से प्रारम्भ होता है और हिजरी कहलाता है।

कुरान शरीफ-यह मुसलमानों की पवित्र पुस्तक है। उनका विश्वास है कि यह पुस्तक ईश्वर की ओर से हज़रत मुहम्मद साहब पर ईश्वरीय ज्ञान के रूप में अवतरित हुई थी। इसकी शिक्षाओं को मानना और उनका पालन करना प्रत्येक मुसलमान का धार्मिक कर्त्तव्य है। हज़रत मुहम्मद 'रसूल-अल्ला' (ईश्वरीय दूत) कहलाते है। रसूल का अर्थ है—भेजे हुए

या दूत। मुसलमानों का विश्वास है कि हज़रत मुहम्मद साहब ईश्वर की ओर से भेजे गये थे जिसमें वे भटकते हुए लोगों को सन्मार्ग पर लावें।

पुराण—नये हिन्दू धर्म की पवित्र पुस्तकें पुराण कहलाती हैं। ये संख्या में १८ हैं और इनमें सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय, मनु आदि महापुरुषों एवं अवतारों आदि की कथाएँ दी हैं। हिन्दुओं की इनमें श्रद्धा है।

प्रश्न

१. वेद, पुराण और कुरान इन तीनों की शिक्षाओं में क्या अन्तर है? संक्षेप में वर्णन करो।

२. कुरान की शिक्षाएँ महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं के कितने सौ बरस बाद दी गईं?

३. एशिया के किन-किन भागों में इन दोनों शिक्षाओं का अधिक प्रचार रहा? प्रत्येक के विषय में अलग-अलग संक्षेप में बताओ।

४. कुरान की शिक्षाएँ किस नाम से पुकारी जाती हैं? उसके अनुयायी क्या कहलाते हैं?

५. आजकल कौन सा सन् हिजरी है? क्या यह सन् हिजरी सन् ईसवी में से ६२२ बरस घटा देने से ठीक निकल आता है? यदि नहीं तो क्या कारण है?

लगभग १७ बार भारत पर आक्रमण किया। हर बार वह बड़ी भारी सेना लेकर आता था और किसी न किसी हिन्दू राजा को परास्त करके और अतुल धन-राशि लेकर अपनी राजधानी ग़ज़नी को लौट जाता था। वह मूर्ति-पूजा का विरोधी था, अतएव उसने हिन्दुओं के अनेक मन्दिरों को नष्ट किया। पंजाब के राजा जयपाल के साथ उसके पिता के समय से ही वैर चला आता था। महमूद ने उसके बेटे **अनंगपाल** को परास्त किया और **नगरकोट, थानेश्वर, कन्नौज, मथुरा** और **कालिंजर** आदि नगरों पर भी चढ़ाई की। इन नगरों से महमूद के हाथ अपार धन लगा।

सोमनाथ पर चढ़ाई—महमूद ग़ज़नवी का सब से प्रसिद्ध आक्रमण सोमनाथ के मन्दिर पर सन् १०२५ ई० मे हुआ। उस समय यह मन्दिर अपनी अद्वितीय शोभा के लिए दूर-दूर तक विख्यात था। तीन हज़ार से भी अधिक गाँव इससे लगे हुए थे। पर वहाँ तक पहुँचने के लिये सैकड़ों मील का दुर्गम और रेतीला मार्ग तै करना पड़ता था। महमूद ने इस आक्रमण की विशेष तैयारियाँ कीं और रास्ते के सारे कष्ट झेलता हुआ अन्त मे वह यहाँ पहुँच ही गया। देखता क्या है कि बहुत से राजपूत राजा सेना लेकर मन्दिर की रक्षा के लिए आये हुए हैं। लगातार तीन दिन तक हिन्दू और मुसलमान सेनाओं मे बड़ी घमासान लड़ाई हुई। अन्त मे हिन्दुओं की हार हुई और महमूद ने मन्दिर में प्रवेश किया। मन्दिर की अपूर्व छटा और उसमे लगे हुए असंख्य अमूल्य रत्न देख कर वह चकित रह गया। फिर क्या था! वह मन्दिर पर टूट पड़ा और अपार सम्पत्ति उसके हाथ लगी जिसे लेकर वह ग़ज़नी को लौट गया।

भारत वर्ष
महमूद गज़नवी के
आक्रमण
गज़नी
भटिंडा
दिल्ली
मथुरा
कालिंजर
सोमनाथ
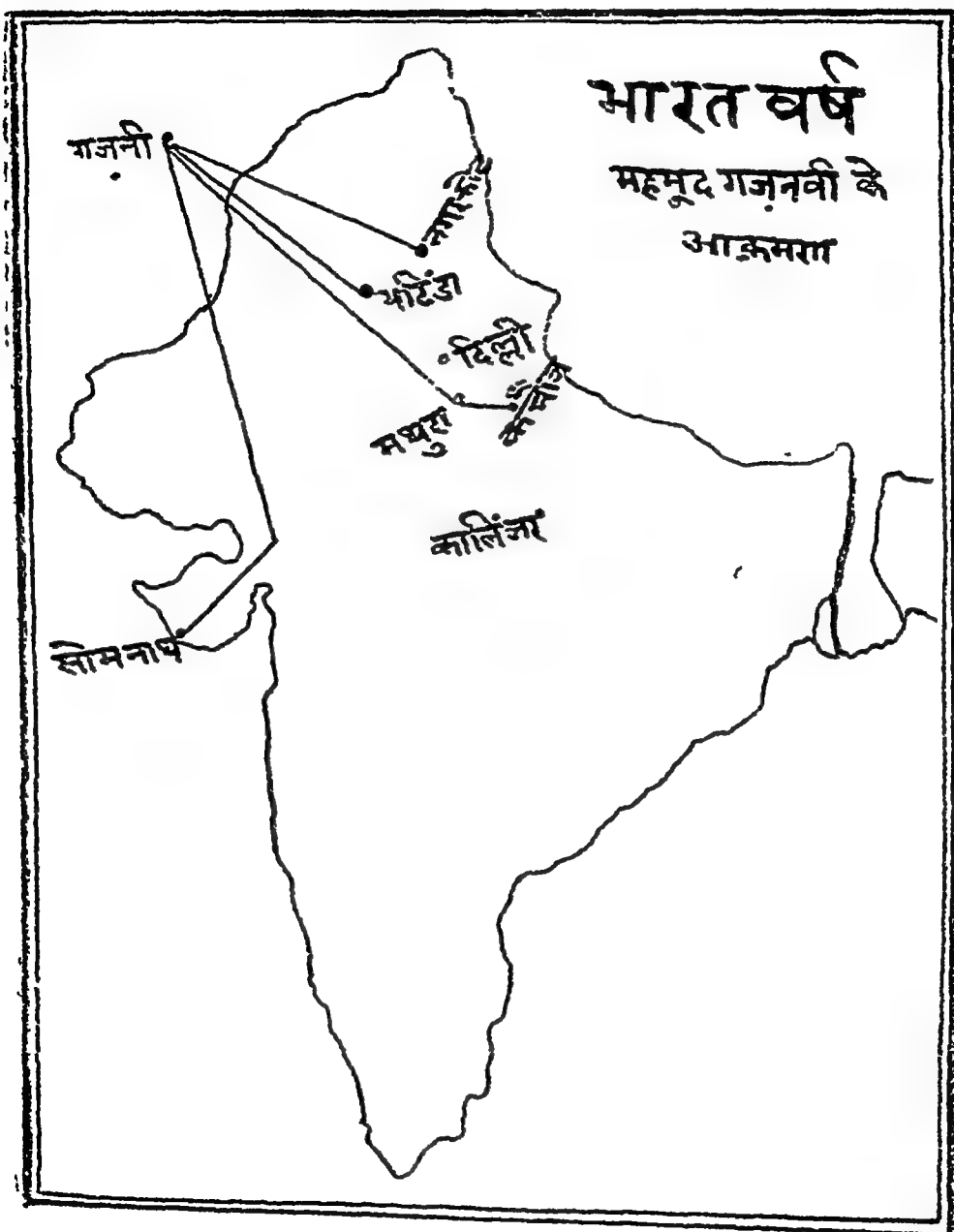
महमूद के आक्रमणों का उद्देश—जो कुछ तुमने ऊपर पढ़ा, उससे तुम्हें यह विदित हो गया होगा कि महमूद ग़ज़नवी किस उद्देश से आक्रमण करता था। एक तो यह कि अपार धन-सम्पत्ति उसके हाथ लगे और दूसरे यह कि इस्लाम धर्म का सिक्का बैठे। धार्मिक जोश और धन का लालच, दोनों ने मिल-कर उसे इस बात पर तैयार कर दिया था कि मुझे चाहे कितने ही कष्ट उठाने पड़े, मै भारत के धनी नगरों और मन्दिरो पर आक्रमण किये बिना न रहूँगा। अतः वह बड़ी भारी आँधी के समान आता था, लूटता था, नष्ट करता था और जो धन इस प्रकार प्राप्त होता था, उसे लेकर अपने देश को वापस चला जाता था। उसने यह उद्योग नहीं किया कि स्थायी रूप से किसी साम्राज्य की स्थापना करे और सच पूछो तो उसमें शासन करने की योग्यता न थी तो भी उसने इतना अवश्य किया कि पंजाब को गजनी राज्य का एक प्रान्त बना लिया। उसके आक्रमणों का प्रभाव भारतवर्ष पर यदि कुछ हुआ तो यही हुआ कि वह उसे शक्तिहीन और निर्बल कर गया और मुसलमानो के लिये यहाँ आने और राज्य स्थापित करने का मार्ग खोल गया।*

उसका चरित्र और मृत्यु—महमूद असाधारण वीर और योद्धा था। उसने अनेक बार मरु-भूमि मे अपने शत्रुओं को परास्त किया था। गज़नी उसकी जन्मभूमि थी और ग़जनी को

---

* किन्हीं किन्हीं विद्वानों की सम्मति है कि महमूद ने भारत पर राजनीतिक स्वार्थ के लिये आक्रमण किये थे।
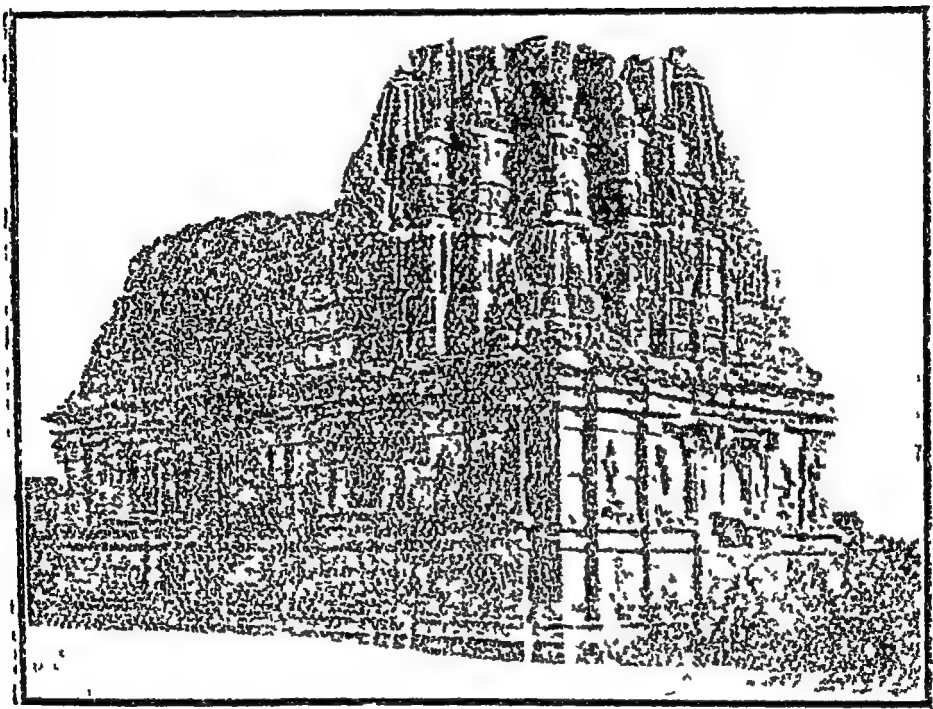
सोमनाथ का मंदिर

ही उसने लूट के माल से शोभायुक्त नगर बनाया। उसको काव्य और दूसरी कलाओं से भी प्रेम था। उसके दरबार में बड़े-बड़े विद्वान् रहते थे। **फ़िरदौसी**, जिसने फ़ारसी का प्रसिद्ध ग्रन्थ **शाहनामा** लिखा है, उसके दरबार का प्रसिद्ध कवि था। ग़ज़नी मे उसने एक विश्वविद्यालय की भी स्थापना करायी। वह विद्वानों को अच्छा वेतन देकर उन्हें आश्रय प्रदान करता था; किन्तु साथ ही साथ वह लालची भी बड़ा था। फ़िरदौसी के साथ उसका लालच से भरा बर्ताव इतिहास में प्रसिद्ध ही है।

ग़ज़नवी वंश का पतन—सन् १०३० ई० में महमूद की मृत्यु हो गयी। उसके उत्तराधिकारी निर्बल और उत्साहहीन थे। उनमें से कोई ऐसा योग्य न हुआ जो उसके पीछे उसके इतने बड़े साम्राज्य को सँभाल सकता। धीरे-धीरे ग़ज़नवी वंश का पतन हो गया।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष का नक़शा खींच कर उसमें वे स्थान दिखलाओ जिन पर महमूद ग़ज़नवी ने आक्रमण किया था। अफ़गानिस्तान का नगर ग़ज़नी भी दिखाओ।

याद करो—

ख़लीफ़ा—हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के पश्चात् मुसलमानों का धार्मिक नेता ख़लीफ़ा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मुसलमानी साम्राज्य का प्रधान भी वही था। उसी की आज्ञा से मुसलमानी सेनाएँ देश-विदेशों में आक्रमण करने के लिये गई थीं। मुसलमान ख़लीफ़ा को मुहम्मद का प्रतिनिधि समझते थे। पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र थे।

सोमनाथ—काठियावाड़ में दक्षिण-पश्चिमीय समुद्र-तट पर स्थित था। यहाँ शिवजी का बड़ा विशाल और सुन्दर मन्दिर था। उस समय समस्त भारत में इसके समान और कोई मन्दिर धनी न था। इसमें एक हज़ार पुजारी थे और ५०० नर्तकियाँ। भारत के प्रत्येक प्रान्त से आये हुए यात्रियों को मूँड़ने के लिये मन्दिर में ३०० नाई रहते थे। मन्दिर के घंटे सोने के बने हुए थे और कहते हैं कि वे तौल में २०० मन थे। मूर्ति के स्नान के लिए प्रतिदिन १००० मील की दूरी से गंगा-जल आता था।

तिथियाँ

सन् ७१२ ई०—सिन्ध पर अरबों का आक्रमण।

सन् १०२५ ई०—सोमनाथ के मन्दिर पर महमूद का आक्रमण।

सन् १०३० ई०—महमूद की मृत्यु।

चित्र-चर्चा—

इस अध्याय में सोमनाथ के मन्दिर का चित्र दिया हुआ है। इसी को महमूद ने नष्ट करने की चेष्टा की थी। अब यह टूटी-फूटी अवस्था में है। प्राचीन काल में इसकी शोभा देखने योग्य थी। उस काल के खंडहरों से इस बात का पता चलता है। इसके पास ही रानी अहल्याबाई ने एक नया मन्दिर बनवा दिया है।

प्रश्न

१. नीचे कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से कुछ ठीक हैं और कुछ ग़लत। बताओ कि कौनसी ठीक हैं और कौनसी नहीं। ग़लत बातों को ठीक भी करो।

(क) अरब के निवासियों का सर्वप्रथम आक्रमण सिन्ध पर हुआ।

(ख) यह आक्रमण ख़लीफ़ा की आज्ञा के विरुद्ध हुआ था।

(ग) मुहम्मद बिन क़ासिम ने अनेक हिन्दू मन्दिरों को नष्ट किया।

(घ) सुबुक्तगीन को जयपाल ने हरा दिया।

(ङ) महमूद ग़ज़नवी लालची था।

(च) सोमनाथ के मन्दिर के लिये आयी हुई राजपूत सेना की हार हुई।
(छ) महमूद के उत्तराधिकारियों ने महमूद की भाँति भारत पर अनेक आक्रमण करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
(ज) महमूद ने पंजाब को ग़ज़नी राज्य का एक प्रान्त बना लिया।

२. महमूद के आक्रमणों के चार उद्देश यहाँ दिये हुए हैं, पर इनमें ठीक दो ही हैं। उन्हें छाँट कर बताओ।

(क) भारत में जाकर बसने की इच्छा।
(ख) इस्लाम का प्रचार।
(ग) विशाल साम्राज्य की स्थापना।
(घ) धन का लालच।

३. महमूद के आक्रमणों का भारतवर्ष पर क्या प्रभाव पड़ा? संक्षेप में बताओ।

४. कल्पना करो कि तुम महमूद ग़ज़नवी की सेना के एक सिपाही थे। ग़ज़नी से ही चलकर सोमनाथ के मन्दिर के आक्रमण का वर्णन इस ढंग से करो जैसे तुमने ये सारी बातें अपनी आँखों से देखी हों। मार्ग के कष्टों का भी संक्षेप में वर्णन करो।

५. फिरदौसी के विषय में क्या जानते हो? इसके और महमूद ग़ज़नवी के विषय में एक कहानी प्रसिद्ध है। यदि तुम्हें यह मालूम हो तो बताओ।

अध्याय १६

राजपूती राज्य का अन्त और मुसलमानी शासन का आरम्भ

महमूद गजनवी की मृत्यु के वाद वारहवीं शताब्दी के अन्त तक मुसलमानों का कोई आक्रमण नहीं हुआ। इन डेढ़ सौ वर्षों में गजनी के निर्वल राज्य का अधिकार भारत के पश्चिमी भाग पर रहा। शेष भारत में राजपूतो का जोर था। अगर तुम १२ वे अध्याय को फिर से पढ़ो तो तुम्हे ज्ञात होगा कि राजपूतों के भिन्न-भिन्न वंशों ने उत्तरी भारत में कहाँ-कहाँ अपने राज्य स्थापित किये थे। अव यदि तुम उस काल के भारतवर्ष के नकशे को देखो तो तुम्हे मालूम होगा कि **दिल्ली** में **तोमर** और **अजमेर** मे **चौहान** वंशीय राजपूतों का राज्य था। आगरे से लेकर कदाचित् विहार की सीमा तक **कन्नौज** के **गहरवारों** का राज्य था। इससे आगे **वंगाल** में **सेन** वंश के शासक राज्य करते थे। **चन्देल** राजपूत **वुन्देलखंड** में थे। **परमारों** का राज्य **मालवा** में था। **गुजरात** मे **सोलंकी** **चालुक्य** वंश के राजपूतों की तूती वोल रही थी। यह तो हुआ भारत का संक्षिप्त वर्णन। उधर ग़ज़नी की क्या दशा थी ? ग़ज़नवी वंश का ह्रास हो रहा था। ग़जनी की तरह अफग़ानिस्तान में **ग़ोर** नामक एक स्थान था। यह पहले ग़ज़नी राज्य के ही अधीन था;

भारतवर्ष
मोहम्मद गोरी के आक्रमण के पूर्व
माप दड
२० ४० ८० १६० २४० ३२०
काश्मीर
पेशावर
काबुल
गजनी
सतलज
दिल्ली
चौहान
अजमेर
कन्नौज
पंवार
कालिंजर
काशी
पाल
बघेल
धारा
सेन
होयसल
पांड्य
मदुरा

महाराजा पृथ्वीराज

पर समय के परिवर्तन के कारण जब ग़ज़नी की शक्ति क्षीण हो चली तो ग़ोर-निवासियों ने विद्रोह किया और बारहवीं शताब्दी के अन्तिम काल में ग़ोर के सुल्तान ने ग़ज़नी को परास्त किया और अपने भतीजे **शहाबुद्दीन** को वहाँ का शासक नियुक्त कर दिया। यह इतिहास में **मुहम्मद ग़ोरी** के नाम से विख्यात है। ग़ोरी ने भी महमूद ग़ज़नी की भाँति भारतवर्ष पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया।

मुहम्मद ग़ोरी के आक्रमण—उसने पहले तो भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग पर आक्रमण किया और भारत में ग़ज़नी की रही-सही शक्ति को पूर्णतया नष्ट कर दिया। इस प्रकार **पंजाब** और **सिन्ध** पर उसका अधिकार हो गया। अब उसका ध्यान राजपूतों की ओर गया। पहले उसने **गुजरात** पर चढ़ाई की, पर वहाँ वह हार गया। अब **दिल्ली, अजमेर** और **कन्नौज** की बारी आई।

दिल्ली और कन्नौज—दिल्ली और अजमेर में चौहान राजा **राय पिथौरा** (पृथ्वीराज) शासन करता था और कन्नौज में गहरवार-वंशीय राजा **जयचन्द** राज्य कर रहा था। तुमने यह पढ़ लिया है कि जयचन्द की लड़की **संयोगिता** के स्वयंवर के मामले में इन दोनों में कैसी शत्रुता हो गई थी। हर एक दूसरे के नाश की इच्छा करता था।

शहाबुद्दीन ग़ोरी ने सन् ११९१ ई० में पृथ्वीराज पर चढ़ाई की। **थानेश्वर** के निकट **तराईं** के मैदान में दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। राजपूत लोग बड़ी वीरता से लड़े। इस युद्ध में मुसल-

मानो की हार हुई। शहाबुद्दीन के एक नौकर ने इस युद्ध में बड़ी स्वामि-भक्ति दिखाई। जिस समय मुहम्मद ग़ोरी घायल हो कर अचेत अवस्था में गिरना ही चाहता था, उस समय वह उसे मैदान से भगाकर ले गया।

मुहम्मद ग़ोरी को अपनी इस हार पर बड़ा दुःख हुआ, परंतु उसने हिम्मत न हारी। अपनी राजधानी में पहुँच कर उसने अपनी सेना के सिपाहियों और अफ़सरों के मुँह पर घोड़ों के तोबड़े लटकवा दिये। इससे उन्हें बड़ी ग्लानि हुई। अगले वर्ष उसने बड़ी तैयारी के साथ फिर पृथ्वीराज पर हमला किया। लड़ाई फिर उसी मैदान में हुई। तेज़ मुसलमान घुड़सवारों के सामने पृथ्वीराज के हाथियों और पैदल सैनिकों की कुछ न चली। इस बार पृथ्वीराज की हार हुई और वह मारा गया। दिल्ली और अजमेर पर मुहम्मद ग़ोरी का अधिकार हो गया।

पृथ्वीराज की हार से सारे देश में तहलका मच गया। वह बहुत सूरमा राजा था। महोबा और गुजरात आदि के राजा उसका लोहा मानते थे। उसे परास्त करके मुहम्मद ग़ोरी ने सन् ११९४ ई० में कन्नौज के राजा जयचन्द पर चढ़ाई की। जयचन्द भी जी तोड़ कर लड़ा और उसने ग़ोरी के छक्के छुड़ा दिये। पर विजय उसके भाग्य में न थी। शत्रु की सेना का एक तीर जयचन्द की आँख में आकर लगा, जिसके लगते ही वह गिर पड़ा और सेना तितर-बितर हो गई। गोरी की विजय हुई और उसकी धाक बनारस तक बैठ गई।

मुहम्मद ग़ोरी की वापसी और शेष भारत की जीत—

ग़ोरी केवल लूट-मार ही के लिये भारत में न आया था, वरन् यहाँ दृढ़ साम्राज्य स्थापित करने की उसकी हार्दिक अभिलाषा थी। जब पञ्जाब से लेकर विहार तक उसने अधिकांश उत्तरी भारत जीत कर अपने अधिकार में कर लिया, तब वह अपने देश को लौट गया और अपने सेनापति **कुतुबुद्दीन ऐबक** पर शासन का भार छोड़ गया। दिल्ली पर अधिकार करके ऐबक आगे बढ़ा। पूर्व में इधर **बनारस** तक सारा देश और **ग्वालियर** तथा **अन्हिलवाड़ा** (गुजरात) आदि को जीत कर उसने अपने अधिकार में कर लिया। उसके सरदार **इख्त्यारुद्दीन मुहम्मद खिलजी** ने सन् ११९७ ई० में पहले **अवध और विहार** को जीता। विहार में बड़ा भीषण रक्त-पात हुआ और जो कुछ बौद्ध सभ्यता **नालन्द** के पुस्तकालय और मठों में शेष थी, वह नष्ट कर दी गयी। इसके बाद सेन राजाओं से लड़कर उसने **बंगाल** को सरलतापूर्वक अपने अधिकार में कर लिया (११९९ ई०) और उनकी राजधानी **नदिया** को अपने अधीन कर लिया। सन् १२०३ ई० में **बुन्देलखंड** के चन्देल राजा ने अपना देश कुतुबुद्दीन को समर्पित कर दिया।

ग़ोरी की मृत्यु—सन् १२०५ ई० में पञ्जाब में **खोखर** जाति के लोगों ने विद्रोह किया। मुहम्मद ग़ोरी विद्रोहियों को दंड देने के उद्देश्य से भारत में आया। खोखर बुरी तरह मारे गये, किन्तु जब ग़ोरी वापस जा रहा था, तब मार्ग में एक रात को उसके डेरे में खोखरों की सहायता से एक युवक घुस गया, जिसने उसे मार डाला (१२०६ ई०)।

अभ्यास

नक़्शा

मुहम्मद ग़ोरी के आक्रमण के समय भारतवर्ष में जो भिन्न-भिन्न राज्य थे, उन्हें एक नक़्शे में दिखाओ। इनमें से जो-जो राज्य जिस-जिस सन् में मुहम्मद ग़ोरी या उसके सरदारों द्वारा उसकी मृत्यु (१२०६ ई०) तक विजय कर लिये गये थे, उन-उन पर विशेष प्रकार का रंग कर दो; और वह सन् भी लिख दो, जब वह जीत कर मुसलमानी राज्य में मिलाया गया।

इसमें निम्नलिखित स्थान भी दिखाओ—

दिल्ली, कन्नौज, तराईं, बनारस, ग्वालियर, अन्हिलवाड़ा, नदिया।

याद करो—

कुतुबुद्दीन ऐबक—आरम्भ में मुहम्मद गोरी का गुलाम था। इसके गुणों पर मुग्ध होकर मुहम्मद इस पर विशेष कृपा-दृष्टि रखने लगा। धीरे धीरे इसने आश्चर्यजनक उन्नति की। जब मुहम्मद ग़ोरी ने भारत पर आक्रमण किया था तब यह भी उसके साथ आया था और इसने अपनी योग्यता और वीरता का परिचय दिया था। इसकी इस स्वामि-भक्ति और सच्ची सेवा से प्रसन्न होकर सुल्तान इसे अपने जीते हुए प्रांतों पर शासन करने के लिये छोड़ गया था।

तिथियाँ

सन् ११९२ ई०—तराईं की दूसरी लड़ाई; पृथ्वीराज की हार।

सन् ११९४ ई०—कन्नौज के राजा जयचन्द का पराजय।

सन् १२०६ ई०—मुहम्मद ग़ोरी की मृत्यु।

प्रश्न

१. मुहम्मद ग़ोरी और महमूद ग़ज़नवी के आक्रमणों के उद्देशों में क्या अन्तर था?

२. तराई की पहली लड़ाई का क्या परिणाम हुआ ? इसका मुहम्मद ग़ोरी पर क्या प्रभाव पड़ा ?
३. तराई की दूसरी लड़ाई का भारत के इतिहास में क्या महत्त्व है ?
४. क्या तुम बतला सकते हो कि तराई का मैदान लड़ाई के विचार से क्यों इतने अच्छे मौके का था ? क्या और भी कोई लड़ाई इससे पहले इस मैदान में हो चुकी थी ?
५. मुहम्मद ग़ोरी जब अपने देश को लौटा, तब यहाँ के शासन का भार किसे सौंप गया था ? उसने किस प्रकार अन्य प्रान्तों को जीत कर मुसलमानी राज्य में मिलाया ? इसका संक्षेप में वर्णन करो।
६. मुहम्मद ग़ोरी की मृत्यु कैसे हुई ?

अध्याय १७

दिल्ली की सल्तनत—गुलाम वंश
(१२०६—९० ई०)

मुसलमानी शासन और दिल्ली—मुहम्मद गोरी का कोई लड़का नहीं था जो उसके पीछे बादशाह होता और उसके कर्मचारियों या सूबेदारों को अपने अधीन रखता। प्रत्येक कर्मचारी अपने-अपने प्रान्त का शासक बन बैठा, किन्तु कुतुबुद्दीन उन सब में सब से अधिक चतुर था। उसका शासन दिल्ली और उसके आस-पास के देश पर था। दिल्ली ऐसी जगह स्थित है कि वहाँ से एक ही शासक समस्त उत्तरी भारत पर बड़ी सुगमता से अपना प्रभाव और दबदबा बनाये रख सकता है; उत्तर-पश्चिम की ओर से होनेवाले आक्रमणो की सूचना उसे शीघ्र मिल सकती है और वह आसानी से उनका सामना करने की तैयारी कर सकता है। उधर गंगा-यमुना का उपजाऊ मैदान हर समय उसकी आज्ञा में रह सकता है, क्योंकि यहाँ न कोई पर्वत-श्रेणी है और न कोई दुर्गम जंगल या नदी। दक्षिण की ओर राजपूताने के राजे-महाराजे बिना किसी कठिनाई के वश मे किये जा सकते हैं। कुतुबुद्दीन ने यह सब देख कर ही दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। मुसलमानी काल मे दिल्ली मे ही अधिकतर शासन का केन्द्र रहा। कुतुबुद्दीन दिल्ली के बादशाहो में सबसे पहला था और उसक उत्तराधिकारी सन् १२९० ई० तक शासन करते रहे।

गुलाम वंश और कुतुबुद्दीन ऐबक—इस वंश के बादशाह

कुतुब मीनार

भारतवर्ष
अल्तमश की सल्तनत
माप दंड
८० ४० ० ८० १६० २४० ३२०
पानीपत
दिल्ली
आगरा
अन्हलवाड़
नर्मदा
गोंडवाना
यादव
काकतिया
होयसाल
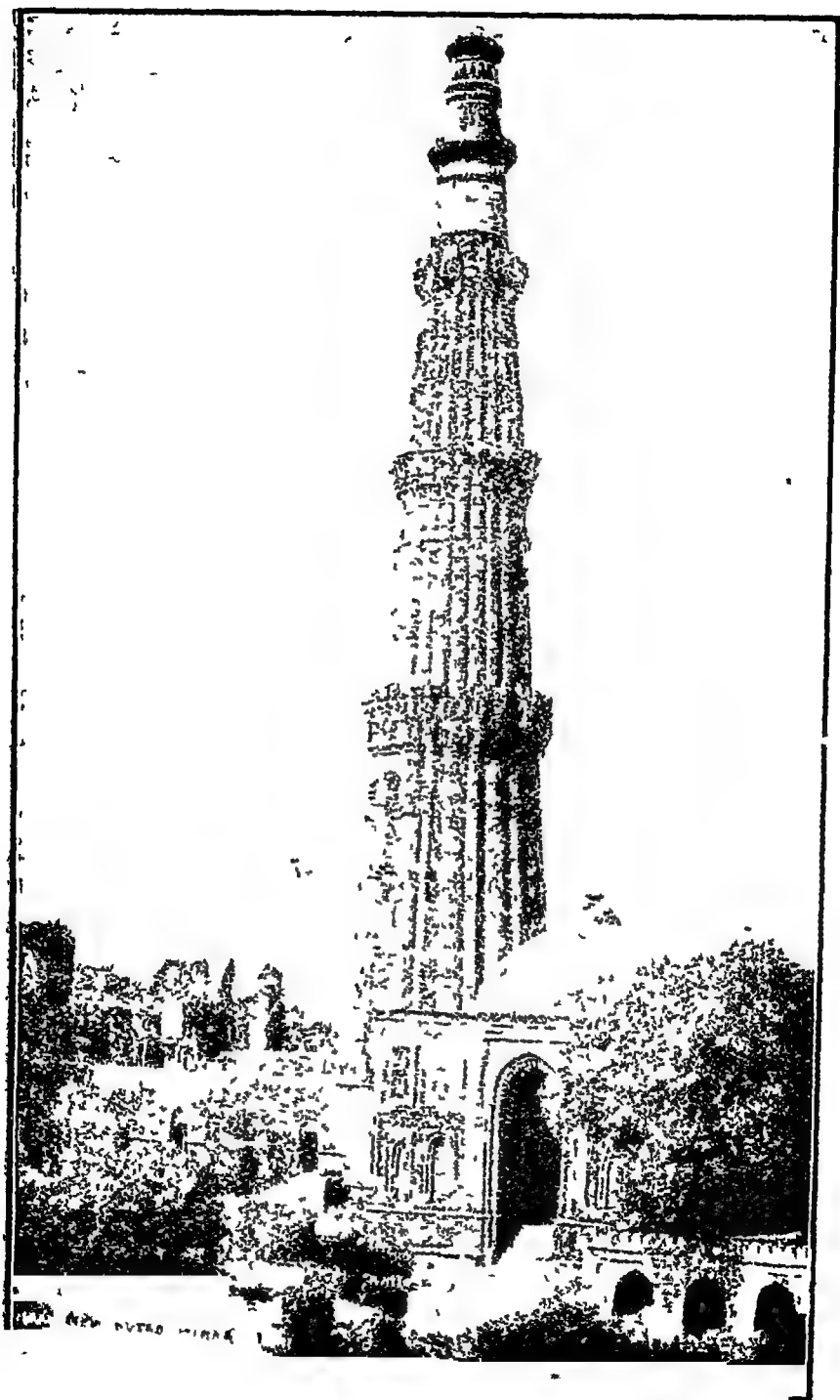
गुलाम बादशाहों के नाम से प्रसिद्ध हैं, क्योंकि ऐबक मुहम्मद गोरी का गुलाम था। ये लोग तुर्की नस्ल के थे। चूँकि ये लोग अपने को "सुल्तान"* कहते थे; इसी लिये दिल्ली-साम्राज्य जिसकी स्थापना सन् १२०६ ई० में हुई "दिल्ली सल्तनत" कहलाता है। इस सुल्तान का नाम दिल्ली की सुप्रसिद्ध कुतुब की लाट के साथ आज तक प्रसिद्ध है। इस मीनार को उसने ख्वाजा कुतुबुद्दीन की यादगार में बनवाना प्रारम्भ किया था; और इसके पास ही प्रसिद्ध मस्जिद भी बनवाई जिसमें हिन्दुओं के मन्दिरों के पत्थर, जिन्हें कुतुबुद्दीन ने तुड़वा दिया था, लगे हुए हैं। कुतुबुद्दीन अपनी उदारता के लिये विख्यात है। यद्यपि उसका व्यवहार हिन्दुओं के साथ प्रशंसनीय न था, तो भी सब बातों का विचार करते हुए प्रजा उससे प्रसन्न थी। सन् १२१० ई० में लाहौर में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

आराम शाह—कुतुबुद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसका लड़का आराम शाह गद्दी पर बैठा। यह अयोग्य और निर्बल था। इसने केवल एक वर्ष तक राज्य किया। कुतुबुद्दीन के दामाद इल्तुतमिश ने उसे गद्दी से उतार दिया और स्वयं सुल्तान बन बैठा।

इल्तुतमिश—इल्तुतमिश बड़ा योग्य तथा पराक्रमी शासक था। उसे कुतुबुद्दीन ने मोल लिया था। कहते हैं कि जब वह छोटा था तो एक दिन उसे पैसे देकर बाज़ार से अंगूर लाने के लिये भेजा गया। रास्ते में पैसे कहीं गिर पड़े। वह रोने लगा। इतने में

---

* सुल्तान अरबी में सम्राट् को कहते हैं।

एक फकीर उसके पास आया और उसे पैसे देकर बोला—"जब तुम्हारे पास धन और राज्य हो जाय तब फकीरों और साधुओं का आदर करना मत भूल जाना।" इल्तुतमिश ने सुल्तान होने पर इस प्रतिज्ञा को आजन्म निभाया। उसे अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बंगाल, सिंध और पंजाब के अन्य मुसलमान सरदारों से युद्ध करने में उसका बहुत सा समय बीता। धीरे-धीरे इन सब को उसने अपने वश मे कर लिया। राजपूताने के रणथम्भोर का क़िला लेने में उसे तीन वर्ष लगे थे। उसने कुतुबु मीनार को पूरा कराया। उन दिनों एशिया मे मंगोलों ने बड़ा उपद्रव मचा रखा था। इसके सरदार चंगेज़ खाँ ने भारत पर भी अक्रमण करने का विचार किया। सौभाग्यवश देश की कठिन गर्मी से घबड़ाकर चंगेज़ खाँ सिंध नदी तक आ कर ही लौट गया। इस प्रकार देश पर एक घोर विपत्ति आने से बची। सन् १२३६ ई० में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई।

रज़िया बेगम—इल्तुतमिश के पुत्रों मे से कोई भी राज्य-सञ्चालन के योग्य न था। उसका लड़का कुतुद्दीन कुछ दिनों के लिये गद्दी पर बैठा, परन्तु वह बिल्कुल अयोग्य निकला। उसने राजकोष का द्रव्य अन्धाधुन्ध लुटाया। वह हाथी पर बैठ कर दिल्ली के बाजारों में सोने के सिक्कों को बिखेर दिया करता था। यह दशा देखकर राजगद्दी उसकी बहन रज़िया को दी गई। रज़िया मे वे सब गुण वर्तमान थे जिनका उसके भाइयों मे अभाव था। अपने पिता के शासन-काल में भी वह कई बार राज-काज सँभाल चुकी थी। रज़िया मर्दाने कपड़े पहन कर खुले मुँह

दरबार करती थी। वह हाथी पर चढ़कर स्वयं सेना का संचालन किया करती थी। रज़िया की एक हबशी सरदार पर विशेष कृपा थी। इस कारण उसके सरदार और दरबारी लोग उससे असन्तुष्ट हो गये। उन्होंने विद्रोह खड़ा कर दिया और इसी विद्रोह में रज़िया की जान गई (सन् १२४० ई०)।

रज़िया बेगम

नासिरुद्दीन—रज़िया की मृत्यु के पश्चात् बहराम और मासूद ने कुछ समय तक राज्य किया। अन्त में १२४६ ई० में **नासिरुद्दीन** को सुल्तान बनाया गया। नासिरुद्दीन नाम मात्र का सुल्तान था। वह बड़े सादे ढंग से जीवन व्यतीत करता था और किताबें लिख-लिख कर अपनी जीविका चलाता था। राज्य का सारा काम उसका एक योग्य सरदार किया करता था जिसका नाम **गयासुद्दीन बलबन** था।

बलबन और उसका शासन काल—नासिरुद्दीन का देहान्त हो जाने पर बलबन गद्दी पर बैठा। अभी तक भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर मंगोलों के आक्रमण हो रहे थे। उनको रोकने के लिये उसने एक बड़ी सेना तैयार कराई और अपने बेटों को वहाँ रहने के लिये नियुक्त कर दिया। इस उचित प्रबंध से मंगोलों का ज़ोर कम हो गया।

मेवातियों ने, जो दिल्ली के दक्षिण में बसे थे, सिर उठाया। जिस बेरहमी से सुल्तान ने उनको दबाया, उसका वर्णन पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर **बंगाल** में हाकिम **तुग़रिल बेग** ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया। तुग़रिल यह समझ बैठा था कि सुल्तान अब वृद्ध हो गया है और मंगोलों के विनाश में तत्पर है। बंगाल जैसे शून्य प्रदेश मे कैसे आ सकता है! मगर बलबन उस बुढ़ापे में भी पर्याप्त शक्ति रखता था। वह स्वयं फौज लेकर बंगाल की ओर चला। बरसात का मौसिम था और नदियों में बाढ़ आ रही थी; मगर यह बराबर बढ़ा चला जा रहा था। सुल्तान के कूच का वर्णन सुनकर तुग़रिल बेग अपनी राजधानी **लखनौती** को छोड़ कर भाग गया। सुल्तान ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ कर मरवा डाला। तुग़रिल के साथियों को इतना कठोर दण्ड दिया गया कि सारा बंगाल देश काँप उठा। अपने बेटे **बुग़राखाँ** को बंगाल का शासक नियुक्त करके सुल्तान दिल्ली को लौटा।

बलबन का दरबार और उसका चरित्र—बलबन बड़ा निडर और निर्दय शासक था। उसका दरबार बड़ी शान शौकत का था। मंगोलों के आक्रमणों से तंग आकर एशिया के कुछ

देशों के विद्वानों और अमीरों ने उसके दरबार में आकर शरण ली थी। **अमीर खुसरो,** जो बड़ा प्रसिद्ध कवि था, इसके दरबार में रहा करता था। बलबन के दरबार में कोई बिना पूरी पोशाक पहने न जा सकता था। वह स्वयं अपने घरेलू नौकरों के सामने भी पूरी पोशाक में निकलता था। बलबन ने ४० वर्ष राज्य किया। वह अपने राज्य-काल में न कभी स्वयं हँसा और न किसी दूसरे को ही उसके सामने हँसी-दिल्लगी करने की हिम्मत होती थी। सुल्तान होने पर उसने शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल छोड़ दिया था। बलबन का शासन कठोर अवश्य था, परन्तु उन दिनों ऐसे ही शासन की आवश्यकता थी।

गुलाम वंश का अन्त—बुढ़ापे में उसके प्रिय पुत्र मुहम्मद की मृत्यु हो गई। उस के शोक में बलबन भी परलोकगामी हुआ। बलबन के मरने पर कुछ काल तक अशान्ति रही। उसका पोता **क़ैक़ुबाद** तख्त पर बैठा, परन्तु वह बड़ा विलासप्रिय था। कुछ दिनों बाद वह मार डाला गया।

इस प्रकार गुलाम वंश का अन्त हुआ।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में इल्तुतमिश की मृत्यु के समय का गुलाम साम्राज्य का विस्तार दिखाओ।

रणथम्भोर, दिल्ली और लखनौती को भी यथास्थान दिखाओ।

याद करो—

कुतुब मीनार—कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे बनवाना प्रारम्भ किया था, परन्तु उसके पूरे होने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। बाद में

इल्तुतमिश ने इसे पूरा कराया। इसकी ऊँचाई २५० फुट से भी अधिक है। यह संसार की सबसे ऊँची मीनारों में से है।

मंगोल—हूणों की तरह मध्य एशिया की असभ्य और लड़ाकू जाति थी। एशिया भर के लोग इनके डर से काँपते थे। इनका सरदार चंगेज़ खाँ था। इनकी आँखें छोटी, मुँह बड़ा, नाक चौड़ी और क़द छोटा होता था। ये अपने घोड़ों और ऊँटों पर चढ़े हुए एक जगह से दूसरी जगह मार-काट मचाते, लूट मार करते और आग लगाते फिरा करते थे।

चित्र-चर्चा

इस अध्याय में कुतुब मीनार का चित्र देखो। इसके पास ही पुरानी हिन्दू इमारतों के खँडहर हैं। इसकी ऊँचाई का अनुमान तुम बिना देखकर ही कर सकते हो। इसकी एक सबसे ऊपर की मंज़िल गिर पड़ी है और पास ही में रक्खी हुई है। कभी दिल्ली जाकर इसे देखना।

दूसरा चित्र रज़िया बेगम का है। वह घोड़े पर सवार है। घोड़ा सरपट दौड़ रहा है और रज़िया अच्छे सवार की भाँति जमी हुई है। उसका पहनावा देखो। मुँह खुला हुआ है और सिर पर ताज़ है। रज़िया अपनी सुन्दरता के लिये भी प्रसिद्ध है।

प्रश्न

१. कुतुबुद्दीन ऐबक ने किन कारणों से दिल्ली को अपनी राजधानी बनाना उचित समझा था? प्राचीन काल की एक कहावत है—"दिल्ली का सुल्तान सारे भारतवर्ष का स्वामी है"—यह कहाँ तक ठीक है? क्या आजकल भी यही बात कही जा सकती है?

२. "दिल्ली सल्तनत" से क्या समझते हो?

३. इल्तुतमिश के प्रारम्भिक जीवन के विषय में क्या जानते हो? संक्षेप में इसके शासन-काल का वर्णन करो।

४. रज़िया के पतन का क्या कारण था?

५. नासिरुद्दीन या बलबन में से तुम किसे अच्छा समझते हो? क्यों?

अध्याय १८

ख़िल्जी वंश

(१२९०–१३२० ई०)

जलालुद्दीन-ख़िल्जी—कैकुबाद के मरने पर जलालुद्दीन ख़िल्जी नामक एक सेनापति दिल्ली के तख़्त पर बैठा। ख़िल्जी लोग अफ़गानिस्तान के **ख़िल्ज** नामक गाँव के रहनेवाले थे। वे तुर्क न थे, वरन् **अफ़गान** थे। जिस समय जलालुद्दीन ख़िल्जी गद्दी पर बैठा, उसकी अवस्था ७० वर्ष की थी। जलालुद्दीन बड़ा क्षमाशील और दयालु बादशाह था। उसे लोगों को दंड देना पसंद न था। कहते हैं कि उसके समान दयालु बादशाह आज तक दिल्ली की गद्दी पर नहीं बैठा। जब कभी चोरों को पकड़ कर दण्ड के लिये उसके सामने लाया जाता था तो वह उनसे भविष्य में चोरी न करने की प्रतिज्ञा कराके उन्हें छोड़ देता था।

अलाउद्दीन ख़िल्जी—सुल्तान का भतीजा **अलाउद्दीन** बड़ा वीर और साहसी था। उसका निकाह भी सुल्तान ने अपनी लड़की के साथ कर दिया था। सुल्तान उसका बहुत विश्वास करता था और राजकाज का बहुत सा भार उसे सौंप रखा था। अलाउद्दीन को इतने से संतोष न था। उसकी इच्छा थी कि मैं शीघ्र बादशाह बन जाऊँ।

उस समय के दक्षिण के हिन्दू-राज्य—इस समय तक लगभग सारा उत्तरी भारत मुसलमानों के अधिकार में आ चुका

था। केवल राजपूताने का कुछ भाग और गुजरात ही मुसलमानी राज्य के बाहर थे। परन्तु दक्षिण अब तक मुसलमानी आक्रमणों से बचा हुआ था। वहाँ अब भी कई प्रसिद्ध हिन्दू-राज्य थे। इसके पश्चिमी भाग मे **यादवों** का राज्य था जिनकी राजधानी **देवगिरि** थी। पूर्वी भाग मे **काकतीय** वंश के राजपूत राज्य करते थे। इनकी राजधानी **वारंगल** थी। एक तीसरा राज्य **होयशल वंश** का था। **द्वारसमुद्र** इनकी राजधानी थी।

दक्षिण पर मुसलमानों का पहला आक्रमण—दक्षिण बहुत धनी देश था। अलाउद्दीन का इस धन पर बहुत दिनों से दाँत था क्योकि दक्षिण के हिंदू राजाओं में पारस्परिक ईर्षा, द्वेष और मनोमालिन्य था अतएव इनपर विजय पाना सहज था। उसने चुने हुए कुछ सिपाहियों की फौज इकट्ठी कर ली और अपने चचा जलालुद्दीन से दक्षिण जाने की आज्ञा माँगी। सुल्तान ने आज्ञा दे दी। अलाउद्दीन अपनी सेना लेकर देवगिरि की ओर चला। देवगिरि के यादव राजा **रामचन्द्र देव** को उसके आक्रमण का पता न था। वह हार गया और अलाउद्दीन बहुत सा लूट का माल लेकर देवगिरि से लौटा।

जलालुद्दीन का वध—जब जलालुद्दीन ने सुना कि उसका भतीजा देवगिरि के राजा को परास्त करके आ रहा है, तो वह उसका स्वागत करने के लिये **कड़ा** (इलाहाबाद) पहुँचा, जहाँ अलाउद्दीन ठहरा हुआ था। अलाउद्दीन ने पहले से ही उसका वध करने का निश्चय कर लिया था। जब सुल्तान ने अलाउद्दीन को छाती से लगाया, तब एक दूसरे आदमी ने, जो पहले ही से इस कार्य के लिये नियत किया गया था, उसे मार डाला।

जलालुद्दीन के मारे जाने पर अलाउद्दीन शीघ्र ही दिल्ली आया। अभी कुछ लोग ऐसे बचे थे जो अलाउद्दीन के इस घृणित कार्य के कारण उससे अप्रसन्न थे और जलालुद्दीन के पुत्रों में से किसी को सुल्तान बनाना चाहते थे। इन लोगों को अपनी ओर मिलाने के लिये अलाउद्दीन ने उन्हें खूब धन बाँटा। धीरे-धीरे लोग अपने पुराने सुल्तान जलालुद्दीन को भूल गये और अलाउद्दीन दिल्ली का बादशाह हो गया (१२९६ ई०)।

शासन-प्रबन्ध—गद्दी पर बैठते ही सुल्तान ने अपने राज्य को सुदृढ़ बनाने की सोची। देश को बाहरी आक्रमणों से बचाने के लिये विशाल सेना की आवश्यकता थी। इस विचार से उसने एक बड़ी सेना तैयार की। इतनी बड़ी सेना के खर्च का प्रबन्ध करना आसान काम न था। व्यापारी लोग अपना माल मनमानी दर पर बेचते थे। सेना के रखने में बड़ा खर्च होता था। इस असुविधा से बचने के लिये अलाउद्दीन ने बाज़ार की चीज़ों के भाव नियत कर दिये और आज्ञा दी कि चीजें इसी भाव पर बेची जायँ। महँगा बेचनेवालों को बड़ा कठोर दंड दिया जाता था। कभी तो उनके शरीर से उतना ही मांस काट लिया जाता था। फल यह हुआ कि दुकानदार दंड के डर से जितना चाहिए, उससे भी अधिक माल बेचने लगे। दिल्ली के सौदागर तो अपनी ईमानदारी के लिये दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गये। उसने देश की भीतरी बातों को जानने के लिये भेदिये नियुक्त कर दिये। अमीरों की ओर से उसे सदा भय लगा रहता था। उसने आज्ञा निकाली कि अमीर लोग सामाजिक उत्सवों में एक दूसरे के यहाँ न जायँ।

शराब पीने की राज्य भर मे मना ही थी। हिन्दुओं के साथ सुल्तान का व्यवहार कठोर था।

अलाउद्दीन की विजय—मंगोलों के आक्रमण अब भी बन्द न थे। अलाउद्दीन की सेना ने उन्हे बुरी तरह हराया। फिर उसे उनको ओर से कोई भय न रहा। अलाउद्दीन ने **गुजरात, रणथम्भोर** और **मेवाड़** राज्य की राजधानी **चित्तौर** पर विजय प्राप्त की। मेवाड़ के राणा रतनसिह की रानी पद्मिनी परम सुन्दरी थी। उसके विषय में जो कथा प्रसिद्ध है, नही कहा जा सकता कि वह कहाँ तक ठीक है। मगर इसमें कोई मन्देह नहीं कि राजपूतों ने अपनी वीरता और त्याग का इस आक्रमण में अपूर्व परिचय दिया जिसके कारण उनका नाम इतिहास के पृष्ठों से मिट नही सकता। अलाउद्दीन की विशाल सेना के सामने जब उन्हे विजय की आशा न रही तो उन्होंने 'जौहर' व्रत का पालन किया और सब के सब रणभूमि मे मर कर सद्गति को प्राप्त हुए। इस प्रकार चित्तौर पर विजय प्राप्त करने के उपरांत सुल्तान दिल्ली को लौटा।

जब अलाउद्दीन उत्तरी भारत मे सर्वत्र अपना अधिकार जमा चुका, तब उसने अपने सेनापति **मलिक काफूर** को सेना लेकर दक्षिण पर विजय-प्राप्ति के लिये भेजा। वहाँ उसने पूर्ण विजय पाई। मलिक काफूर ने **रामेश्वरम्** में एक मसजिद बनवाई और वहाँ से बहुत सा धन लेकर वह दिल्ली को लौटा। अलाउद्दीन ही पहला सुल्तान था जिसने दक्षिण को विजय किया।

भारतवर्ष
अलाउद्दीन खिलजी की सल्तनत।
माप दंड
८० ४० ० ८० १६० २४० ३२०
काश्मीर
दिल्ली
आगरा
चित्तौड़
गौड़
देवगिरि
वारंगल
द्वारसमुद्र
मदुरा

अलाउद्दीन का चरित्र—अलाउद्दीन बड़ा वीर और चालाक बादशाह था। उसने अपने बल से देश को बाहरी आक्रमणों से बचाया और शान्ति स्थापित की। वह मनमानी करता था। उसने कभी किसी अमीर या सरदार से परामर्श नहीं लिया। उसकी नीति उसी के स्पष्ट शब्दों में यह थी—"मैं धर्म अधर्म कुछ नहीं समझता। मैं वही करता हूँ जो मैं अपनी सल्तनत के लिये ठीक समझता हूँ।" अलाउद्दीन पढ़ा लिखा न था; परन्तु तो भी वह सफलतापूर्वक शासन कर सका। उसकी निर्दयता और क्रूरता ने लोगों को सिर उठाने का मौक़ा न दिया।

जब अलाउद्दीन की मृत्यु (सन् १३१६ ई०) हो गई तो उसका स्थान लेने के लिये योग्य बादशाह न रहा। कुछ काल तक उसके सेनापति मलिक काफ़ूर ने शासन का काम अपने हाथ में रखा। उसने सुल्तान के छोटी अवस्थावाले एक पुत्र को गद्दी पर बैठा दिया, परन्तु सारे अधिकार अपने हाथ में रखे। उसके अत्याचारों से दुखी होकर सिपाहियों ने उसका और छोटे सुल्तान दोनों का वध कर डाला और अलाउद्दीन के दूसरे पुत्र मुबारक खाँ को तख्त पर बैठाया। यह भी बड़ा निकम्मा सुल्तान सिद्ध हुआ। किन्तु उसने एक महत्व का काम किया। उसने स्वयं देवगिरि के राजा पर चढ़ाई की और उसका राज्य छीन कर अपनी सल्तनत से मिला लिया। अन्त में उसके सरदार खुसरू ने, जिस पर उसे बड़ा भरोसा था, उसे धोखे से मार डाला और वह स्वयं तख्त का मालिक बन बैठा। खुसरू शाह के अत्याचारों से प्रजा का नाक में दम आ गया। पंजाब के सरदार गाज़ी मलिक ने इस

स्थिति से लाभ उठा कर उसका वध करा दिया और आप तख्त पर बैठा (सन् १३२० ई०)। इस प्रकार खिलजी वंश का अन्त हुआ।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में अलाउद्दीन की सल्तनत का विस्तार दिखाओ।

निम्नलिखित स्थान भी दिखाओ—

रणथम्भोर, चित्तौर, देवगिर, दिल्ली, कड़ा, रामेश्वरम्।

याद करो—

जौहर—राजपूत हार कर पीठ दिखाने की अपेक्षा रणभूमि में लडते-लडते मर जाना अच्छा समझते थे। जब कभी शत्रुओं के मुकाबले में उन्हें जीतने की आशा न रहती थी तब वे तलवार हाथ में लेकर शत्रु की सेना पर टूट पडते थे और मैदान में जान दे देते थे। इधर महलों में राजपूत स्त्रियाँ शत्रुओं के हाथ से बचने के लिये आग में जल कर भस्म हो जाती थीं। इस प्रथा को जौहर कहते थे।

मलिक काफ़ूर—यह प्रारम्भ में गुलाम था। धीरे धीरे उन्नति करता हुआ अलाउद्दीन का सेनापति हो गया। अलाउद्दीन इस पर बहुत विश्वास करता था। इसीने दक्षिण पर विजय प्राप्त करके असीम धन लाकर अलाउद्दीन के खजाने में भरा था। इसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर अलाउद्दीन ने इसे अपना मंत्री बनाया था।

तिथियाँ

सन् १२९४ ई०—अलाउद्दीन का देवगिरि पर आक्रमण।

सन् १३०२ ई०—मेवाड-विजय।

सन् १३०९-११ ई०—मलिक काफ़ूर का दक्षिण जीतना

प्रश्न

1. कल्पना करो कि तुम जलालुद्दीन के वध के समय उपस्थित थे। इस दृश्य का वर्णन इसप्रकार करो जैसे तुमने इसे अपनी आँखों से देखा हो।
२. सुल्तान होकर अलाउद्दीन ने अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिये क्या क्या किया? संक्षेप में वर्णन करो।
३. मलिक काफ़ूर की विजय का वर्णन करो।
४. अलाउद्दीन ने अपने शासन काल में जिस नीति का अवलम्बन किया, उससे उसे कहाँ तक सफलता मिली? क्या उस काल में ऐसी नीति का व्यवहार में लाना आवश्यक था?
५. अलाउद्दीन के मरने पर किस प्रकार ख़िल्जी साम्राज्य का धीरे-धीरे अन्त होना प्रारम्भ हो गया—संक्षेप में इसका वर्णन करो।

कुछ विशेष तथा मनोरंजक बातें

तुम पढ़ चुके हो कि अलाउद्दीन ने बाज़ार की चीजों के भाव नियत कर दिये थे। उस समय की कुछ चीजों के भाव नीचे दिये जाते हैं—

गेहूँ	७½	जीतल का	१ मन
जौ	४	”	१ ”
चावल	५	”	१ ”
दाल	५	”	१ ”
चीनी	१⅓	”	१ सेर
गुड़	⅓	”	१ ”
घी	१	”	२½ ”
तेल	१	”	३
नमक	५	”	२½ मन

जीतल का मूल्य आजकल के लगभग एक पैसे के बराबर होता था। उस समय का मन भी आज कल के लगभग १४ सेर के बराबर होता था।

उपर्युक्त कोई सी पाँच चीज़ों के भाव का मिलान आज कल के भाव से करो और देखो कि उन दिनों के भाव और आजकल के भाव में कितना अन्तर है?

अलाउद्दीन ने भेदिये नियुक्त किये थे जो प्रत्येक बात की खबर सुलतान के कानों तक पहुँचाते रहते थे। इन भेदियों के डर के मारे उस समय के अमीरों की जो दशा थी, उसका वर्णन एक इतिहासकार ने इस प्रकार किया है—

"अमीरों को भेदियों का इतना अधिक भय था कि अपने घरों में भी उन्हें ज़ोर से बोलने का साहस नहीं होता था और वे इशारों द्वारा एक दूसरे पर अपने भाव व्यक्त करते थे। वे रात-दिन भेदियों के डर के मारे काँपते रहते थे। बाज़ार की प्रत्येक घटना की सूचना सुल्तान को दी जाती थी।"

अलाउद्दीन ने शराब पीना बन्द करा दिया था। पहले उसने स्वयं शराब पीना छोड़ा था। इसका वर्णन एक इतिहासकार ने यों किया है—

"सुल्तान ने महल के शराब के बर्तनों को तुड़वा डाला और उन्हें दरवाज़े के बाहर फिंकवा दिया। शराब के पीपों में से शराब उँडेलवा कर गिरवा दी गई जिसके कारण ऐसा कीचड़ हो गया जैसा वर्षा ऋतु में मेंह पड़ जाने से हो जाता है। शराब पीनेवालों को दंड दिया जाता था। इतने पर भी जो लोग इस लत को न छोड़ सकते थे, उन्हें शराब पीने के लिये दिल्ली से दस-बारह कोस दूर जाना पड़ता था।"

अध्याय १९

तुग़लक़ वंश

(१३२०–१४१४ ई०)

ग़यासुद्दीन तुग़लक़—ग़ाजी मलिक ने तख्त पर बैठ कर अपना नाम **ग़यासुद्दीन तुग़लक़** रखा। देश में चारों ओर अशान्ति थी। वह सुल्तान होने से पहले पञ्जाब में बड़ी योग्यता से शासन कर चुका था। गद्दी पर बैठते ही उसने शान्ति स्थापित करने का उद्योग किया; और जो प्रान्त दिल्ली राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे, उन्हें वश में किया। उसके बेटे **जूना खाँ** ने दक्षिण के विद्रोही राजाओं को परास्त किया और सुल्तान स्वयं एक विद्रोह को दबाने के लिये बंगाल गया। जब वह विद्रोह शान्त करके लौटा, तब उसके पुत्र जूना खाँ ने बड़ी धूमधाम से उसका स्वागत किया। इस अवसर पर लकड़ी का एक महल बनाया गया था। यकायक महल गिर पड़ा और सुल्तान और उसका एक लड़का उसके नीचे दबकर मर गये। कहते हैं कि यह कार्य उसके बेटे जूना खाँ की सम्मति से हुआ था। दिल्ली क निकट **तुग़लक़ाबाद** का क़िला गयासुद्दीन ने ही बनवाया था।

मुहम्मद तुग़लक़—गयासुद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसका लड़का जूना खाँ गद्दी पर बैठा। इसका दूसरा नाम मुहम्मद था अतएव इतिहास में यह मुहम्मद बिन तुग़लक़ के नाम से प्रसिद्ध है। संक्षेप में इसे मुहम्मद तुग़लक़ कहते हैं। मुहम्मद तुग़लक़ के समान विद्वान् बादशाह अब तक दिल्ली की गद्दी पर न बैठा

था। उसे अनेक विषयों का ज्ञान था। वह साहित्य, ज्योतिष, गणित आदि विषय खूब जानता था। वैद्यक में भी उसकी योग्यता बढ़ी-चढ़ी थी। वह बहुत वीर और उदार था और अपने धर्म का बड़ा पक्का था। अपनी प्रजा के हित के लिये वह बड़ी-बड़ी दूर की सोचता था; परन्तु वह अपने आगे किसी की मानता न था और चाहता था कि उसकी आज्ञाओं का पालन अक्षरशः किया जाय। यही कारण था कि वह अपने कार्यों में विफल रहा।

राजधानी का बदलना—मुहम्मद तुग़लक का साम्राज्य बहुत लंबा-चौड़ा था। उसके राज्य की सीमा उत्तर में पंजाब तक और पूर्व में बंगाल तक फैली हुई थी। दक्षिण भी उसके राज्य में सम्मिलित था। उसने सोचा कि राजधानी दिल्ली उसके राज्य के बीचोबीच स्थित नहीं है। वहाँ से दक्षिण के दूर-प्रदेशों का प्रबन्ध भलीभाँति नहीं हो सकता और मगोलों के आक्रमण भी दिल्ली पर सरलता से हो सकते है। इस कारण उसने दिल्ली से अपनी राजधानी दौलताबाद (देवगिरि) को ले जाना उचित समझा। यह न सोचा कि दिल्ली में रहने पर उत्तर के हिन्दू राजे-महाराजे अधीन रह सकते हैं और पश्चिम के आक्रमण आसानी से रोके जा सकते हैं। सब दिल्ली निवासियों को दौलताबाद को कूच करने की आज्ञा हो गई। मार्ग में यात्रियों को सब प्रकार की सुविधा कर दी गई थी, परन्तु तो भी ७०० मील की लम्बी यात्रा मे अनेक यात्रियों के प्राण निकल गये। कुछ दिन दौलताबाद रह कर उसने फिर सब लोगो को दिल्ली लौट चलने की आज्ञा दी। परिणाम यह हुआ कि दौलता-

बाद न बस सका और दिल्ली उजड़ गई। मुहम्मद तुग़लक़ का विचार उत्तम था; परन्तु उसे चाहिए था कि सब लोगों को वहाँ न ले जाता, केवल सरकारी दफ्तरों को ही ले जाता।

मंगोलों को घूस—मुहम्मद तुग़लक़ के शासन-काल में मंगोलों ने फिर पञ्जाब पर आक्रमण किया। मुहम्मद तुग़लक़ ने उनका सामना न किया, और उन्हें बहुत सा धन दे कर लौटा दिया। विजय के पहले मुहम्मद तुग़लक़ का राज्य भारत में ही काफ़ी था। उसे इतने से संतोष न हुआ। उसने फारस पर विजय प्राप्त करने के लिये चार लाख सेना एकत्र की। इतनी बड़ी सेना का खर्च किस प्रकार चलाया जा सकता था? अतएव सुल्तान को अपना विचार बदलना पड़ा। सेना बर्खास्त कर दी गई। हिमालय की तराई के कुछ प्रदेशों को जीतने के लिये भी सेना भेजी गई जिसमें बहुत सा धन ख़र्च हो गया।

ताँबे का सिक्का—उपर्युक्त योजनाओं से सरकारी ख़ज़ाना ख़ाली हो गया। इस कमी को पूरा करने के लिये सुल्तान ने चाँदी के सिक्कों की जगह ताँबे के सिक्के चलाये और आज्ञा दी कि ये सिक्के चाँदी के सिक्कों के समान समझे जायँ। परिणाम यह हुआ कि घर-घर जाली सिक्के बनने लगे। सुल्तान ने बिगड़ कर हुक्म दिया कि लोग सरकारी ख़ज़ाने से नये सिक्कों के बदले मे सोने-चाँदी के सिक्के ले जायँ। इससे राज-कोष को बड़ी हानि हुई।

भारी कर—सुल्तान का सिक्कों के परिवर्त्तन से भारी आर्थिक हानि सहनी पड़ी। उसने अपनी दशा सँभालने के

लिये प्रजा पर कर बढ़ा दिया। लोग यह कर अदा न कर सके। कुछ लोग जंगलों मे भाग गये। वहाँ उनके साथ बड़ा कठोर व्यवहार किया गया। इसी बीच मे वर्षा न होने से अकाल पड़ गया। प्रजा दुःखी हो गई। सुल्तान ने इस आपत्ति के समय लोगों की भरसक सहायता की। लोगो को मुफ्त भोजन दिया गया और तकावी बाँटी गई।

इब्न बतूता—मुहम्मद तुग़लक़ के शासन-काल में इब्न बतूता नामक एक यात्री अफ्रीका से आया था। वह लगभग आठ वर्ष यहाँ रहा। उसने लिखा है कि बादशाह दानी है; परन्तु जिस पर क्रोध करता है, उसको क़त्ल करने से भी नहीं हिचकता। वह अपने धर्म का पक्का है; परन्तु पक्षपात उसे बुरा लगता है। वह न्याय करते समय किसी के साथ रिआयत नहीं करता। हिन्दुओं में सती की प्रथा है।

मुहम्मद तुग़लक़ का अंतिम काल और साम्राज्य की अवनति—मुहम्मद तुग़लक की विफलताओं के कारण उसकी प्रजा मे असंतोष फैल गया। उसके जीवन-काल मे ही जगह-जगह विद्रोह की आग भड़क उठी थी। धीरे-धीरे उसका बृहत् साम्राज्य टुकड़े-टुकड़े हो कर छिन्न-भिन्न होने लगा। बंगाल स्वतंत्र हो गया और दक्षिण में दो शक्तिशाली राज्यो की स्थापना हुई जिनका वर्णन आगे किया जायगा। सुल्तान के जीवन के अंतिम ११ वर्ष इन्हीं विद्रोहो को शान्त करने के लिये दौड़-धूप में व्यतीत हुए। अन्त में सन् १३५१ ई० मे यह बुद्धिमान परन्तु विफल सुल्तान परलोक सिधारा।

फ़ीरोज़ तुग़लक़—मुहम्मद तुग़लक़ की मृत्यु के बाद उसका चचेरा भाई **फ़ीरोज़ तुग़लक़** सुल्तान हुआ। पहले तो वह गद्दी पर बैठाना ही न चाहता था; परन्तु अपने सरदारों के कहने से उसने गद्दी पर बैठना स्वीकार कर लिया।

फ़ीरोज़ तुग़लक़ का चरित्र—फ़ीरोज़ अपने धर्म का बड़ा पाबन्द था। मुल्लाओं और फ़क़ीरों का बड़ा आदर करता था। वह इतना दयालु और उदार था कि किसानों की तरफ़ मुहम्मद तुग़लक़ के समय का जो तक़ावी का रुपया था, वह उसने एकदम माफ़ कर दिया। उसे लड़ाई लड़ने का शौक़ न था, उसके राज्य में बहुत दिनों तक शान्ति रही, परन्तु हिन्दुओं तथा शिया मुसलमानों के साथ उसका व्यवहार प्रशंसनीय न था। उसने ब्राह्मणों पर जज़िया कर लगाया।

शासन-सुधार—फ़ीरोज़ तुग़लक़ अपने शासन-सुधारों के लिये प्रसिद्ध है। उसके शासन-काल में कृषि और व्यापार की उन्नति हुई। आबपाशी के लिये नहरें खोदी गईं। दिल्ली में यमुना की नहर अब तक प्रसिद्ध है। बड़े-बड़े तालाब और कूएँ खुदवाये गये। प्रजा के लाभ के लिये अनेक विद्यालय, पुल, सराँय और शफ़ाखाने बनवाये गये। फ़ीरोज़ को बाग़ लगवाने का बड़ा शौक था। उसने प्रजा पर कर घटा कर कम कर दिया।

फ़ीरोज़ की मृत्यु और देश में अशान्ति—फ़ीरोज़ की मृत्यु हो जाने पर देश में फिर अशान्ति फैल गई। केन्द्रीय सत्ता की शक्ति बिल्कुल नष्ट हो गई। शाही घराने के कई हक़दार तख्त पर बैठने के लिये शतरंज की मुहरों की तरह परस्पर लड़ने

लगे, जिसका परिणाम यह हुआ कि फ़ीरोज़ के समय के कई सूबे स्वतंत्र हो गये।

तैमूर का हमला—ऐसी ही अशान्ति के समय में तैमूर ने भारत पर आक्रमण करने का अच्छा अवसर जाना। तैमूर ने भी चंगेज की भाँति अनेक देशों को जीत कर अपने अधीन किया था। सन् १३९८ ई० में वह अपना दल-बल लेकर दिल्ली के निकट आ पहुँचा। उसका एशिया मे बड़ा लम्बा-चौड़ा राज्य था। वह भारतवर्ष मे साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। थी। जब वह भारत मे आया, तब उसके यहाँ एक लाख क़ैदी थे। अपने सरदारों की सलाह से उसने उन सबको क़त्ल करा दिया। उस समय महमूद तुग़लक़ दिल्ली में हुकूमत करता था। उसने एक बड़ी भारी सेना लेकर तैमूर का सामना किया, पर उसकी हार हुई। अगले दिन तैमूर के सिपाहियों ने दिल्ली मे प्रवेश किया। उन्होंने तीन दिन तक दिल्ली को लूटा और वहाँ के निवासियों को तबाह कर दिया। सहस्त्रों स्त्री-पुरुषो की हत्या की गई। दिल्ली से चल कर तैमूर मेरठ पहुँचा। मेरठ से हरद्वार और हरद्वार को लूट कर पहाड़ों की तलहटी में होता हुआ जम्मू पहुँचा; और फिर वहाँ से भटिंडा होता हुआ लूटता-खसोटता अपने देश को चला गया। तैमूर के आक्रमण से लोग इतने डर गये थे कि सके चले जाने के वर्षों बाद तक उसके नाम से उन्हें भय लगता था।

तुग़लक़ वंश का अन्त—फ़ीरोज तुगलक की मृत्यु के बाद ही दिल्ली साम्राज्य क्षीण होना प्रारम्भ हो गया था। तैमूर के

अमीर तैमूर

भारतवर्ष
तैमूर के आक्रमण के बाद
----तैमूर के आक्रमण का मार्ग
माप दंड
दिल्ली
मेरठ
शर्की सल्तनत
मालवा
बंगाल
गौड़
नर्मदा
गोंडवाना
बहमनी
सल्तनत
बीदर
गुलबर्गा
तेलंगाना
विजय नगर

आक्रमण ने उसकी दशा और भी बुरी कर दी। देश में महामारी, दुष्काल और अराजकता फैल गई। देश कई छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। तुग़लक़ वंश के अन्तिम बादशाह ने सन् १४१४ ई० तक राज्य किया। इसके बाद सैय्यद खिज्र खाँ नामक एक सरदार ने दिल्ली पर अपना अधिकार जमा लिया और सैय्यद वंश की नींव डाली।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में निम्नलिखित दिखाओ—

(१) मुहम्मद तुग़लक़ के समय में तुग़लक़ सल्तनत का विस्तार।
(२) दिल्ली, मेरठ, देवगिरि, हरद्वार और भटिंडा।
(३) तैमूर लंग के आक्रमण का मार्ग।

याद करो—

जज़िया—इस्लाम के अनुसार जो लोग मुसलमान थे, वे तो थे ही; जो इस्लाम को न मानते थे, उनसे एक विशेष कर वसूल किया जाता था जिसे 'जज़िया' कहते थे। कई मुसलमान शासकों ने यह कर अपनी हिन्दू प्रजा से वसूल किया था। यदि कोई हिन्दू मुसलमान हो जाता था तो उसे इस कर से मुक्त कर दिया जाता था।

इब्न बतूता—सन् १३३३ ई० में भारत में आया था और कई वर्षों तक यहाँ रहा था। यह मरक्को का निवासी था। मुहम्मद तुग़लक़ ने उसे दिल्ली में क़ाज़ी के पद पर नियुक्त किया था। सुल्तान ने उसे चीनी सम्राट् के पास राजदूत बनाकर भी भेजा था। अन्य यात्रियों की भाँति उसने भी मुहम्मद तुग़लक़ के शासन काल का वर्णन लिखा है।

तिथियाँ

सन् १३२६—२७ ई० मुहम्मद तुग़लक़ ने राजधानी बदली।

सन् १३३३ ई० इब्न बतूता भारत में आया।

सन् १३९८ ई० तैमूर का आक्रमण।

चित्र-चर्चा—इस अध्याय में तैमूर अपने दरबार में दिखाया गया है। वह गद्दी पर बैठा है। उसके पहनावे और हथियारों को ध्यानपूर्वक देखो। दरबार में एक कर्मचारी तैमूर के आगे कैसे शान्त भाव से खड़ा है।

प्रश्न

१. मुहम्मद तुग़लक़ की विद्वत्ता के विषय में क्या जानते हो? ऐसा विद्वान् होते हुए भी वह क्यों विफल रहा?
२. मुहम्मद तुग़लक़ ने किन बातों का विचार करके अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि को बदली? ऐसा करने में उससे कौन सी भूल हुई?
३. कल्पना करो कि तुम इब्न बतूता हो। अपने किसी मित्र को मुहम्मद तुग़लक़ के चरित्र का वर्णन करते हुए संक्षेप में एक पत्र लिखो।
४. फ़ीरोज़ तुग़लक़ ने जो सुधार किये, उनका वर्णन करो। उसके और मुहम्मद तुग़लक़ के स्वभाव में क्या अन्तर था?
५. तैमूर के आक्रमण पर एक ऐतिहासिक नोट लिखो। इस आक्रमण से दिल्ली सल्तनत की क्या दशा हुई?

ड्रामा—मुहम्मद तुग़लक़ के राजधानी-परिवर्तन का ड्रामा बना कर खेलो। अपने स्कूल के कमरे को दिल्ली मान लो और उससे दूर किसी दूसरे को देवगिरि। एक विद्यार्थी मुहम्मद तुग़लक़ बने और एक उसका वज़ीर। शेष लड़के दिल्ली-निवासी बन जायँ। सुल्तान अपनी राजधानी बदलने के विचार तथा उसके कारण अपने वज़ीर पर प्रकट करे और फिर सारे दिल्ली शहर में नगर-निवासियों को किसी निश्चित तिथि पर दिल्ली से देवगिरि चलने की आज्ञा का ढिंढोरा पिटवा दे।

देवगिरि जाते समय मार्ग के कष्टों का प्रदर्शन भी किया जाय। अन्त में किसप्रकार फिर कुछ दिन बाद दिल्ली-निवासियों को वापस आना पड़ा, यह भी दिखलाया जाय।

ड्रामा के पात्रों के वस्त्र उसी काल के अनुकूल होने चाहिएँ।

कुछ विशेष तथा मनोरंजक बातें

तैमूर के आक्रमण का वर्णन तुमने पढ़ लिया है। नीचे एक घटना का वर्णन दिया जाता है जो तैमूर ने स्वयं अपनी क़लम से लिखी थी। इस वर्णन से तुम्हें यह विदित हो जायगा कि वह कैसा कठोर तथा निर्दय था। घटना इस प्रकार है—

"हम लोगों के भारतवर्ष में आने से लेकर अब तक मेरे डेरे में एक लाख से भी अधिक काफ़िर और हिन्दू कैदी जमा हो गये थे। पिछले दिन जब शत्रु ने हम पर हमला किया था, तो इन लोगों ने हर्ष मनाया था, हमें कोसा था और शत्रु की जीत की खबर सुनकर वे अपनी बेड़ियाँ तोड़कर डेरों को लूटने और शत्रु की सेना में सम्मिलित होकर उसकी शक्ति बढ़ाने को तैयार थे। मैंने अपने अमीरों को बुलाकर उनसे परामर्श किया। उन्होंने कहा कि बड़ी लड़ाई के दिन इन एक लाख कैदियों को तंबुओं में सामान और असबाब के पास नहीं छोड़ना चाहिए; और इनको छोड़ देना तो युद्ध के नियमों के बिल्कुल ही विपरीत होगा। इन सबको तलवार के घाट उतारने के अतिरिक्त और कोई मार्ग शेष नहीं है। उनकी बातें मेरे दिल में जम गयीं और युद्ध के नियमों के अनुकूल जान पड़ीं। मैंने तुरन्त घोषणा करा दी कि प्रत्येक सरदार को अपने काफ़िर कैदियों को क़त्ल करना पड़ेगा। जो कोई ऐसा न करेगा, उसको फाँसी की सज़ा दी जायगी तथा उसकी सारी सम्पत्ति सूचना देनेवाले व्यक्ति को दे दी जायगी। यह आज्ञा सुनकर सैनिकों ने अपनी-अपनी तलवारें म्यान से खींच लीं और अपने-अपने कैदियों को क़त्ल

कर डाला। उस दिन एक लाख काफ़िर मारे गये। एक विद्वान् सरदार ने भी, जिसने अपने जीवन में आज तक एक चिड़िया भी न मारी थी, मेरी आज्ञा का पालन करने के लिये अपने १५ हिन्दू कैदियों को अपनी तलवार से क़त्ल किया।"

अध्याय २०

दिल्ली-सल्तनत का पतन

सैय्यद वंश—सैय्यद खिज़्रखाँ वही मनुष्य था जिसे तैमूर अपनी तरफ़ से पञ्जाब का सूबेदार बना गया था। सैय्यद वंश के बादशाह सन् १४५० ई० तक शासन करते रहे। परन्तु इस समय दिल्ली की सल्तनत अलाउद्दीन या मुहम्मद तुग़लक़ के समय की सी लम्बी-चौड़ी न रह गयी थी। अब उसमें केवल दिल्ली और आगरा के आस-पास के प्रान्त शेष थे। देश के बाकी भागों में इस समय तक कई छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हो चुकी थी। इनमें से कुछ प्रसिद्ध राज्यों का वर्णन नीचे दिया जाता है।

बंगाल—बंगाल मुहम्मद तुग़लक़ के समय में ही दिल्ली से अलग हो गया था। इसकी राजधानी **गौड़** या **लखनौती** थी। यहाँ अकबर के समय तक मुसलमानों का स्वतन्त्र राज्य रहा।

शर्क़ी सल्तनत—जहाँ आजकल **अवध, गोरखपुर** और **बनारस** की क़िस्मतें हैं, वहाँ फीरोज़ तुग़लक़ के मरने पर शर्क़ी सल्तनत की स्थापना हुई थी। इसकी राजधानी **जौनपुर** थी जिसे फ़ीरोज़ तुग़लक ने बसाया था। शर्क़ी सुल्तानों ने जौन-पुर में कई बढ़िया इमारतें बनवायीं।

अन्य राज्य—इनके अतिरिक्त **गुजरात, मालवा** और

मेवाड़ के भी राजा थे। मेवाड़ का राजा बहुत शक्तिशाली था। यहाँ के राजपूत राजा अपनी वीरता के लिये विख्यात हैं। मेवाड़ के राणा ने **गुजरात** और **मालवा** के **सुल्तानों** के आक्रमण से मेवाड़ की रक्षा की और इस विजय के उपलक्ष में एक कीर्ति-स्तम्भ बनवाया जो अब तक चित्तौर में खड़ा है।

दक्षिण के राज्य—बहमनी—मुहम्मद तुग़लक़ क शासन-काल के अंतिम भाग मे जिस समय उत्तरी भारत में अनेक राज्य दिल्ली राज्य से अलग हो गये, उसी समय दक्षिण में भी दो शक्तिशाली राज्यों की स्थापना हुई। इनमें से एक **बहमनी सल्तनत** थी जिसकी राजधानी **गुलबर्गा** थी। सन् १३४७ ई० मे **हसन बहमन शाह** नामक सरदार ने इस राज्य की स्थापना की। **मुहम्मद शाह तृतीय** के शासन-काल में इसकी अवनति प्रारम्भ हो गयी। उसका मंत्री **महमूद गवाँ** बड़ा चतुर था। मुहम्मद शाह ने अपने सरदारों के बहकाने से महमूद गवाँ को मरवा डाला। पीछे से पारस्परिक कलह इतनी बढ़ी कि बहमनी सल्तनत के टूट कर पाँच टुकड़े हो गये। वे पाँचों टुकड़े ये थे—**बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर, बीदर** और **बरार**। ये पाँचों सल्तनतें आपस मे लड़ती रहती थीं।

विजयनगर—दूसरा राज्य **विजयनगर** का था। सन् १३३६ ई० मे **हरिहर** और **बुक्काराय** नामक दो हिन्दू सरदारों ने इस राज्य की स्थापना की थी। इस राज्य की धीरे-धीरे बड़ी उन्नति हुई। यहाँ का **कृष्णदेव राय** नामक राजा बड़ा प्रतापी

हुआ। उसने अपने पड़ोसी मुसलमानों को कई बार हराया। उसके राज्य-काल में व्यापार को बड़ी उन्नति हुई और विजयनगर बड़ा धनी नगर हो गया।

तालीकोट की लड़ाई और विजयनगर का अन्त— बहमनी राज्य के विनाश के पश्चात् बनी हुई पाँचों सल्तनतें परस्पर तो लड़ा ही करती थीं, अपने पड़ोसी हिन्दू-राज्य विजयनगर से भी उनकी न बनती थी। सन् १५६५ ई० में **तालीकोट** नामक स्थान पर दक्षिण की प्रायः सब मुसलमान सल्तनतों ने मिल कर विजय-नगर राज्य पर चढ़ाई की। इसमें मुसलमानों की विजय हुई। विजयनगर का समृद्धिशाली नगर बरबाद कर दिया गया। मुसलमानों ने पाँच दिन तक शहर में लूट-मार मचायी। इसप्रकार विजयनगर राज्य का अन्त हुआ।

अभ्यास

नक़्शा

भारतवर्ष के नक़्शे में तुग़लक़ वंश की अवनति के बाद स्थापित होनेवाले निम्न-लिखित राज्य दिखाओ—सैय्यदों का राज्य, बंगाल, शर्की सल्तनत, मेवाड़, बहमनी सल्तनत और उसके पाँच टुकड़े, विजयनगर राज्य।

निम्नलिखित नगर भी दिखाओ—

दिल्ली, गौड़, जौनपुर, चित्तौर, गुलबर्गा, विजयनगर, तालीकोट।

याद करो—

महमूद गवाँ बहमनी के सुल्तान मुहम्मद शाह तृतीय का मंत्री था। यह बड़ा योग्य तथा चतुर था। इसने अनेक सुधारों द्वारा बहमनी सल्तनत को उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। बहमनी सल्तनत में

शिक्षा के प्रचार के लिये इसने बीदर मे एक कालेज खुलवाया और मालगुज़ारी के प्रबन्ध के लिये भूमि की नाप करायी। सुल्तान मुहम्मद शाह इसका बहुत विश्वास करता था जिससे अन्य सरदारों ने उसके विरुद्ध एक षड्यन्त्र रच कर उसे मरवा डाला। इसके मरते ही सल्तनत का काम बिगड़ गया।

तिथियाँ

सन् १३३६ ई०—विजयनगर राज्य की स्थापना।

सन् १३४७ ई०—बहमनी सल्तनत की नींव।

सन् १५६५ ई०—तालीकोट की लड़ाई, विजयनगर राज्य का अंत।

प्रश्न

१. सैय्यद वंश की नींव किसने डाली? इस वंश के सुल्तानों के समय में दिल्ली सल्तनत की क्या दशा थी?
२. बहमनी सल्तनत की स्थापना करनेवाला कौन था? बाद में उसके कौन-कौन से पाँच टुकड़े हो गये?
३. तालीकोट के युद्ध का क्या कारण था? इसका क्या परिणाम हुआ?

अध्याय २१

लोदी वंश

(१४५०-१५२६ ई०)

लोदी वंश—सैय्यद वंश के बादशाह शक्तिहीन थे। सन् १४५० ई० में **बहलोल लोदी** नामक एक अफ़गान ने दिल्ली की सल्तनत पर अपना अधिकार जमाया और इस प्रकार दिल्ली की सल्तनत लोदी अफ़गानों के हाथ लगी। लोदी वंश के शासन-काल में दिल्ली सल्तनत का पुनरुत्थान हुआ।

बहलोल लोदी—बहलोल चतुर था। उसने दिल्ली सल्तनत से निकले हुए स्वतंत्र राज्यों को फिर अपने वश में करने का उद्योग किया। पहले तो उसने दिल्ली के आस पास क छोटे-छोटे प्रान्तों पर अधिकार कर लिया और फिर जौनपुर के शर्की सुल्तानों पर विजय प्राप्त करके अपने राज्य की सीमा बढ़ायी।

सिकंदर लोदी—बहलोल की मृत्यु के बाद **सिकंदर** गद्दी पर बैठा। यह भी बहलोल के समान ही बुद्धिमान् और दूरदर्शी था। इसने बड़ी बुद्धिमानी से अपने समय के बलवों को शान्त किया और अपने पिता की सल्तनत को बढ़ाया। इसने विहार को अपने अधीन कर लिया। इसका शासन-प्रबन्ध अच्छा था। इसके राज्य-काल में प्रजा सुखी रही। लोदी वंश का सब से योग्य बादशाह यही था। इसके समय में सब चीजें सस्ती रहीं। आगरा इसीने बसाया था और उसे अपनी राजधानी बनाया था।

इब्राहीम लोदी—सिकन्दर की मृत्यु हो जाने पर उसका लड़का **इब्राहीम** गद्दी पर बैठा। उसने सन् १५२६ ई० तक शासन किया। लोदी वंश का यह अन्तिम बादशाह था। इब्राहीम निर्दय और अभिमानी था। अपने सरदारों के साथ उसका बर्ताव भी अच्छा न था। उसके सरदार उससे अप्रसन्न हो गये। उन्होंने जगह-जगह बलवा करना आरम्भ कर दिया। **जौनपुर** और **बिहार** दिल्ली की सल्तनत से फिर निकल गये। इब्राहीम के व्यवहार से असन्तुष्ट हो कर पंजाब के हाकिम **दौलत खाँ** ने **काबुल** के बादशाह **बाबर** को भारत पर आक्रमण करने के लिये निमंत्रित किया। बाबर ने किसप्रकार आकर लोदी वंश का अन्त करके भारत में मुग़ल साम्राज्य की स्थापना की, इसका वर्णन तुम आगे पढ़ोगे।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में लोदी सुल्तानों के शासन काल में दिल्ली सल्तनत का विस्तार दिखाओ।

याद करो—

तिथियाँ

सन् १५०४ ई०—आगरा बसाया गया।

प्रश्न

१ लोदी वंश की स्थापना करनेवाले सुल्तान के विषय में क्या जानते हो ?
२. सिकन्दर लोदी के शासन का संक्षेप में वर्णन करो।
३. इब्राहीम लोदी से उसके अमीर और सरदार क्यों नाराज़ हो गये ? उन्होंने नाराज़ होकर क्या किया ?

विशेष तथा मनोरंजक बातें

लोदी सुल्तानों के समय में चीज़ों का भाव बहुत सस्ता था। नीचे की सूची से तुम्हें इस बात का पता लग जायगा—

एक बहलोली का	१० मन अनाज
,, ,,	५ सेर घी
,, ,,	१० गज़ कपड़ा

बहलोली सिक्के का मूल्य रुपये के १/४० वें भाग के बराबर होता था और यह तौल में १ तोला ८ माशा ७ रत्ती होता था।

अध्याय २२

सुल्तानों के शासन-काल पर एक दृष्टि

पिछले अध्यायो में तुमने दिल्ली के सुल्तानों के विषय में वहुत कुछ पढ़ लिया है। उनमें से कुछ तो बिल्कुल ही अयोग्य सिद्ध हुए और कुछ ने अपने बाहु-बल से तत्कालीन हिन्दू राजाओं को परास्त करके मुसलमानी साम्राज्य की स्थापना की। जिस समय मुसलमानों के आक्रमण प्रारम्भ हुए थे, उस समय सारा देश भिन्न-भिन्न राजपूत अथवा हिन्दू राजाओं के अधीन था। मुसलमान परदेशी थे और संख्या मे भी हिन्दुओं की अपेक्षा कम थे। फिर भी उन्होंने यहाँ अपनी सल्तनत कैसे क़ायम कर ली? तुम्हारे मन में भी मुसलमानों की जीत का वर्णन पढ़कर यह प्रश्न उठा होगा। यहाँ हम पहले संक्षेप में उन कारणों का वर्णन करेगे जिनसे मुसलमानो को भारतीय शासको पर विजय प्राप्त करने मे सहायता मिली।

मुसलमानों की विजय के कारण—यह तुम जानते हो कि मुहम्मद ग़ोरी की विजय के साथ भारत में मुसलमानी साम्राज्य का वीज जम गया। उस समय के भिन्न-भिन्न राजपूत नरेशों का वर्णन तुम पढ़ ही चुके हो। ये राजपूत राजा अवसर पड़ने पर एक दूसरे की सहायता न करते थे। जिस पर आक्रमण होता था, उसे आपस के फूट के कारण अकेले ही शत्रु का सामना करना पड़ता था। राजपूतों की हार और मुसलमानों की जीत

गुरु नानक

का यह पहला कारण था। इसके साथ ही एक बात और भी थी। राजपूत हाथियों पर चढ़कर युद्ध करते थे और उनकी सेना में हाथियों की संख्या अधिक होती थी। मुसलमान सैनिक फुर्तीले घोड़ों पर सवार होकर लड़ते थे। युद्ध में कभी कभी हाथी बिगड़ जाते थे और मैदान छोड़कर भाग जाते थे। हिन्दुओं की सामाजिक अवस्था के कारण उनमें पारस्परिक द्वेष और मनोमालिन्य था और विदेशियों की सामाजिक अवस्था ऐसी अच्छी थी कि वे आपस में प्रेम और एकता के सूत्र में बँध कर जातीय लाभ के लिये व्यक्तिगत लाभ की परवाह नहीं करते थे। इन सब बातों के अतिरिक्त एक कारण यह भी था कि मुसलमान सैनिकों मे धार्मिक जोश भरा हुआ था। 'दीन' के लिये लड़ते-लड़ते मर जाना वे गौरव की बात समझते थे और जीत जाने पर यहाँ का बहुत सा धन उनके हाथ लगता था। अतः वे अपनी विजय और पराजय दोनों ही को लाभदायक समझते थे और जी-जान से जूझकर लड़ते थे जिसके कारण हिन्दुओं के मुकाबले में बहुधा उनकी जीत होती थी।

मुसलिम राज्य का प्रभाव—उपर्युक्त कारणों से मुसलमान भारत में इस्लामी साम्राज्य स्थापित करने में सफल हो सके और धीरे-धीरे यहाँ उनकी संख्या बढ़ती गयी। वे हिन्दुओं के शासक और पड़ोसी बन कर यहीं रहने लगे। यद्यपि हिन्दू-मुसलमानों क रीति-रवाज आदि एक दूसरे से भिन्न थे, तथापि दोनो के पास-पास रहने से एक का दूसरे पर काफी प्रभाव पड़ा। अनेक हिन्दू मुसलिम फकीरों की प्रतिष्ठा करने लगे और उदार मुसलिम हिन्दू देवों की ओर श्रद्धा दिखाने लगे। मुसलमानों में

हिन्दुओं की तरह जाति-भेद न था। जहाँ-जहाँ हिन्दुओं को मुसलमानों के साथ रहने का मौका मिला, वहाँ उनके प्रभाव से जाति-भेद बिल्कुल नष्ट तो न हो सका, किन्तु जाति-बन्धन ढीला अवश्य पड़ गया। मुसलमान मूर्ति-पूजा भी न करते थे। एक ईश्वर में उनका बड़ा पक्का विश्वास था। इसका फल यह हुआ कि हिन्दुओं में भी कुछ सुधारक ऐसे हुए जिन्होंने मूर्ति-पूजा का विरोध किया और लोगों को 'एक ईश्वर' की उपासना करने की शिक्षा दी। यद्यपि एक "ईश्वर और भक्ति" का वर्णन वेदों तथा उपनिषदों में है तथापि मुसलमानों के संघर्ष से इन पर अधिक जोर दिया जाने लगा। ऐसे सुधारकों में कबीर का स्थान बहुत ऊँचा है। हिन्दुओं की मूर्ति-पूजा के विषय में उन्होंने एक स्थान पर लिखा है—

पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजौं पहार।
यातें तो चाकी भली, पीस खाय संसार॥

कबीर ने अपनी-अपनी बुराइयों के लिये केवल हिन्दुओं को ही नहीं, वरन् मुसलमानों को भी बड़ी निर्भयता से बुरा-भला कहा है। अपने पदों और साखियों में उन्होंने बेखटके उस समय के हिन्दू-मुसलमानों की कुरीतियों का वर्णन किया है। ऐसे ही एक पद की पहली पंक्ति यह है—

अरे इन दोउन राह न पाई *।

वे हिन्दू और तुर्क दोनों को समान समझते थे और हृदय की शुद्धता पर अधिक जोर देते थे। उनका कहना था—

---

* कहीं से इस पद को तलाश करके पढ़ो।

"यदि हृदय शुद्ध नहीं है तो गंगा के नहाने और मूर्ति के पूजने से क्या होता है! यदि हृदय में छल है तो मक्के और काबे की यात्रा से क्या होता है!" कबीर के अतिरिक्त और भी कई सुधारक हुए, जिनमें से पंजाब के गुरु नानक और गुजरात के दादूदयाल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनकी शिक्षाएँ भी कबीर की शिक्षाओं से मिलती-जुलती थीं।

इन सुधारकों के अतिरिक्त इस काल में उच्चकोटि के कुछ भक्तों ने भी जन्म लिया। ये लोग विष्णु और उनके अवतार राम-कृष्ण के उपासक थे। बंगाल के चैतन्य महाप्रभु कृष्ण के अनन्य भक्त थे। राजपूताने की सुप्रसिद्ध भक्तिनी मीराबाई की गिनती भी उन्ही भक्तों की श्रेणी में है। मीरा हिन्दी मे बहुत सरस और भक्तिपूर्ण कविता करती थी। आज तक हिन्दी मे उसके अनेक पद प्रसिद्ध हैं।

चैतन्य महाप्रभु

धार्मिक मामलों के सिवा हिन्दुओं की रहन-सहन और

भाषा पर भी मुसलमानों का प्रभाव पड़ा। मुसलिम महिलाएँ परदा करती थीं। उनकी देखा-देखी हिन्दू स्त्रियाँ भी परदा करने लगीं। बहुत से हिन्दुओं के खाने-पीने और पहनावे-उढ़ावे में भी मुसलमानों का सा तर्ज़ हो गया। जो हिन्दू अदालतों और दरबारों में काम करते थे, उनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिये एक नई भाषा का जन्म हुआ। मुसलमान तुर्की और फ़ारसी बोलते थे और ये लोग हिन्दी। नई भाषा, जो 'उर्दू' के नाम से प्रसिद्ध हुई, इन्हीं भाषाओं के मेल से बनी है। इसके द्वारा एक दूसरे के भाव जानने में आसानी हो गयी।

मीराबाई

मुसलमानों का आना और भी कई प्रकार से लाभदायक सिद्ध हुआ। मुसलमान शासक बढ़िया इमारतें बनवाने के शौकीन थे और उन्होंने नये ढंग की इमारतें बनवायीं, जिससे यहाँ की कारीगरी की उन्नति होने में बहुत सहायता मिली। इन सब

बातो को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि मुसलमानो के आने से देश को लाभ हुआ। जो हानियाँ और अत्याचार हिन्दू-प्रजा को कुछ मुसलमान शासको के हाथो सहने पड़े, उसका एक कारण यह भी था कि उन दिनो लोगो के विचारों में आजकल की सी उदारता न थी और हरएक विषय मे धार्मिक दृष्टि पर अधिक ध्यान दिया जाता था।

अभ्यास

याद करो—

कबीर—प्रसिद्ध साधु रामानन्द के शिष्य थे। वे सन् १३९८ ई० में पैदा हुए थे। कहा जाता है कि ये किसी ब्राह्मण की विधवा कन्या के गर्भ से पैदा हुए थे जिसने इन्हें तालाब के किनारे डाल दिया था। वहाँ से इन्हें नीरू नाम का एक जुलाहा अपने घर ले आया। उसकी स्त्री ने अपने बच्चे के समान इनका पालन-पोषण किया। बड़े होकर इन्होंने हिन्दू-मुसलमानों के सुधार का उद्योग किया।

चित्र-चर्चा

इस अध्याय में पहला चित्र गुरु नानक का है। गुरु नानक सिक्ख-धर्म के प्रवर्तक थे। इनका जन्म लाहौर ज़िले के एक गाँव में हुआ था। इस चित्र मे वे अपने शिष्यों को उपदेश दे रहे है। उनका पहनावा देखो। एक शिष्य के हाथ में सितार है। गुरु नानक इसी प्रकार पद गा-गा कर अपनी शिक्षापूर्ण रचनाएँ लोगों को सुनाया करते थे।

दूसरा चित्र चैतन्य महाप्रभु का है। गले में माला पड़ी है। बाल खुले हुए है और पैर नंगे हैं। इनकी दशा ध्यान से देखो। ये श्रीकृष्ण की भक्ति में इसीप्रकार तन्मय रहा करते थे।

तीसरे चित्र में भक्त मीराबाई सितार लिये बैठी हैं। माथे पर तिलक है और कंठ में माला। मीराबाई श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व समझती थीं और उनकी भक्ति में बहुत सुन्दर पद बना कर गाया करती थीं। मीराबाई के कुछ पद तलाश करके जबानी याद करो।

प्रश्न

१. हिन्दुओं की पराजय के कारण बताओ।
२. धर्म सम्बन्धी विषयों में मुसलमानों का हिन्दुओं पर क्या प्रभाव पड़ा?
३. हिन्दुओं और मुसलमानों के साथ-साथ रहने से हिन्दुओं की रहन-सहन में क्या परिवर्तन हुए?
४. सुल्तानों के समय की बनी हुई कुछ इमारतों के नाम बतलाओ।
५. नानक और मीराबाई पर छोटे ऐतिहासिक नोट लिखो।

दुहराने के लिये प्रश्न

(अध्याय १४ से लेकर २२ तक के लिये)

८ वीं	शताब्दी	७१२ ई०
११ वीं	,,	१०२५ ,,
१२ वीं	,,	११९२ ,,
१३ वीं	,,	१२०६, १२९४ ई०
१४ वीं	,,	१३०३, १३२६, १३४७, १३९८ ई०
१६ वीं	,,	१५६५ ई०

निम्नलिखित घटनाएँ कब हुईं? (ऊपर लिखी हुई तिथियों में नीचे लिखी प्रत्येक घटना की तिथि मिलेगी।)

(१) अलाउद्दीन की देवगिरि के राजा पर चढ़ाई।
(२) महमूद ग़ज़नवी का सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण।
(३) विजयनगर राज्य का अन्त।

(४) वहमनी सल्तनत की स्थापना ।
(५) मुहम्मद विन क़ासिम का सिन्ध के राजा पर आक्रमण ।
(६) दिल्ली के अन्तिम हिन्दू-राजा पृथ्वीराज की हार ।
(७) अलाउद्दीन की चित्तौर विजय ।
(८) गुलाम वंश की स्थापना ।
(९) तैमूरलंग का भारत पर आक्रमण ।
(१०) विजयनगर राज्य की स्थापना ।

निम्नलिखित वाक्यों में कोष्ठक मे लिखे हुए शब्दों में से एक-एक ऐसा शब्द चुनो जिससे वह वाक्य ठीक और सत्य बन जाय—

(१) हज़रत मुहम्मद का जन्म (मक्का, दिल्ली, दमिश्क) में हुआ ।
(२) (इल्तुतमिश, बलवन, कुतुबुद्दीन) ने गुलाम वंश की स्थापना की ।
(३) (कबीर, बुद्ध, हज़रत मुहम्मद) ने इस्लाम धर्म चलाया ।
(४) पृथ्वीराज को (महमूद ग़जनवी, मुहम्मद ग़ोरी, अलाउद्दीन) ने हराया ।
(५) महमूद गवाँ (नासिरुद्दीन, बलवन, मुहम्मद शाह तृतीय) का मंत्री था ।
(६) दक्षिण को सव से पहले (मुहम्मद तुग़लक़, अलाउद्दीन, तैमूर) ने जीता ।
(७) (मुहम्मद तुग़लक़, फ़ीरोज, बहलोल) ने अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि को बदली ।
(८) (जलालुद्दीन, खिज्र खाँ, सिकन्दर) ने सैय्यद वंश की नींव डाली ।
(९) इब्न बतूता (अलाउद्दीन, मुहम्मद तुग़लक़, बलवन) के शासन-काल में भारत आया था ।
(१०) लोदी वंश की स्थापना (इब्राहीम, बहलोल, बावर) ने की थी ।

नीचे की कुछ बातें सत्य हैं और कुछ झूठ। प्रत्येक को ध्यान से पढ़ो। जो ठीक हों, उनके लिये उत्तर में लिख दो 'हाँ', और जो न ठीक हों, उनके लिये लिख दो 'नहीं'।

(१) आगरा लोदी सुल्तानों के समय बसाया गया।
(२) नासिरुद्दीन बड़ा बलवान और योग्य शासक था।
(३) मुहम्मद ग़ोरी घोड़े से गिर कर मरा।
(४) मलिक काफ़ूर अलाउद्दीन का सेनापति था।
(५) हसन बहमन शाह ने विजयनगर राज्य की स्थापना की।
(६) सुल्तानों के समय में हिन्दू स्त्रियाँ परदा करती थीं।
(७) इस समय में कुछ सुधारकों ने मूर्तिपूजा का विरोध किया।
(८) कैक़ुबाद शराब न पीता था।
(९) रज़िया दिल्ली के तख्त पर बैठनेवाली पहली महिला थी।
(१०) तैमूर के आक्रमण से दिल्ली सल्तनत की शक्ति में वृद्धि हुई।
(११) कुतुबमीनार को इल्तुतमिश ने पूरा कराया।
(१२) तालीकोट की लड़ाई से विजयनगर का नाश हो गया।
(१३) तैमूर दयालु था।
(१४) फ़ीरोज़ तुग़लक़ ने अनेक सुधार किये।
(१५) चैतन्य महाप्रभु ने मूर्तिपूजा का विरोध किया।

दिल्ली के सुल्तान (१२०६-१५२६)

१२०६– कुतुबुद्दीन ऐबक

इल्तुतमिश

मंगोलों के आक्रमण

रजिया बेगम

१२४६–

बलबन

१२८६–

अलाउद्दीन खिल्जी

१३२६– मुहम्मद तुग़लक़

इब्न बतूता

विजयनगर राज्य की स्थापना

बहमनी सल्तनत

१३६६– फ़ीरोज़

तैमूर का आक्रमण

१४०६–

सैय्यद वंश

बहलोल लोदी

१४४६–

१४८६–

१५२६– बाबर

अध्याय २३

मुग़ल राज्य की स्थापना—बाबर

(१५२६—१५३० ई०)

२१ वें अध्याय में हमने तुम्हें यह बतलाया था कि इब्राहीम लोदी के व्यवहार से उसके सरदार अप्रसन्न हो गये थे। पंजाब के दौलत खाँ नामक सूबेदार ने काबुल के बादशाह बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए बुलाया। भारत के लहलहे मैदानों को देखकर बाबर का जी पहले ही से भारत के जीतने को ललचा रहा था। दौलत खाँ का निमंत्रण पाकर उसने तुरंत आक्रमण की तैयारी आरम्भ कर दी। इस नये आक्रमणकारी की विजय का वृत्तान्त बतलाने से पहले हम तुम्हें उसके प्रारंभिक जीवन के विषय में कुछ बातें बतला देना आवश्यक समझते हैं।

प्रारंभिक जीवन—बाबर का पिता तैमूर का वंशज था और माँ चंगेज़ ख़ाँ के वंश की थी। तैमूर और चंगेज़ खाँ, जैसा कि तुम पढ़ चुके हो, दोनों ही प्रसिद्ध विजेता थे। इससे तुम अनुमान कर सकते हो कि बाबर कैसे शक्तिशाली वंशों के योग से उत्पन्न हुआ था। उसका पिता फ़रग़ना के छोटे से राज्य का स्वामी था, जो समरक़ंद के पूर्व में स्थित है। बाबर की बाल्यावस्था में ही उसके पिता का देहान्त हो गया। उसे बालक जानकर उसके चचा और अन्य शत्रुओं ने उससे छेड़-छाड़ आरंभ कर दी जिसके कारण उसे अपनी रियासत छोड़कर भागना पड़ा। वहाँ से चलकर

वह अफ़गानिस्तान आया। यहाँ की राजधानी काबुल में कुछ गड़बड़ी फैली हुई थी। इस अवसर से बाबर ने लाभ उठाकर काबुल पर अपना अधिकार जमा लिया और इसप्रकार धीरे-धीरे अफ़गानिस्तान मे उसने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

बाबर

होने को तो वह अफ़गानिस्तान का स्वामी हो गया, परंतु इस छोटी सी सल्तनत से उसे संतोष न हुआ। उसके इरादे बहुत ऊँचे थे और अपने पूर्वज तैमूर या चंगेज खाँ की तरह विजय प्राप्त करके

विशाल साम्राज्य स्थापित करने को उसका खून जोश मार रहा था। इसी कारण उसने पंजाब और भारत की सीमा पर कई बार आक्रमण किये, किन्तु इन आक्रमणों से उसके हाथ कुछ न लगा। भारतवर्ष का स्वामी कहलाने के लिये दिल्ली को जीतना आवश्यक था। अतः दौलत खाँ आदि का समाचार पाकर वह इब्राहीम को जीतने के लिये चल पड़ा।

पानीपत का युद्ध—सन् १५२६ ई० के अप्रैल मास में बाबर अपनी सेना सहित दिल्ली के निकट आ पहुँचा। दिल्ली से कुछ मील उत्तर की ओर **पानीपत** के मैदान मे इब्राहीम भी अपनी सेना लेकर उसका सामना करने के लिये जा डटा। दोनों सेनाओं में बहुत भयंकर युद्ध हुआ। बाबर ने बड़ी बुद्धिमानी से अपनी सेना का संचालन किया। इब्राहीम की सेना संख्या में काफ़ी अधिक थी, परंतु बाबर के चतुर सैनिकों के आगे उसकी कुछ न चली। दोपहर होते-होते दिल्ली की सेना के पैर उखड़ गये। इब्राहीम भी युद्ध में लड़ते-लड़ते मारा गया।

इस विजय से बाबर **दिल्ली** और **आगरे** का स्वामी हो गया और भारत में मुग़ल-साम्राज्य की नींव पड़ी। पानीपत के इस युद्ध का इतिहास में बहुत महत्व है। यहाँ से दिल्ली की सल्तनत एक दूसरे वंश के हाथों में चली गयी।

राजपूतों से मुठभेड़—यह तो तुम जानते ही हो कि लोदी वंश के बादशाहों के अधीन समस्त भारतवर्ष न था। लोदियों के अतिरिक्त और भी कुछ ऐसी शक्तियाँ थीं जिन पर विजय प्राप्त किये बिना बाबर भारत का सम्राट् कहलाने का अधिकारी न हो सकता था। इन शक्तियों में एक प्रधान शक्ति **राजपूतों** की थी। इनमें से

मेवाड़ का राणा साँगा अपने पराक्रम के लिये सारे राजपूताने मे प्रसिद्ध था। वह अपने समय का सबसे शक्तिशाली योद्धा था। राजपूताने के राजाओं पर उसका बड़ा प्रभाव था। राजपूत यह कैसे सह सकते थे कि एक नये वंश का शासक इस प्रकार दिल्ली सल्तनत को हथिया ले! वे तो स्वयं उस पर अधिकार जमाने की चिन्ता मे थे। इधर बाबर भी समझता था कि जब तक मैं राजपूतों को परास्त न कर लूँगा, तब तक मेरा साम्राज्य दृढ़ न हो सकेगा। अतः इधर राणा साँगा और उधर बाबर दोनो ने एक दूसरे से युद्ध की तैयारी की। राणा साँगा के साथ अनेक राजपूत राव और सामंत थे और उसकी सेना असंख्य थी।

राणा साँगा

राजपूत अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध थे ही। बस बाबर के सैनिकों की हिम्मत टूट गयी और वे अत्यंत भयभीत हुए। ऐसे विकट अवसर पर बाबर ने बहुत दूरदर्शिता से काम लिया। पहले उसने अपने शराब पीने के सोने-चाँदी के सब बरतन तुड़वा दिये और भविष्य में शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। फिर अपने सारे सैनिकों को एकत्र करके बड़ी जोशीली वक्तृता दी। इससे सैनिकों

का गया हुआ उत्साह लौट आया और उन्होंने कुरान लेकर शपथ खायी कि हम अंत तक बाबर का साथ देंगे ।

इस प्रकार सब ठीक-ठाक हो जाने पर फ़तहपुर सीकरी के पास **खनवा** के मैदान में दोनों सेनाओं में भीषण संग्राम हुआ। दोनों ही ओर की सेनाएँ जी तोड़ कर लड़ीं। दोनों ओर के सहस्रों सैनिक युद्ध में काम आये; परन्तु राजपूतों में मतभेद होने के कारण विजय बाबर ही के हाथ रही। राणा साँगा के घायल होते ही राजपूतों में खलबली मच गयी। इस विजय से बाबर की शक्ति का सिक्का दूर-दूर तक बैठ गया और उसे एक बड़ी भारी शक्ति का भय भी जाता रहा।

अब तुम देख चुके कि पानीपत के मैदान में बाबर ने लोदियों की शक्ति का अंत कर दिया था और खनवा की लड़ाई में उसने हिंदुओं की सबसे लड़ाकू जाति को परास्त किया। किंतु अभी विहार में अफ़गानों का ज़ोर था। उन्हे यों ही छोड़ देना ठीक न था। यह सोचकर बाबर ने उन्हें परास्त करने के इरादे से कूच किया। कन्नौज के निकट **गंगा नदी** के किनारे वे बुरी तरह हरा दिये गये (१५२८ ई०)। अब इब्राहीम का भाई महमूद लोदी ही बचा था। कुछ दिनों पश्चात् बाबर ने उसे भी **घाघरा** नदी के किनारे परास्त कर दिया।

बाबर की मृत्यु और चरित्र—भारत में आकर बाबर को कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं और उसे बहुत दौड़-धूप तथा कठिन परिश्रम करना पड़ा। इसका उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा। अंत में सन् १५३० ई० में आगरे के किले में उसकी मृत्यु हो

गयी; पर वह दफ़नाया गया काबुल मे, क्योंकि उसकी इच्छा ऐसी ही थी।

वह असाधारण वीर और दूरदर्शी था। उसकी वीरता का यही एक प्रमाण काफी है कि यहाँ आकर प्रति वर्ष उसे कोई न कोई लड़ाई लड़नी पड़ती थी और उनमे से हर एक में उसने शत्रु को हराया था। उसने भारत की सब नदियों को तैर कर पार किया था। इसके अतिरिक्त वह उच्चकोटि का कवि और लेखक भी था। 'तुजुक बाबरी' नामक पुस्तक में उसने अपना जीवन-चरित्र स्वयं लिखा है।

बाबर ने अपने साहस और बल से मुग़ल साम्राज्य की स्थापना की, जो अँग्रेजों के दिल्ली जीतने तक स्थिर रहा। 'मुग़ल' शब्द का भी वही तात्पर्य है जो मंगोल का है। बाबर तुर्क था किंतु इसकी माँ मुग़लवंश की पुत्री थी। बाबर के साथ जो लोग भारत में आये थे, वे सब भी मुग़लों के ही नाम से विख्यात हुए, यद्यपि उनमें अफ़ग़ान, तुर्क आदि कई नस्लों के लोग थे।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में बाबर के समय का मुग़ल-साम्राज्य का विस्तार दिखाओ।

निम्नलिखित नगर भी दिखाओ--

दिल्ली, पानीपत, आगरा, कन्नौज और कनवाहा।

याद करो—

तिथियाँ

सन् १५२६ ई०—पानीपत की पहली लड़ाई

सन् १५२७ ई०—खनवा का युद्ध।

सन् १५२८-२९ ई०—गंगा तथा घाघरा की लड़ाई।

सन् १५३० ई०—बाबर की मृत्यु।

चित्र-चर्चा

बाबर का चित्र देखो। पहनावे पर विशेष ध्यान दो। सिर पर कलँगी है। हाथ में क्या है? पहनने के कपड़े कैसे सुन्दर हैं! मुँह पर दाढ़ी रखाये हुए है।

दूसरा चित्र राणा साँगा का है। शरीर कितना स्थूल है! इसी कारण लोग इनको "मोटा राजा" भी कहते थे। राजपूत राजा इसी प्रकार के वस्त्र धारण करते थे—लंबी अचकन, चुस्त पायजामा, कमर में फेंट और गले में हार। फेंट में तलवार लगी है।

प्रश्न

१. बाबर के प्रारम्भिक जीवन के विषय में क्या जानते हो? संक्षेप में वर्णन करो।

२. पानीपत के प्रथम युद्ध के इतिहास का क्या महत्त्व है?

३. पानीपत के युद्ध के पश्चात् बाबर को और कौन-कौन सी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं? प्रत्येक से किसप्रकार उसका काम आसान होता गया?

४. बाबर वीर और विद्वान् था तथा अपनी सन्तान से प्रेम करता था। उपर्युक्त तीनों गुणों के सिद्ध करने के लिये उसके जीवन में से प्रत्येक का उदाहरण दो।

विशेष तथा मनोरंजक बातें

कनवाहा के युद्ध से पहले बाबर ने अपने सैनिकों के सामने जो जोशीला भाषण किया था, वह यह था—

"भद्र पुरुषो और सैनिको,

जो कोई संसार में आता है, उसके लिये यहाँ से जाना भी आवश्यक है। ऐसा

एक ईश्वर ही है जो न कभी मरता है और न जिसकी अवस्था में कभी कोई परिवर्तन होता है। जीवन की दावत में बैठनेवाले को अन्त में मृत्यु का प्याला भी पीना ही पड़ता है। जीवन-रूपी सराँय में आनेवाले को इसे एक दिन छोड़ कर विदाई लेनी पड़ती है। अपमान सहकर जीने से प्रतिष्ठा के साथ मर जाना कहीं उत्तम है।

यश के साथ मृत्यु आती हो, मुझको है संतोष महान।
कीर्ति अमर हो जाये मेरी, चाहे जायँ भले ही प्रान॥*

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से हमें यह सुयोग और सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यदि रण मे हमारी मृत्यु हो जायगी तो हम 'शहीद' कहलावेंगे और अगर जीवित्त रहे तो इस्लाम का यश फैलावेंगे। अत. हममे से प्रत्येक को शपथ खानी चाहिये कि जीते जी शत्रु को पीठ न दिखावेंगे और शरीर में अन्तिम श्वास रहने तक संग्राम से मुँह न मोड़ेंगे।

इस भाषण से बाबर की विद्वत्ता प्रकट होती है। यदि हो सके तो इसे ज़बानी याद कर लो।

---

*With fame, though I die, I am content ;
Let fame be mine, though life be spent.

अध्याय २४

हुमायूँ और शेर शाह

(१५३०–१५५५ ई०)

हुमायूँ—बाबर की मृत्यु के बाद उसका बेटा हुमायूँ २३ वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा। वह बहुत नेक और दयालु था, किन्तु अपने पिता के समान रण-पण्डित और परिश्रमी न था। पंजाब और काबुल के प्रान्त उसने अपने भाई कामराँ को दे दिये। ऐसा करना उसकी बड़ी भारी भूल थी, क्योंकि मुग़ल सेना के अच्छे सैनिक इन्ही पहाड़ी प्रान्तों से आते थे और कामराँ, जो हुमायूँ से जलता था, उसकी सैनिक भरती को रोक सकता था। उसके दूसरे दो भाई भी इससे ईर्षा करते थे। यद्यपि हुमायूँ का व्यवहार उनके साथ अच्छा था, परन्तु वे सदैव उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा करते थे।

शत्रुओं का मुकाबला—जिस समय हुमायूँ बादशाह हुआ, उस समय तक मुग़ल राज्य के शत्रुओं का एकदम नाश नहीं हो पाया था। अभी उसे दो शत्रुओं का सामना करना था। पहला था—शेर खाँ, और दूसरा था गुजरात का बादशाह—बहादुर शाह। शेर खाँ बिहार के अफ़गानों का सरदार था। उसने काफी शक्ति प्राप्त कर ली थी और चुनार के प्रसिद्ध गढ़ और बिहार पर अपना अधिकार जमा लिया था और वह मुग़लों के भारत से निकाल बाहर करने की फ़िक्र में था। उसकी शक्ति नष्ट

करने के विचार से हुमायूँ पूर्व की ओर बढ़ा और उसने शेर खाँ को चुनार के गढ़ में घेर लिया। कुछ दिनों तक घेरा डाले रहने के उपरान्त उसने शेर खाँ से संधि कर ली और अपने दूसरे शत्रु

हुमायूँ

बहादुर शाह को परास्त करने के लिये वह लौट पड़ा। बहादुर शाह परास्त होकर भागा और ड्यू पहुँच कर पुर्तगालवालों की कोठी में उसने शरण ली।

उसी समय हुमायूँ को समाचार मिला कि शेर खाँ ने पूर्व में

फिर विद्रोह का झंडा खड़ा किया है और बंगाल पर अपना अधिकार कर लिया है। यदि चुनार के घेरे के समय ही हुमायूँ उसकी शक्ति कुचल डालता तो उसे यह सारी मुसीबत न उठानी पड़ती। हुमायूँ ने फिर शेर खाँ को दबाने के लिये विहार की ओर कूच किया। उसकी पीठ फिरते ही बहादुर शाह ने फिर आकर गुजरात पर अधिकार कर लिया और हुमायूँ की विजय पर पानी फेर दिया। विहार पहुँचकर हुमायूँ ने पहले तो चुनार के गढ़ पर अधिकार किया और फिर वह बंगाल की राजधानी **गौड़** की ओर बढ़ा। उस समय शेर खाँ **रोहतासगढ़** के किले में था। उसने जान-बूझकर बंगाल में हुमायूँ को प्रवेश कर लेने दिया और इसप्रकार वह हुमायूँ और दिल्ली तथा आगरे के मार्ग के बीच में आ गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आगरे से हुमायूँ की रसद आनी बन्द हो गयी। इसी बीच में वर्षा ऋतु आरम्भ हो गयी। नदियों में अथाह पानी हो गया। उधर हुमायूँ को विपत्ति में फँसा जानकर उसका एक भाई **हिन्दाल** आगरे के तख्त पर बैठ गया।

हुमायूँ की हार—यह देखकर हुमायूँ ने अब आगरे को लौटना निश्चित किया। मार्ग में जब वह **चौसा** के पास आया तब शेर खाँ से उसकी मुठभेड़ हो गयी। हुमायूं की सेना हार गयी। चौसा के पास वह स्वयं भी बड़ी मुश्किल से एक भिश्ती की कृपा से गंगा पार करके आगरे आया। आगरे आकर एक वर्ष तक उसने शेर खाँ से लड़ने की तैयारियाँ कीं। अन्त में सन् १५४० ई० में **कन्नौज** के निकट शेर खाँ के मुकाबले मे उसकी हार हुई और उसे देश छोड़कर भागना पड़ा।

शेर खाँ से हारकर हुमायूँ पहले आगरे पहुँचा और वहाँ एक रात ठहर कर आवश्यक सामान लेकर अपने साथियों के साथ चल पड़ा। लाहौर और बीकानेर होता हुआ वह सिन्ध के रेगिस्तान में पहुँचा। वहाँ अमरकोट नामक स्थान पर उसकी स्त्री हमीदा बेगम के गर्भ से एक पुत्र (अकबर) का जन्म हुआ (१५४२ ई०) जो आगे चलकर भारत का बड़ा प्रतापी सम्राट् हुआ। इस आपत्ति के समय उसके किसी भाई ने उसकी सहायता न की। निराश होकर भटकता हुआ वह फ़ारस पहुँचा। फारस के बादशाह ने उसे अपने यहाँ आश्रय दिया। इस प्रकार हुमायूँ को १५ वर्ष (१५४० से १५५५ ई० तक) विदेशों में व्यतीत करने पड़े।

शेर शाह

शेर शाह का शासन-प्रबन्ध—हुमायूँ को हरा कर और उसे देश से निकाल कर शेर खाँ दिल्ली और आगरे का स्वामी बना। अब उसने अपना नाम शेर खाँ के स्थान पर शेर शाह रख लिया। बादशाह होते ही उसने शासन-प्रबन्ध की ओर ध्यान दिया। पहले उसने बंगाल, रणथम्भोर और ग्वालियर को जीत कर अपने साम्राज्य का विस्तार बढ़ाया। वह बहुत योग्य तथा

परिश्रमी शासक था। अपने साम्राज्य को उसने सुविधा के विचार से छोटे-छोटे भागों में विभक्त कर दिया। उसने माल-गुज़ारी का वहुत उत्तम प्रवन्ध किया। प्रजा से उपज का चौथाई भाग लिया जाता था। उसने सरदारों को जागीरें देने की प्रथा विल्कुल बंद कर दी। प्रत्येक कर्मचारी को नगद वेतन दिया जाता था। न्याय का भी अच्छा प्रवन्ध था। शेर शाह ने
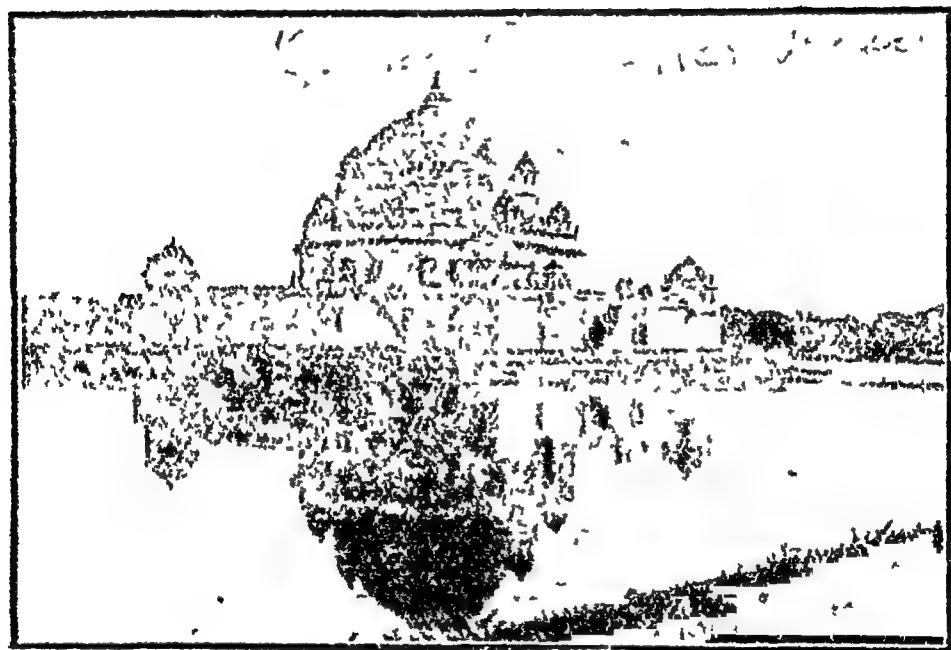
शेर शाह का मक़बरा (सहसराम)

आने-जाने की सुविधा के लिये कई सड़कें वनवायीं और उनके किनारे छायादार वृक्ष लगवा दिये। डाक का भी प्रबन्ध था। वह शासन-सम्बन्धी हर एक बात की देख-भाल स्वयं करता था और पक्षपात से बिल्कुल काम न लेता था।

सन् १५४५ ई० में कालिंजर के क़िले में एक गोले से

बारूद में आग लग जाने के कारण शेर शाह की मृत्यु हो गयी।
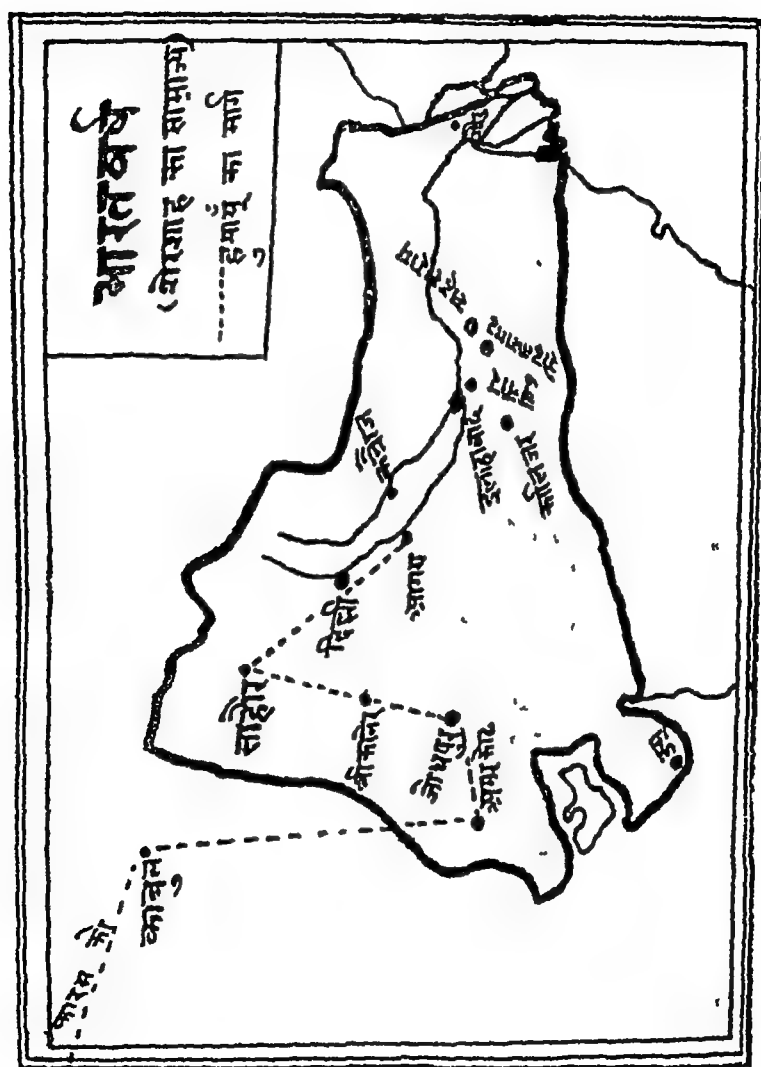
शेर शाह की मृत्यु के बाद उसके वंशवालों में परस्पर झगड़ा शुरू

हो गया। न तो उनमें शेर शाह की भी योग्यता थी और न वे उसके समान बलवान ही थे। हुमायूँ ने इस समय फारस के शाह की सहायता से पुनः भारतवर्ष को जीतने की चेष्टा की। वह और उसका सेनापति बैरम खाँ सिन्ध को पार करके भारत में आ गये और पंजाब पर उन्होंने अधिकार कर लिया। शेर शाह के वंशजों
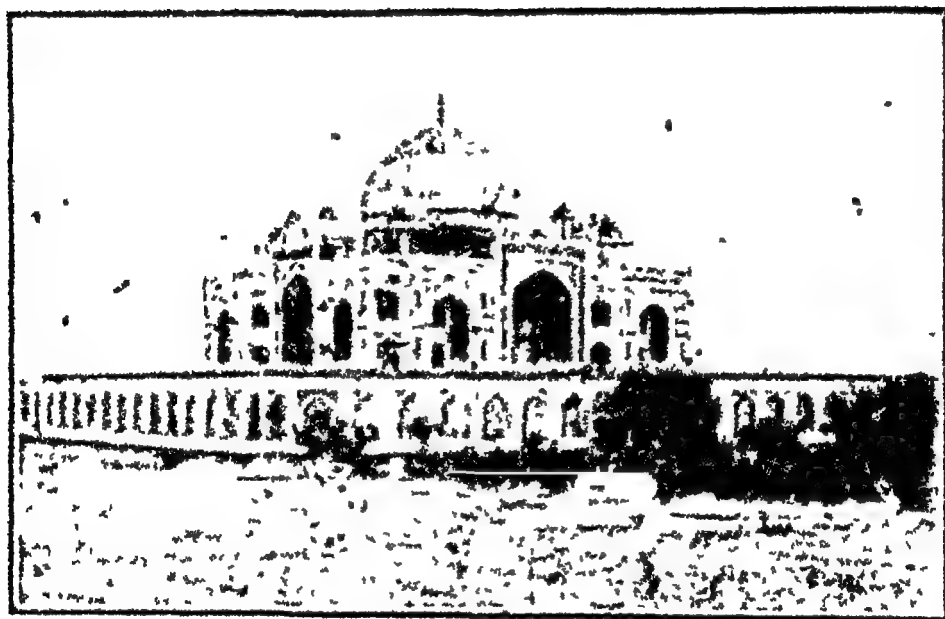
हुमायूँ का मकबरा

से उसकी कई लड़ाइयाँ हुई और अन्त में उसने दिल्ली को जीत कर पुनः अपने अधिकार में कर लिया (१५५५ ई०)। परन्तु वह अधिक दिन जीवित न रह सका। अगले ही वर्ष अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर वह मर गया (१५५६ ई०)।

इस प्रकार इस अभागे बादशाह की, जो अपने जीवन भर इधर से उधर लुढ़कता फिरा, लुढ़क कर ही मृत्यु हुई।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में दिखाओ—

(क) दिल्ली, आगरा, कन्नौज, इलाहाबाद, कालिंजर, चुनार, रोहतास-गढ़, सहसराम, लाहौर, बीकानेर, जोधपुर, अमरकोट, काबुल।

(ख) हुमायूँ के देश छोड़ने का मार्ग।

(ग) शेर शाह का साम्राज्य-विस्तार।

याद करो—

तिथियाँ

सन् १५४० ई०—शेर शाह गद्दी पर बैठा।

सन् १५४२ ई०—अकबर का जन्म।

सन् १५४५ ई०—शेर शाह की मृत्यु।

सन् १५५५ ई०—हुमायूँ ने पुनः दिल्ली पर अधिकार किया।

सन् १५५६ ई०—हुमायूँ की मृत्यु।

चित्र-चर्चा

इस अध्याय के चित्रों में एक चित्र शेर शाह का है। वह गद्दी पर बैठा है। सिर पर ताज है, पीछे मसनद लगी हुई है। हाथ में तलवार है। इसका विस्तृत वर्णन अपनी कापी में लिखो।

हुमायूँ के मकबरे का चित्र देखो। यह मक़बरा दिल्ली में है। हुमायूँ वहीं दफ़न हुआ था। उसकी बेगम ने अपने पति की यादगार में यह मक़बरा बनवाया था। इसमें मुग़ल वंश के बहुत से लोगों की क़ब्रें हैं।

यह मक़बरा इतना सुन्दर बना है कि आगरे के ताजमहल के बाद दूसरा नंबर इसीका है।

अध्याय २५

सम्राट् अकबर

(१५५६–१६०५ ई०)

जब दिल्ली मे हुमायूँ की मृत्यु हुई थी, उस समय उसका पुत्र अकबर वहॉ भी मौजूद न था। वह सेनापति बैरम खाँ के साथ

अकबर

शेर शाह के एक वंशज को परास्त करने के लिये पंजाब गया हुआ था। वहीं उसे अपने पिता की मृत्यु का समाचार मिला। बैरम खॉ ने पंजाब में ही कलानूर नामक स्थान पर अकबर को ताज पहनाया और उसे हुमायूँ के स्थान में बादशाह घोषित कर दिया। किन्तु अभी वह निरा बालक ही था। उसकी अवस्था केवल १३ वर्ष की थी और वह राज-काज सँभालने के लिये सर्वथा अयोग्य था। अतः शासन सम्बन्धी काम करने का भार बैरम खाँ ने अकबर के बड़े होने तक अपने हाथ में लिया।

प्रारम्भिक कठिनाइयॉ—जिस समय अकबर गद्दी पर बैठा, उस समय उसके सामने अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित थीं।

सम्राट् अकबर

एक तो शेर शाह के दो वंशज बचे थे जो मौक़ा पाकर मुग़ल साम्राज्य का नाश करने को तैयार थे। इसके अतिरिक्त आदिल शाह का एक हिन्दू सेनापति, जिसका नाम हेमचन्द्र या हेमू था, मुग़लों का जानी दुश्मन था। हुमायूँ के मरते ही उसने मुग़लों पर चढ़ाई करने की तैयारी की। उधर राजपूत भी अपनी खोयी हुई शक्ति धीरे-धीरे प्राप्त कर रहे थे। ये सब कठिनाइयाँ देख कर कुछ सरदारों ने काबुल लौट चलने की सलाह दी; किन्तु बैरम खाँ ने यहीं ठहर कर सारी आपत्तियों का सामना करने का निश्चय किया।

पानीपत का दूसरा युद्ध (१५५६ ई०)—सबसे पहले हेमू का सामना करना पड़ा। हेमू अपने समय का बड़ा चतुर और वीर सेनापति था। अपनी सेना लेकर उसने चढ़ाई की और दिल्ली की मुग़ल सेना को परास्त करके उस पर अपना अधिकार जमा लिया। फिर पानीपत के मैदान में मुग़ल सेना से उसका घोर युद्ध हुआ। हेमू की आँख में एक तीर आकर लगा जिसके लगते ही वह बेहोश होकर अपने हाथी के हौदे में गिर पड़ा। उसके गिरते ही उसकी सेना में भगदड़ मच गयी। हेमू पकड़ कर अकबर के सामने लाया गया और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। इस प्रकार बैरम के हाथों मुग़ल राज्य के एक बड़े भयानक शत्रु का अन्त हुआ। दिल्ली और आगरा मुग़लों के अधिकार में आ गये और कुछ दिनों में ग्वालियर और जौनपुर भी जीत कर मुग़ल साम्राज्य में मिला लिये गये।

बैरम का पतन—चार वर्ष तक बैरम खाँ राज्य का कर्त्ता-धर्ता बना रहा। इसी बीच में दरबार के कुछ सरदार उसके व्यवहार से असन्तुष्ट रहने लगे थे। अकबर की धाय भी उन्हीं लोगों में से थी जो बैरम से अप्रसन्न थे। अकबर उसको बहुत मानता था। इसके अतिरिक्त अकबर की अप्रसन्नता का एक और भी कारण था। कहते हैं कि बैरम खाँ अकबर के स्थान पर उसके एक चचेरे भाई को तख्त पर बैठाना चाहता था। इन्हीं कारणों से अकबर ने दिल्ली जाकर शासन का सब काम बैरम से छीन कर अपने हाथ में ले लिया। यह देखकर बैरम खाँ ने अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया, परन्तु उसकी हार हुई। अकबर ने अपनी उदारता से बैरम को क्षमा कर दिया। बैरम ने मक्के जाने की इच्छा प्रगट की, परन्तु मार्ग में ही गुजरात के एक अफ़गान ने उसे मार डाला।

चित्तौर-विजय—इस तरह घरेलू झगड़ों से छुट्टी पाकर अकबर ने भारत के उन राज्यों को जीतने की तैयारी की जो अभी तक उसके साम्राज्य की सीमा के बाहर थे। पहले उसने मेवाड़ की राजधानी चित्तौर पर आक्रमण किया। मेवाड़ का तत्कालीन राणा उदयसिंह चित्तौर छोड़ कर पहाड़ियों की ओर चला गया। अन्य राजपूत सरदारों ने वीरतापूर्वक चित्तौर की रक्षा का यत्न किया। अन्त में अकबर की गोली से राजपूत सरदार जयमल्ल की आकस्मिक मृत्यु हो गयी। उसके मरने पर अकबर का चित्तौर पर अधिकार हो गया (१५६७ ई०)। राणा उदयसिंह चित्तौर के स्थान में उदयपुर को अपनी राजधानी
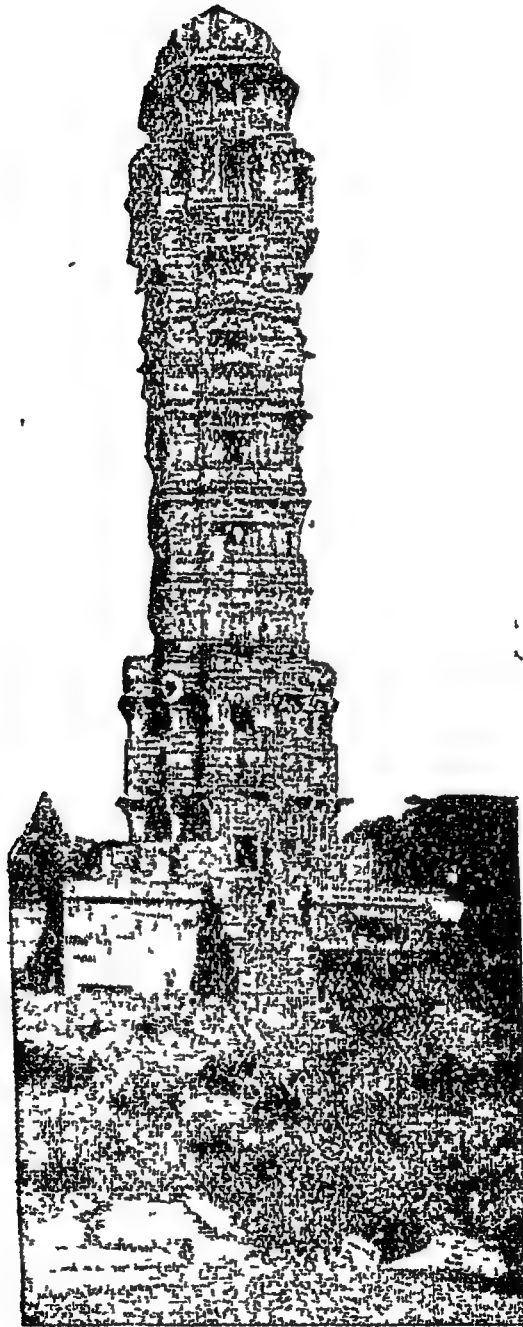
चित्तौरगढ़ का विजयी स्तम्भ

बना कर रहने लगे। उदयसिंह के बाद उनके पुत्र **महाराणा प्रताप** ने चित्तौर पर फिर अधिकार जमाने के उद्देश से जीवन भर अकबर के विरुद्ध युद्ध जारी रखा। मुग़लों से युद्ध करने में उन्हे बड़े-बड़े कष्ट झेलने पड़े, पर उन्होंने अकबर की अधीनता कभी स्वीकार न की। महाराणा प्रताप अपने त्याग और वीरता के लिये आज तक प्रसिद्ध हैं।

चित्तौर के सिवा अन्य स्थानो के राजपूत राजा भी अकबर के अधीन हो गये। अकबर में वीरों की क़द्र करने का गुण था। अतः उसने राजपूतों से मित्र-भाव बनाये रखने की चेष्टा की। इस विचार से उसने एक राजपूत राजकुमारी से विवाह कर लिया और अनेक राजपूत राजाओं से मित्रता करके उन्हें अपनी सेनाओं में उच्च पदो पर नियुक्त कर दिया। इनमे से **आमेर** (जयपुर) के राजा **भगवानदास** और उनके पुत्र **मानसिंह** के नाम अधिक प्रसिद्ध हैं। मानसिह अकबर की सेना के सेनापति थे और उन्होंने अनेक राज्यो पर विजय प्राप्त करके उन्हे मुग़ल साम्राज्य मे मिलाया था।

राजा भगवानदास

अन्य राज्यों पर विजय—राजपूतों से निश्चिन्त होकर अकबर ने अन्य राज्यों को विजय करने की ठानी। **गुजरात** और **बंगाल** जीत लिये गये। पश्चिमोत्तर सीमा पर **काश्मीर, कन्धार, सिन्ध** और **बलोचिस्तान** भी मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत आ

गये। इन प्रान्तों पर अधिकार करने में अकबर को कई वर्ष लगे। उन दिनों उसने **लाहौर** को अपनी राजधानी बना लिया था। दक्षिण की कुछ मुसलमानी रियासतें भी जीत ली गयी थीं। इन युद्धों में **अहमदनगर** की सुल्ताना **चाँद बीबी** ने बड़ी वीरता दिखायी। इन सब विजयों का यह परिणाम हुआ कि मुग़ल साम्राज्य की सीमा उत्तर में **काश्मीर** से लेकर दक्षिण में **अहमदनगर** तक और पूर्व में **आसाम** से लेकर पश्चिम में **काबुल** तक हो गयी।

शासन-सुधार—अकबर की विजयों का उपर्युक्त वृत्तान्त पढ़ कर शायद तुम समझते होगे कि इन्हीं कारणों से अकबर का नाम आज तक इतना प्रसिद्ध है। परन्तु उसकी ख्याति का प्रधान कारण यह नहीं है। चाहे राज्य कितना ही बड़ा हो, बिना उत्तम शासन-प्रबन्ध के कोई शासक बड़ा नहीं कहलाया जा सकता। अकबर को राज्यों के जीत लेने ही से सन्तोष न हुआ। उसने विविध प्रकार के सुधारों द्वारा उत्तम शासन-प्रबन्ध की व्यवस्था भी की। शेर शाह की भाँति उसने भी अपने सारे साम्राज्य को १५ सूबों में बाँट दिया और प्रत्येक का प्रबन्ध करने के लिये एक-एक शासक* नियुक्त कर दिया। मुसलमानों के सिवा उसने हिन्दुओं को भी अच्छे-अच्छे पदों पर नियुक्त किया। उसकी इच्छा थी, कि मेरी प्रजा के हिन्दू तथा मुसलमान परस्पर प्रेम-भाव से हिल-मिल कर रहें; अतः उसने हिन्दुओं को **जज़िया** से मुक्त कर दिया। **टोडरमल** नामक अपने एक मंत्री की सहायता से उसने भूमि की नाप करायी और उपज के विचार

---

* राजकीय पत्रों में सूबेदार "सिपहसालार" कहा जाता था।

से उस पर कर लगाया गया। प्रजा से पैदावार का $\frac{१}{३}$ भाग कर-स्वरूप लिया जाता था।

अकबर ने अपनी सेना में भी कुछ परिवर्तन किया। भिन्न-भिन्न जिलो मे अफ़सर नियुक्त थे और उन्हे अकबर के समय निश्चित वेतन मिलता था। अकबर ने जागीर देने की प्रथा बन्द कर दी। अपने वेतन के अनुकूल ही उन्हें दस, सौ या दो हजार सैनिक बादशाह की फौज को देने पड़ते थे। ये अफसर मनसबदार कहलाते थे।

टोडरमल

अकबर ने सामाजिक सुधार करने का भी उद्योग किया। हिन्दुओं में पति के मर जाने पर स्त्रियाँ उसके शव के साथ जलकर सती हो जाया करती थीं। अकबर ने यह प्रथा एक दम बन्द करने का साहस तो न किया, परन्तु इस सम्बन्ध में जबरदस्ती करना बिल्कुल रोक दिया। हिन्दुओं में उन दिनों बाल-विवाह भी बहुत होते थे। अकबर ने उन्हे रोकने का यथाशक्ति उद्योग किया। युद्ध मे पकड़े हुए सैनिकों को बेचना या उन्हें गुलाम बनाना भी उसने एक दम बन्द कर दिया।

फ़तहपुर सीकरी—अकबर ने अपने जीवन का अधिकांश भाग आगरे के क़िले में व्यतीत किया था; किन्तु आगरे से तेईस मील की दूरी पर सीकरी नामक स्थान भी उसीने बसाया था। इस जगह रहने वाले शेख़ सलीम चिश्ती नामक एक फ़क़ीर की कृपा

महाराणा प्रताप

हल्दी घाटी की लड़ाई

से उसके पुत्र का जन्म हुआ था। इस फ़क़ीर के प्रति कृतज्ञता के भाव से अकबर ने अपने इस पुत्र का नाम भी **सलीम** ही रखा और फ़क़ीर के रहने के स्थान के पास जो नगर बसाया उसका नाम फतहपुर सीकरी रखा। इस नगर में बहुत सुन्दर इमारतें बनवाने में बहुत धन व्यय किया गया। अकबर कुछ दिनों तक तो यहाँ रहा, पर यहाँ का पानी अच्छा न निकला और बादशाह इसे छोड़कर आगरे चला गया। नगर की इमारतें आज तक उसी दशा में खड़ी हैं जैसी वे अकबर के समय में थीं।

दीन इलाही—अकबर की इच्छा थी कि प्रत्येक मनुष्य को जो धर्म अच्छा लगे, वह उसी को माने। उसके दरबार में सब धर्मों के विद्वान् थे—मुसलमान, हिन्दू, ईसाई और बौद्ध। वृहस्पति के दिन रात्रि के समय धार्मिक शास्त्रार्थ हुआ करते थे जिनमें सब धर्मों के विद्वान् सम्मिलित होते थे और बादशाह स्वयं भी बड़े शौक से उनके वाद-विवाद सुना करता था। अकबर के कुछ प्रसिद्ध दरबारी भी इस शास्त्रार्थ में बड़ी दिलचस्पी लेते थे। ये शास्त्रार्थ सुनकर अकबर को विश्वास हो गया कि प्रत्येक धर्म में कुछ न कुछ अच्छी बातें विद्यमान हैं। अपने दरबार के कुछ विद्वानों की सलाह से अकबर ने एक ऐसा नया धर्म चलाने का विचार किया जिसमें प्रत्येक धर्म की बढ़ियाँ शिक्षाएँ सम्मिलित हों और जिसे मान कर सब लोग शान्ति से जीवन व्यतीत कर सकें। इस नये धर्म का नाम **'दीन इलाही'** था।

अकबर ने देख लिया था कि मुसलमान धार्मिक मामलों में आपस में एकदूसरे से झगड़ा करने लगते थे। अतः उसने घोषणा कर दी कि धार्मिक विषयों में झगड़े की बातों में बादशाह का

निर्णय सर्वमान्य होगा और प्रत्येक मुसलमान को उसकी आज्ञा का पालन करना होगा। यह एक बिल्कुल नयी बात थी; इससे बहुत से मुसलमान बादशाह से असन्तुष्ट हो गये।

अकबर के समय के कुछ प्रसिद्ध व्यक्ति—अकबर को योग्य व्यक्तियों की बड़ी पहचान थी। वह जानता था कि कौन व्यक्ति किस काम को भलीभाँति कर सकता है। अतः उसने अपने समय के योग्य व्यक्तियो को छाँट-छाँटकर उन्हे शासन के भिन्न-भिन्न कामो पर नियुक्त कर दिया। इससे उसे अपने राज-काज को सुचारु रूप से चलाने में बड़ी सहायता मिली। इनमे से **मानसिंह** और **टोडरमल** आदि के विषय में तुम पहले ही पढ़ चुके हो। इनके अतिरिक्त और भी कई दरबारी थे। इनमे से **अब्बुलफ़ज़्ल, फ़ैज़ी, बीरबल** और **तानसेन** के नाम अधिक प्रसिद्ध हैं। बीरबल जाति का ब्राह्मण था और बड़ा विद्वान् तथा हाज़िर-जवाब था। उसके अनेक चुटकुले आज तक प्रसिद्ध हैं जिनसे वह अकबर का मनोरंजन किया करता था। तानसेन **ग्वालियर** का रहनेवाला था और बहुत प्रसिद्ध गवैया था। उसकी कब्र ग्वालियर में बनी हुई है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि **तुलसीदास** और **सूरदास** भी इसी समय में हुए थे। तुलसीदास की लिखी हुई **रामायण** और सूरदास का **सूरसागर** हिन्दी-साहित्य के अनमोल ग्रंथ हैं।

अकबर का चरित्र—अकबर की गिनती केवल भारत के ही नहीं वरन् संसार के उच्च कोटि के शासकों में की जाती है। उसमें अपने पूर्वज बाबर और अपने पिता हुमायूँ के सब गुण
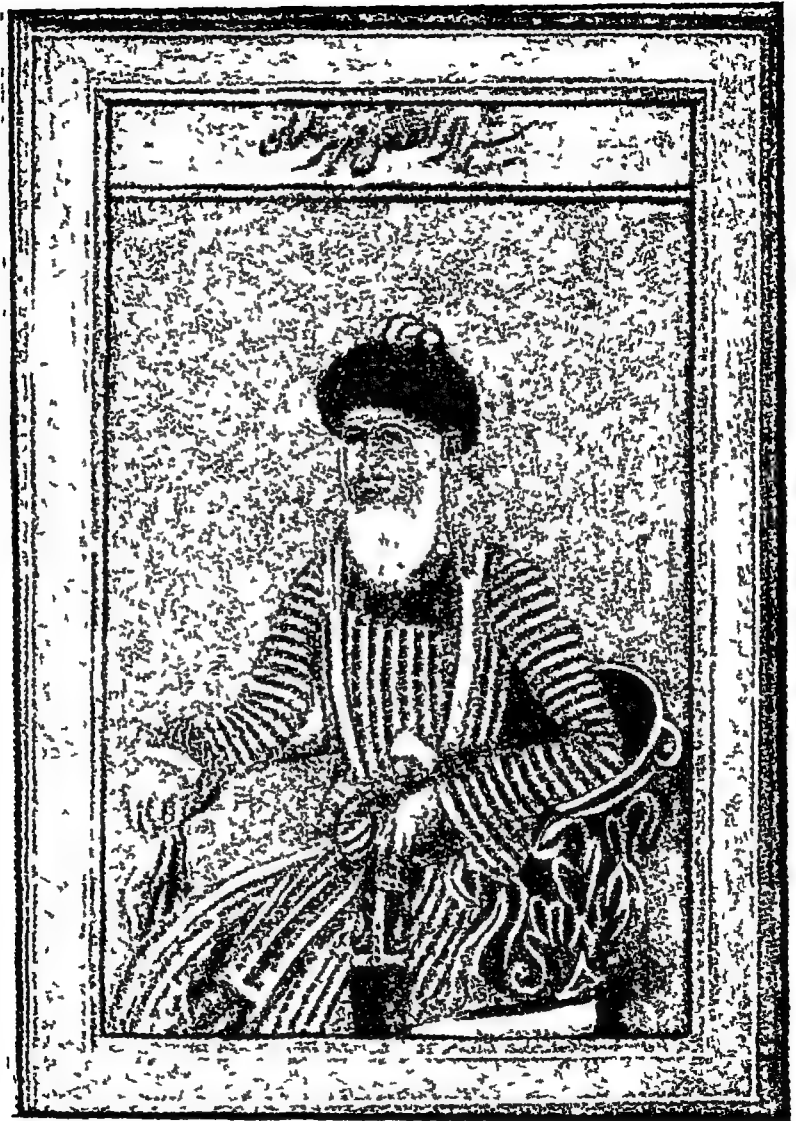
अब्बुल फजल

गोस्वामी तुलसीदास
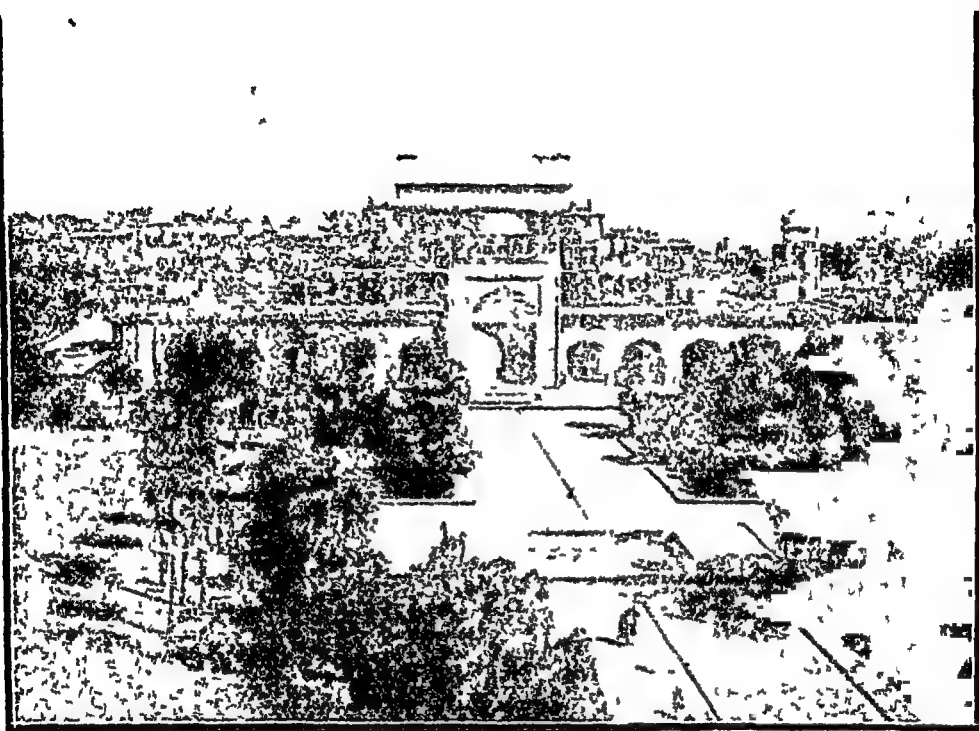
अकबर का मक़बरा, सिकंदरा (आगरा)
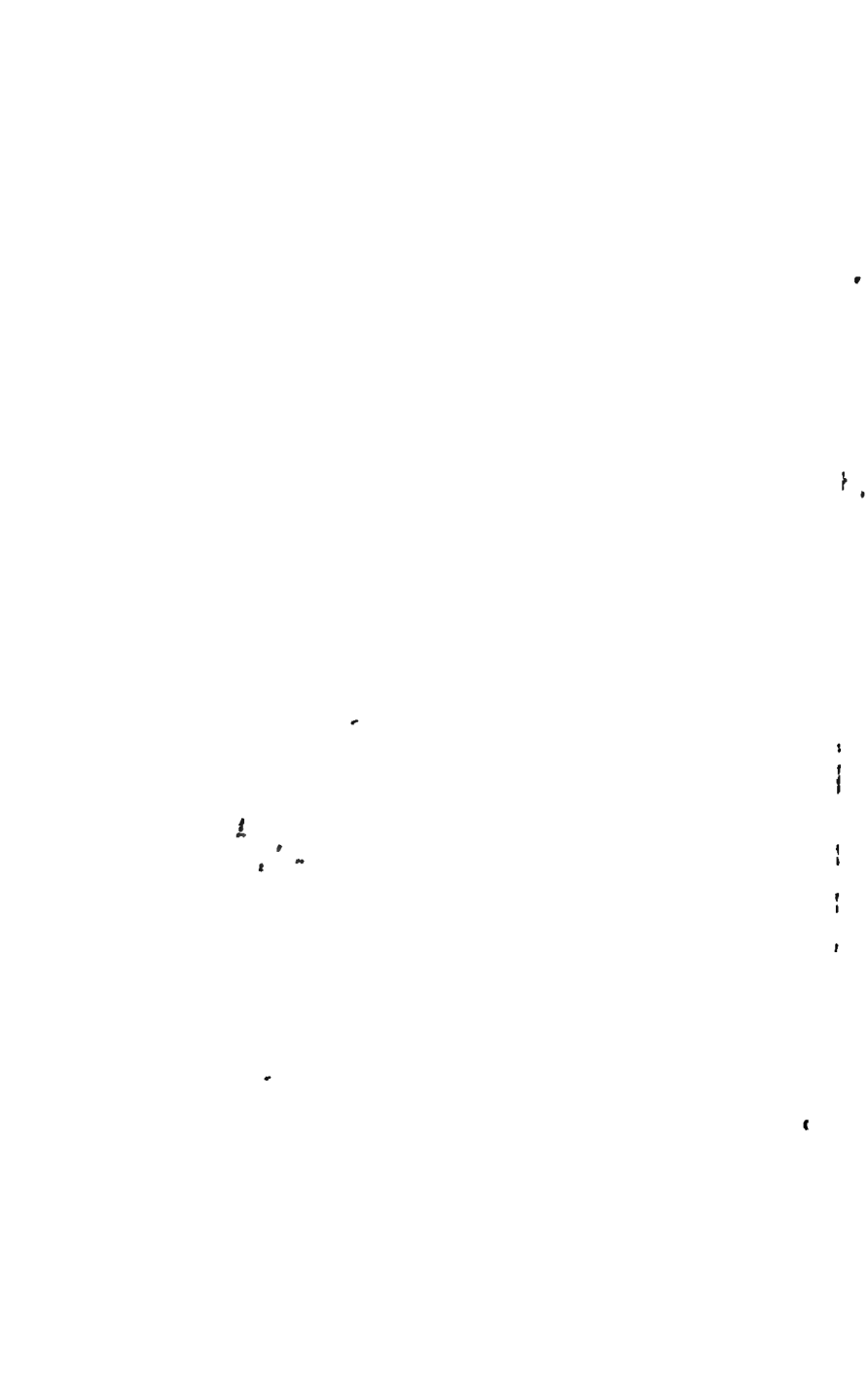
मौजूद थे, पर उनका अवगुण एक भी न था। उसमें बाबर का सा शारीरिक बल था। वह बहुत उदार तथा दयालु था, परन्तु मौका पड़ने पर शत्रु को दंड देने से भी कभी न चूकता था। वह अपनी प्रजा के सब लोगों को एक ही दृष्टि से देखता था तथा सबकी उन्नति समान रूप से चाहता था। वह अपने राज्य का सारा काम स्वयं बड़े परिश्रम से करता था। बाल्यावस्था में उसका पिता अपनी मुसीबतों के कारण उसकी शिक्षा का प्रबन्ध न कर सका था; अतः वह पढ़ना-लिखना नाममात्र को ही जानता था। परन्तु विद्वानों की संगति का प्रेमी होने के कारण उसने अनेक विषयों की बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली थी। उसे आखेट तथा निशानेबाजी का भी शौक़ था।

इन गुणों के अतिरिक्त रंग-रूप और शक्ल-सूरत में भी वह जँचता था। उसका बदन गठीला और भुजाएँ लम्बी थीं। रंग गेंहुआँ था और दृष्टि में विशेष प्रकार का आकर्षण था। उसका रोबीला चेहरा देखकर उसकी स्वाभाविक शूरता का पता चलता था और उसकी मीठी बोल-चाल हरएक का मन मोह लेती थी।

अकबर के इन गुणों के कारण प्रजा उसे प्यार भी करती थी और उसका आदर भी। उसके शासन काल में प्रजा की वैसी ही उन्नति हुई जैसी तुमने अशोक के समय की पढ़ी थी।

अकबर का अन्त—अकबर के तीन पुत्र थे। तीनों ही बड़े शराबी थे जिसके कारण दो तो युवावस्था में ही परलोक सिधार गये। तीसरा सलीम बचा था। वह पिता की आज्ञा बहुत कम मनाता था; इस कारण दोनों में प्रायः मनमुटाव रहा करता था। सलीम ने सन् १६०२ ई० में अकबर के प्रिय मित्र

अकबर समय का
मुगल राज्य
सन १६०० ईस्वी
दिल्ली
राजपुताना
आगरा
मुगल राज्य
मालवा
अलाहाबाद
गंगा नदी
खानदेश
बरार
बिदर
उडिसा
अहमदनगर
गोलकण्डा
बीजापुर
कृष्णा नदी
विजयनगर
मैसूर
पोलिगार
हिन्द महासागर
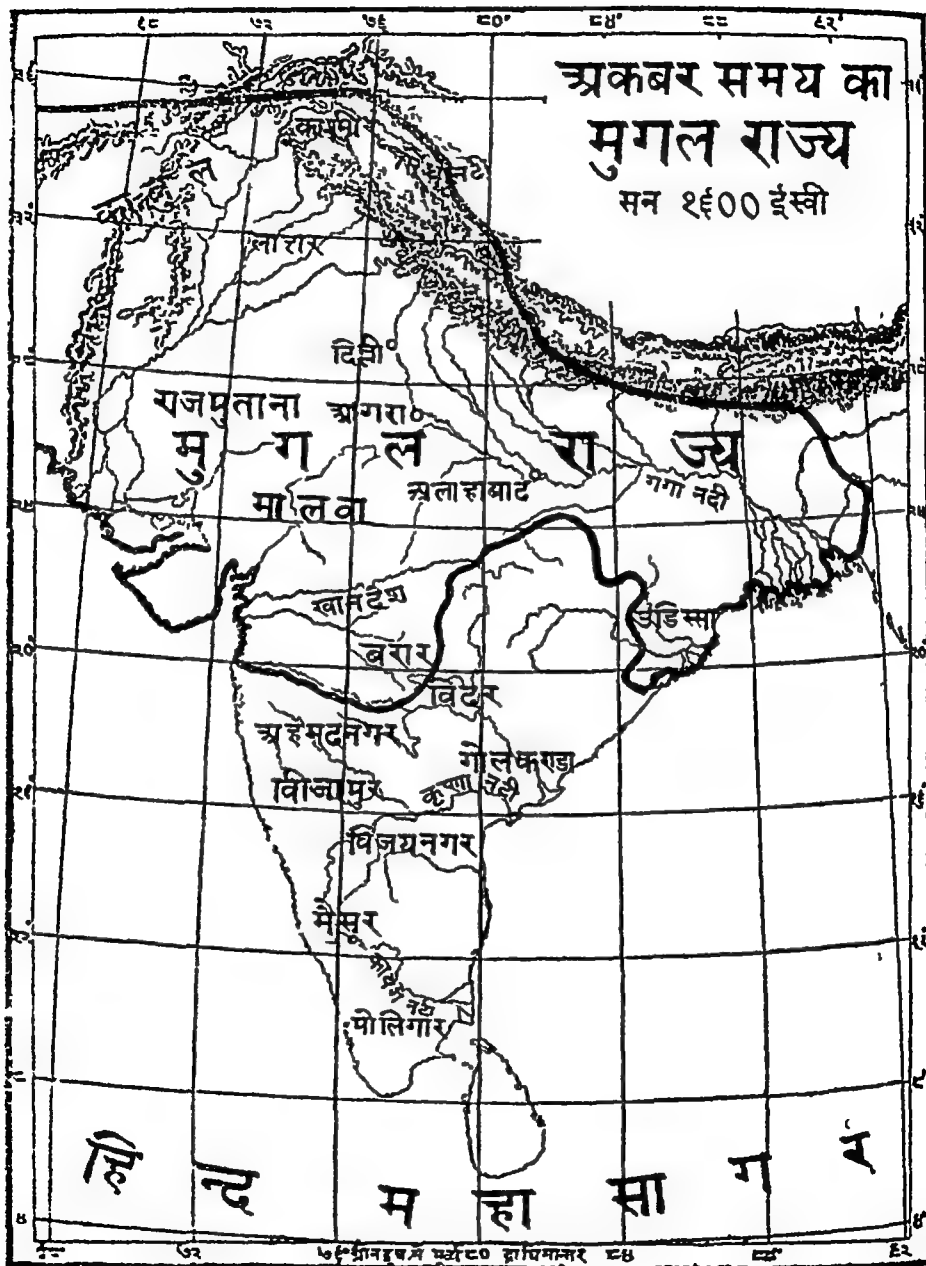
और योग्य मंत्री अब्बुलफ़ज़्ल को मरवा डाला, क्योंकि सलीम उससे जलता था। उसने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह भी किया था। इससे अकबर का मन उसकी ओर से दुःखी रहता था। अब्बुलफ़ज़्ल के मरने का तो उसे ऐसा दुःख हुआ कि वह बहुत रोया और कई दिन तक दरबार में न आया और न भोजन ही किया। अन्त में तीन वर्ष बाद सन् १६०५ ई० में उसकी मृत्यु हो गयी।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में अकबर के साम्राज्य का विस्तार दिखाओ। निम्नलिखित नगर भी दिखाओ—

पानीपत, दिल्ली, आगरा, चित्तौर, इलाहाबाद और काबुल।

याद करो

अब्बुलफ़ज़्ल—यह बड़ा विद्वान् और अकबर का मित्र तथा मंत्री था। बादशाह इसका बड़ा आदर करता था। इसने 'आईने-अकबरी' और 'अकबर-नामा' नामक दो ग्रंथ लिखे थे। 'आईने-अकबरी' से अकबर की शासन-पद्धति के विषय में बहुत सा ज्ञान प्राप्त होता है। 'अकबर-नामा' में अकबर की जीवनी लिखी है। सलीम का विश्वास था कि अब्बुलफ़ज़्ल ही अकबर को उसके विरुद्ध उकसाता रहता है। अतः एक बार जब अब्बुलफ़ज़्ल दक्षिण से लौटकर आ रहा था, तब मार्ग में सलीम ने ओछड़ा के राजा वीरसिंह बुन्देला के हाथों उसे मरवा डाला।

फ़ैज़ी—यह अब्बुलफ़ज़्ल का भाई था। यह भी बड़ा विद्याव्यसनी था और फ़ारसी तथा संस्कृत की अच्छी योग्यता रखता था। शाही पुस्तकालय इसीके अधीन था। इसने गीता का फ़ारसी में अनुवाद किया था।

तिथियाँ

सन् १५५६ ई०—पानीपत का दूसरा युद्ध।
सन् १५६० ई०—बैरम खाँ की मृत्यु।
सन् १५६७ ई०—चित्तौर-विजय।
सन् १६०५ ई०—अकबर की मृत्यु।

चित्र-चर्चा

इस अध्याय के चित्रों में अकबर का चित्र देखो। ध्यान से देखने पर तुम अन्य मुग़ल सम्राटों में और इसके चित्र में कुछ विशेष अन्तर पाओगे। दाढ़ी भी नहीं रखी है। कमर में फेंट है और फेंटे में कटार। बायें हाथ में तलवार लिये हुए है। सिर पर ताज भी पहने है। गले में मोतियों के कुछ हार भी पड़े हुए हैं।

एक चित्र अकबर के मक़बरे का है। सम्राट् का शव आगरे से कुछ दूर सिकंदरा नामक स्थान पर दफ़नाया गया था। यह इमारत लाल पत्थर की बनी है। ऊपरी भाग संगमरमर का बना है। इमारत और क़ब्र दोनों में ही बड़ी सादगी है। क़ब्र के ऊपर लिखा है—'जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर'। सम्राट् का पूरा नाम यही था।

प्रश्न

१. बैरम खाँ के पतन के क्या कारण थे?

२. अकबर ने किन-किन शासन-सुधारों द्वारा अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाया? संक्षेप में बताओ। इसके पहले किस मुसलमान शासक ने ऐसे सुधार किये थे?

३. हिन्दुओं के प्रति और विशेषकर राजपूतों के प्रति अकबर कैसी नीति काम में लाता था? उसका क्या परिणाम हुआ?

४. निम्नलिखित व्यक्तियों ने अकबर के शासन-काल में कौन-कौन से काम किये—

(क) टोडरमल और

(ख) मानसिंह ।

५. मान लो कि तुमने सम्राट् अकबर को अपनी आँखों से देखा था। उसके सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें बताओ—

(क) उसका रंग-रूप ।

(ख) उसकी सूरत-शक्ल ।

(ग) उसका स्वभाव ।

६. यदि तुम्हें अकबर और बीरबल का कोई चुटकुला याद हो तो सुनाओ ।

७. निम्नलिखित पर छोटे ऐतिहासिक नोट लिखो—

(क) हेमू ।

(ख) मनसबदारी प्रथा ।

(ग) दीन इलाही ।

ड्रामा

नीचे **अकबर और बैरम खाँ** नामक ड्रामा के दृश्य और उनका संक्षिप्त विवरण किया जाता है। अपने अध्यापक की सहायता से यह ड्रामा कक्षा में खेलो ।

पहला दृश्य

स्थान—कलानूर (पंजाब)—एक साधारण चबूतरा ।

अकबर को ताज पहनाया जाना—मुगल सरदारों का हिम्मत हारना—काबुल लौट चलने की सलाह—बैरम का ढाढ़स बँधाना ।

दूसरा दृश्य

स्थान—पानीपत का युद्ध-स्थल।

बैरम खाँ का अकबर के सामने हेमू को गिरफ्तार करके लाना—हेमू की एक आँख लहू-लुहान है। अकबर का हेमू को मारने से इन्कार—बैरम का उसका सर उड़ा देना।

तीसरा दृश्य

स्थान—आगरा।

बैरम खाँ के विरुद्ध बढ़ते हुए असन्तोष पर अकबर का विचार—दिल्ली जाकर शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने का निश्चय।

चौथा दृश्य

स्थान—दिल्ली।

शासन की बागडोर स्वयं हाथ में लेकर बैरम खाँ के पास अपने निश्चय की सूचना भेजना और उसे मक्के जाने की सलाह देना।

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—शिवालिक पहाड़ की तलहटी में कोई जगह।

बैरम खाँ का अकबर के सामने लाया जाना—अकबर का क्षमादान—बैरम का मक्के को प्रस्थान।

अध्याय २६

जहाँगीर

(१६०५–१६२७ ई०)

अकबर की मृत्यु हो जाने पर उसका पुत्र शाहजादा सलीम गद्दी पर बैठा। सम्राट् होते ही उसने अपना नाम जहाँगीर रख लिया। जहाँगीर का चरित्र अपने पिता से बिल्कुल भिन्न था; परन्तु उसने एक बुद्धिमानी की कि राज्य का काम उसी तरह चलने दिया जैसे कि उसके पिता के समय में चलता था। धार्मिक विषयों में उसने अकबर की नीति का अक्षरशः अनुसरण नहीं किया, और अन्य धर्मों से भी

जहाँगीर

उसे घृणा नथी; किन्तु अकबर की भाँति उसने भी हिन्दुओं को ऊँचे-ऊँचे पदों पर अपना कर्मचारी बनाया। वह स्वभाव से ही विलासी और मनमौजी था। उसके दो भाई तो शराब पीने के कारण मर ही गये थे; वह स्वयं भी शराब का बड़ा शौकीन था। पर उसमें एक बात अच्छी थी। वह यह कि आवश्यकता आ पड़ने पर

वह उसे छोड़ भी सकता था; और जब उसे कार्य करना ज़रूरी हो जाता था, तब वह तुरन्त ही उसे करने को उद्यत हो जाता था।

खुसरो का विद्रोह—अपने इस स्वभाव का परिचय उसने अपने शासन काल के प्रारंभिक वर्षों में ही दे दिया। तुम पढ़ चुके हो कि जब अकबर जीवित था, उस समय पिता-पुत्र मे प्रायः अनबन रहा करती थी। शायद इसी विचार से अकबर ने किसी समय जहाँगीर के स्थान मे उसके पुत्र **खुसरो** को अपना उत्तराधिकारी बनाने का विचार किया होगा। अकबर के मरने पर जब जहाँगीर सम्राट् हो गया, तब खुसरो की सब आशाओं पर पानी फिर गया। खुसरो ने यह देख कर अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया, परन्तु बेचारे की हार हुई। जहाँगीर ने उसकी आँखों के पपोटे सिलवा दिये और उसे कैद मे डाल दिया। खुसरो के दो मुख्य सहायकों में से एक को बैल और दूसरे को गधे की खाल पहना कर सारे शहर में घुमाया। इसी विद्रोह के सिलसिले में जहाँगीर ने सिक्खों के नेता **गुरु अर्जुनसिंह** को इतना कठोर दंड दिया कि उनके प्राण ही निकल गये। गुरु का अपराध यह बताया जाता था कि उन्होंने विद्रोही शाहज़ादे को धन देकर सम्राट् के विरुद्ध सिर उठाने में सहायता दी थी।

नूरजहाँ से शादी—सन् १६११ ई० में जहाँगीर ने **नूरजहाँ** से विवाह कर लिया जो इससे पहले **शेर अफ़गन** नामक एक अफ़ग़ान की पत्नी थी। जहाँगीर अकबर के सामने ही से नूरजहाँ को प्यार करता था। नूरजहाँ का पिता और भाई दरबार में नौकर थे। अकबर नहीं चाहता था कि शाहज़ादे सलीम की शादी एक साधारण कुल की कन्या से हो; अतः उसने
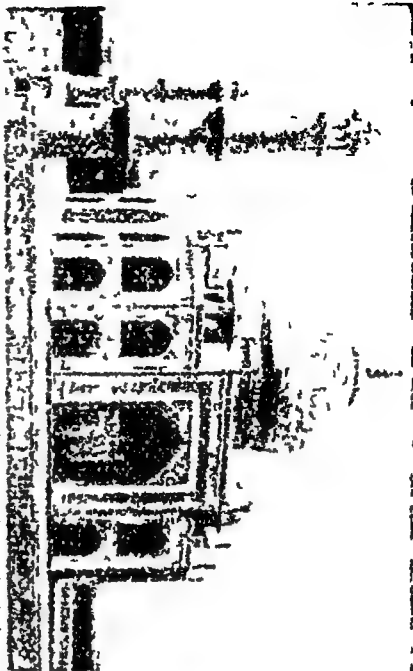
The Taj from the Corner of the Quadrangle Agra (India)

The Gate of Taj Mahal Agra (India)
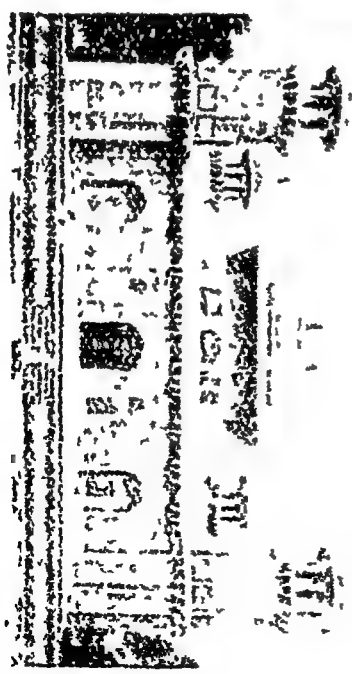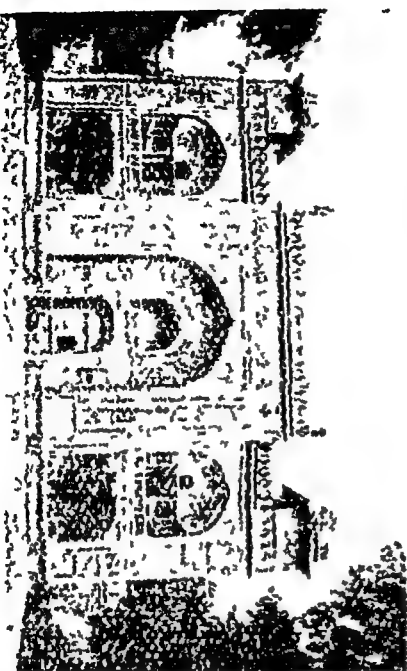
ऊपर— ताजमहल

नीचे—एतमादउद्दौला का मक़बरा

नूरजहाँ की शादी अपनी सेना के अफ़सर शेर अफ़गन से करा दी और उसे **बंगाल** भेज दिया। जब शेर अफ़गन मर गया, तब जहाँगीर ने नूरजहाँ को आगरे बुला लिया और कुछ समय पश्चात् दोनों का विवाह हो गया। नूरजहाँ बहुत बुद्धिमती तथा रूपवती थी। जहाँगीर पर उसका बड़ा प्रभाव था। धीरे-धीरे यह प्रभाव यहाँ तक बढ़ा कि नूरजहाँ ही वास्तव में शासन करने-वाली बन गयी, क्योंकि जहाँगीर उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ न करता था। जहाँगीर ने **काश्मीर** में बड़े सुन्दर बाग़ लगवाये थे और हर वर्ष वह गरमी का मौसिम नूरजहाँ के साथ वहीं जाकर बिताया करता था।

मेवाड़ और अहमदनगर पर विजय—अकबर ने अहमद-नगर तो जीत लिया था, किन्तु जहाँगीर के गद्दी पर बैठने के थोड़े ही दिन पीछे अहमदनगर के मंत्री **मलिक अम्बर** ने मुग़लों को अहमदनगर से निकाल दिया। जहाँगीर ने अपने पुत्रों में से शाहज़ादा **खुर्रम** को सेना देकर उसे परास्त करने के लिये भेजा। सन् १६१४ ई० में उसने पहले **मेवाड़** के महाराणा प्रताप के पुत्र राणा **अमरसिंह** पर विजय प्राप्त करके उसे मुग़लों की अधीनता स्वीकृत करने को विवश किया। इसप्रकार मेवाड़ का वह राज्य, जिसे अकबर भी अपने अधीन न कर सका था, अब मुगलों के अधीन हो गया। वहाँ से चलकर खुर्रम ने बड़ी कठिनता से मलिक अम्बर को हराकर उसे मुग़लों के अधीन किया। खुर्रम की इन जीतों से जहाँगीर उससे इतना प्रसन्न हुआ कि उसे **शाहजहाँ** की उपाधि से विभूषित कर दिया।

ख़ुर्रम का विद्रोह—परन्तु बाप-बेटे मे ये भाव अधिक दिनो तक न बने रह सके। साम्राज्य का उत्तराधिकारी कौन हो, इस प्रश्न पर झगड़ा उठ खड़ा हुआ। जहाँगीर के चार पुत्र थे—खुसरो, परवेज, ख़ुर्रम और शहरयार। इनमे से खुसरो का क्या हाल हुआ, इसका वर्णन तुम पहले ही पढ़ चुके हो। रह गये तीन। इनमे से परवेज जहाँगीर का कृपापात्र था। परन्तु नूरजहाँ सम्राट् के चौथे पुत्र

नूरजहाँ

शहरयार को उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी, क्योकि उसकी शेर अफ़ग़न से उत्पन्न लड़की शहरयार को ही व्याही थी। ख़ुर्रम ने अपने लिये कोई स्थान न देखकर विद्रोह करना निश्चित किया; पर वह इस विद्रोह मे सफल न हो सका। हार कर ख़ुर्रम को अपने पिता से क्षमा माँगनी पड़ी।

महाबत खाँ का विद्रोह—खुर्रम के विद्रोह के अतिरिक्त सेनापति महाबत खाँ का विद्रोह भी उल्लेखनीय है। महाबत खाँ की पुत्री का व्याह शाहज़ादा परवेज के साथ हुआ था। अतः वह चाहता था कि सिंहासन का अधिकारी परवेज बने, पर नूरजहाँ के सामने उसकी कुछ न चल सकती थी। अन्त में उसने एक चाल चली। एक बार जब सम्राट् एक विद्रोह शान्त करने के लिये काबुल
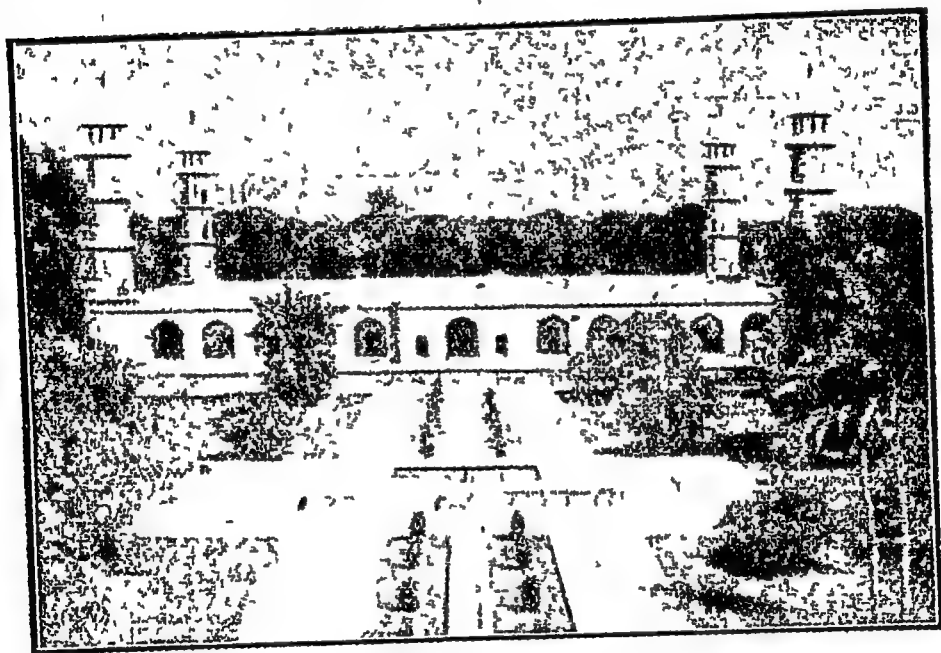
जहाँगीर का मक़बरा

जा रहा था, तब उसने मार्ग में सम्राट् को घेर लिया और पकड़ कर अपने डेरे में ले आया। धीरे-धीरे नूरजहाँ ने ऐसा उपाय किया कि महाबत खाँ को शाहजहाँ के पास दक्षिण की ओर भाग जाना पड़ा।

जहाँगीर की मृत्यु—जब जहाँगीर काबुल का विद्रोह

शान्त करके लौटा, तब वह फिर काश्मीर चला गया। इस बार उसका स्वास्थ्य खराब हो गया और लौटते समय मार्ग मे उसकी मृत्यु हो गयी (१६२७ ई०)। उसका शव **लाहौर** में गाड़ा गया। नूरजहाँ ने पीछे उस स्थान पर एक मक़बरा बनवा दिया। इसी मक़बरे मे **नूरजहाँ** की भी क़ब्र है, जिसकी मृत्यु बाद मे सन् १६४६ ई० मे हुई। यद्यपि अपने पति के मरने के १९ वर्ष बाद तक वह जीवित रही, परन्तु उन दिनों उसने शासन सम्बन्धी कामो से अपना हाथ खींच लिया था और वह किसी बात में हस्तक्षेप न करती थी।

पिता की मृत्यु के बाद **खुर्रम** आगरे आ गया और **शाहजहाँ** के नाम से सन् १६२८ ई० में सम्राट् बनाया गया।

भारत में अंग्रेजी राजदूत—जहाँगीर के शासन काल में **विलियम हाकिन्स** नामक एक अंग्रेज उसके दरबार में आगरे आया। वह यहाँ कई वर्ष रहा। उसने मुगल दरबार का वर्णन लिखा है। उसने लिखा है कि दरबार का दैनिक व्यय ५० हज़ार रुपया था। सन् १६१५ ई० में **सर टामस रो** नामक एक दूसरा राजदूत इंग्लैण्ड के राजा जेम्स की ओर से भारत में आया था। उसने जहाँगीर तथा अन्य दरबारियो को अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ भेंट की थी। जहाँगीर ने उससे प्रसन्न होकर सूरत में अंग्रेजों को अपनी व्यापारी कोठी बनाने की आज्ञा दे दी थी।

अभ्यास

तिथियाँ

याद करो—

सन् १६११ ई०—जहाँगीर की नूरजहाँ से शादी।
सन् १६१५ ई०—सर टामस रो भारत में आया।
सन् १६२७ ई०—जहाँगीर की मृत्यु।

चित्र-चर्चा

इस अध्याय में एतमादउद्दौला के मक़बरे का चित्र देखो। एतमाद-उद्दौला जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ का पिता था। यह मक़बरा उसीका है, जो आगरे में यमुना के किनारे पर बना है। यह बहुत सुन्दर बना हुआ है। बाहर की ओर दीवारों पर कैसा सुन्दर काम हो रहा है, यह तुम चित्र देखकर ही जान सकते हो।

प्रश्न

१. खुसरो कौन था? उसने अपने पिता के विरुद्ध क्यों विद्रोह किया? जहाँगीर ने उसके साथ क्या बर्ताव किया?
२. यह अध्याय पढ़कर तुम नूरजहाँ को कैसी स्त्री समझते हो? उसके चरित्र की तुलना रज़िया के चरित्र से करो।
३. खुर्रम के विद्रोह करने के क्या कारण थे? नूरजहाँ शहरयार को क्यों उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी?
४. निम्नलिखित पर छोटे-छोटे ऐतिहासिक नोट लिखो—
   (क) गुरु अर्जुनसिंह।
   (ख) मलिक अम्बर।
   (ग) सर टामस रो।

अध्याय २७

मुग़लों का वैभव उन्नति के शिखर पर

शाहजहाँ

(१६२८–१६५८ ई०)

जिस समय शाहजहाँ का राज्याभिषेक हुआ, उसकी अवस्था ३५ वर्ष की थी। गद्दी पर बैठने के पहले उसे कई घटनाओं का सामना करना पड़ा था, अतः उसे शासन सम्बन्धी अनेक बातों का अनुभव हो चुका था। उसके शासन काल में मुग़ल साम्राज्य का वैभव उन्नति के शिखर पर पहुँच गया। वह बहुत शान-शौकत-पसन्द बादशाह था और उसे सुन्दर इमारतें बनवाने का बहुत शौक था। उसका जन्म एक **राजपूत राजकुमारी** के गर्भ से हुआ था। अकबर और जहाँगीर की तरह उसने भी हिन्दुओं को उच्च पदों पर नौकर रखा, यद्यपि हिन्दुओं के साथ उसका व्यवहार वैसा अच्छा न था। वह अपनी राजधानी आगरे में बड़े-बड़े दरबार किया करता था और अपनी प्रजा को दर्शन देता था। इन गुणों के कारण वह अपनी प्रजा का प्यारा बन गया।

मुम्ताज़ महल की मृत्यु—शाहजहाँ अपनी बेगम मुम्ताज़ महल को बहुत प्यार करता था। मुम्ताज महल **नूरजहाँ** के भाई आसफ़ खाँ की बेटी थी। वह शाहजहाँ के सुख-दुःख की सच्ची साथिन थी। सन् १६३१ ई० मे मुम्ताज महल का परलोकवास हो गया। उसकी मृत्यु का शाहजहाँ को बहुत दुःख हुआ। इसी

शोक में उसने एक सप्ताह तक न तो झरोखे में बैठकर अपनी प्रजा को दर्शन ही दिये और न किसी राजकीय काम में हाथ लगाया। अपनी बेगम की स्मृति में उसने आगरे में एक बड़ा

ताज महल

सुन्दर रौजा तैयार कराया जो ताज बीबी का रौज़ा या ताज महल कहलाता है। यह रौज़ा इतना सुन्दर है कि ससार का और कोई रौज़ा इसकी बराबरी नहीं कर सकता। प्रतिवर्ष संसार के अनेक यात्री इसे देखने भारत में आते हैं। यह सफेद संगमरमर का बना है और एक सुन्दर बाग़ के बीच में स्थित है। यह संसार के सब आश्चर्यजनक पदार्थों में से एक है।

ख़ानजहाँ का विद्रोह—शाहजहाँ एक कुशल सेनानायक भी था। तुम्हे याद होगा कि जहाँगीर ने दक्षिण के विद्रोहों को दबाने के लिये उसीको भेजा था, जहाँ उसने विजय प्राप्त की

थी। नूरजहाँ की नीति से असन्तुष्ट होकर जब उसने विद्रोह किया था, तब वह अपनी सेना को ख़ानजहाँ नामक एक सेनापति की अध्यक्षता में छोड़ आया था। उसके बाद इसी ख़ानजहाँ ने मुग़ल सेना का संचालन किया था। सन् १६२९ ई० में खानजहाँ ने शाहजहाँ के विरुद्ध विद्रोह किया। खानजहाँ विफल रहा और मारा गया।

पुर्तगालवालों का दमन—पुर्तगाल देश के बनिये हुगली के पास व्यापार करते थे। इन लोगों ने अपने कुव्यवहार से शाहजहाँ को अप्रसन्न कर दिया। ये लोग छोटे-छोटे बालकों को पकड़ कर ईसाई बना लेते थे और दास-व्यापार भी करते थे। बङ्गाल के हाकिम क़ासिम खाँ ने इन पर चढ़ाई करके इनको हराया, किन्तु इनके साथ बहुत निर्दयता का व्यवहार किया। पुर्तगालवालों के दब जाने से अंग्रेजों का बड़ा लाभ हुआ।

दक्षिण की रियासतों की जीत—इस विद्रोह से छुट्टी पाकर सम्राट् ने दक्षिण की मुसलमानी रियासतों की ओर अपनी दृष्टि फेरी। तुम पढ़ चुके हो कि अकबर और जहाँगीर दोनों ने ही अहमदनगर को जीतने के विचार से उस पर चढ़ाई की थी। इन चढ़ाइयों का परिणाम यह हुआ था कि सारा अहमदनगर तो नहीं, किन्तु उसका कुछ भाग मुग़ल साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया था। शाहजहाँ ने अहमदनगर पर चढ़ाई करके अपने पुरखों का काम पूरा किया और सारे अहमदनगर को अपने साम्राज्य में मिला लिया। अब गोलकुण्डा और बीजापुर की बारी आयी। इन दोनों रियासतों ने भी हार

कर मुग़लों का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। इसप्रकार अहमद्-नगर तो सब का सब और इन दोनों रियासतों का कुछ भाग

शाहजहाँ

मुग़लों के अधीन हो गया। इसके प्रबन्ध के लिये सम्राट् ने अपने पुत्र औरंगज़ेब को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया।

कन्धार का खोना—काबुल और कन्धार के प्रान्त मुग़ल सम्राटों को सदैव कष्ट देते रहते थे। कन्धार जहाँगीर के शासन काल में मुगलों के हाथ से निकल गया था और उस पर फ़ारस के बादशाह का अधिकार हो गया था। शाहजहाँ के समय में कन्धार के सूबेदार ने मुग़लों से रिशवत लेकर यह सूबा शाहजहाँ को दे दिया। सन् १६४८ ई० में फ़ारसवालों ने फिर कन्धार जीत लिया। शाहजहाँ ने अपने पुत्रों औरंगज़ेब तथा

दारा को फ़ारसी सेना के विरुद्ध युद्ध करने को भेजा, किन्तु उनकी हार हुई। कन्धार मुग़लो के हाथ से निकल गया और औरंगज़ेब हार कर दक्षिण चला गया।

गोलकुण्डा और बीजापुर में फिर युद्ध—इस बार दक्षिण में आने पर औरंगज़ेब ने गोलकुण्डा के विरुद्ध फिर युद्ध करने की ठानी। कारण यह था कि **गोलकुण्डा** के सुल्तान की, अपने मन्त्री **मीर जुमला** से अनबन हो गयी थी। विवश होकर मीर जुमला ने औरंगज़ेब से सहायता माँगी। औरंगज़ेब सहायता देने के लिये तैयार हो गया और उसने मीर जुमला को साथ लेकर गोलकुण्डा पर चढ़ाई कर दी। **गोलकुण्डा** तथा **बीजापुर** की रियासतों के साथ उसने एक वर्ष तक घोर युद्ध किया। इसी बीच में उसे समाचार मिला कि सम्राट् बीमार हैं, अतः उसने शीघ्र आगरे की ओर प्रस्थान किया।

साम्राज्य के लिये युद्ध—शाहजहाँ के चार बेटे थे। सबसे बड़े बेटे का नाम नाम **दारा** था। वह अपने पिता को शासन सम्बन्धी कामों मे सहायता देने के लिये आगरे में ही रहा करता था। शेष तीन पुत्रों के नाम थे—**शुजा, औरंगज़ेब** और **मुराद**। ये चारों के चारों सम्राट् बनने की इच्छा रखते थे। शाहजहाँ की बीमारी मे ही यह अफवाह फैल गयी कि सम्राट् की मृत्यु हो गयी है और बड़ा पुत्र दारा सम्राट् हो गया है। वास्तव में न अभी शाहजहाँ की मृत्यु ही हुई थी और न दारा सम्राट् ही बना था। हाँ, युवराज की हैसियत से वह सम्राट् के अस्वस्थ होने के कारण राज-काज संभाले हुए था। शेष तीनों पुत्रो ने दारा से लड़कर

साम्राज्य अपने-अपने अधिकार में करने का विचार किया। अतः गद्दी प्राप्त करने की लालसा से भाई-भाइयों में लड़ाई छिड़ी। पहले शुजा अपनी फ़ौज लेकर आया, परन्तु दारा की ओर से आये हुए राजा जयसिंह ने उसे हरा दिया। वह परास्त होकर बंगाल की ओर भाग गया। उधर औरंगज़ेब ने मुराद को यह कह कर अपनी ओर मिला लिया कि सम्राट् होने पर मैं आधी सल्तनत तुम्हें दे दूँगा। इन दोनों ने मिलकर दारा से युद्ध करने की तैयारी की। आगरे के पूर्व में चंबल नदी के किनारे सामूगढ़ नामक स्थान पर दोनों सेनाओं में भीषण संग्राम हुआ। दारा की सेना भाग खड़ी हुई और वह राजपूताने की ओर भाग गया।

इस युद्ध में विजयी होकर औरंगज़ेब ने आगरे पर अधिकार कर लिया और बूढ़े पिता शाहजहाँ को अपना बन्दी बना लिया। अब उसके भाई रह गये थे। मुराद को, जिसे उसने आधी सल्तनत देने का वादा किया था, उसने एक दिन शराब के नशे में गिरफ्तार कर लिया और बन्दी बना कर ग्वालियर के क़िले मे भेज दिया। बाद में औरंगज़ेब की आज्ञा से उसका वध कर डाला गया। दारा को भी पकड कर उसके पुत्रों के सहित मार डाला। इसीप्रकार शुजा भी हार कर भाग गया और फिर कभी लौट कर नहीं आया। अब औरंगज़ेब से गद्दी के लिये झगड़ा करनेवाला कोई न बचा और वह मुग़ल-साम्राज्य का स्वामी बन गया (१६५८ ई०)।

शाहजहाँ ने अपने जीवन के अन्तिम सात-आठ वर्ष क़ैद में

काटे। इन दिनों उसकी बड़ी पुत्री जहाँनारा अपने बूढ़े पिता की सेवा करती रहती थी। सन् १६६६ ई० मे वह परलोकगामी हुआ। उसका शव उसकी प्यारी बेगम ताज बीबी के रौज़े में ही गाड़ा गया। आजतक भारत का यह प्रतापी सम्राट्, सम्राज्ञी सहित उसी रौजे मे, अनन्त निद्रा मे सोया पड़ा है। यद्यपि इस समय वह इस ससार मे नही है, परन्तु अपने शासन-

जामा मस्जिद, दिल्ली
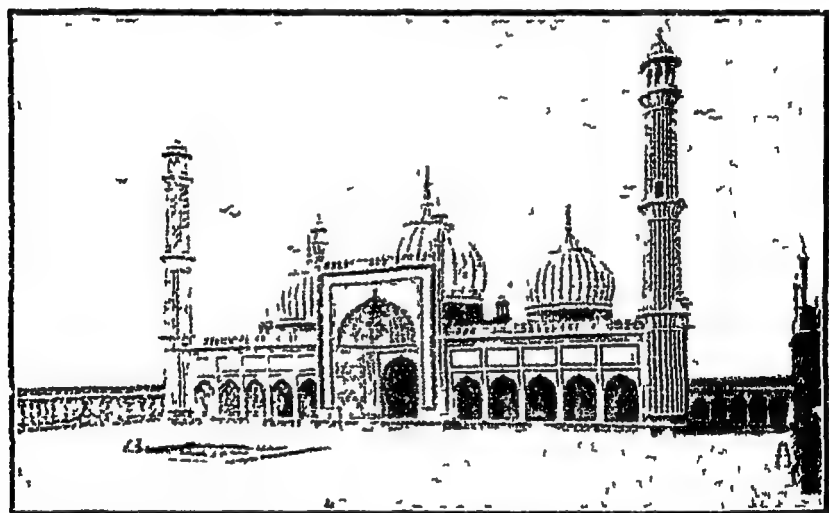
काल मे वह ऐसे अनेक कार्य कर गया जिनके कारण आज तक उसका नाम संसार में प्रसिद्ध है। आगरे में ताज बीवी का रौजा, दिल्ली का लाल किला और वहीं की सुप्रसिद्ध जामा मस्जिद आज तक उसकी याद दिलाने को शेष हैं। जगत्-विख्यात 'तख़्त ताऊस' करोड़ों रुपये की लागत से उसीने वनवाया था, जिसे वाद में फ़ारस का वादशाह नादिर शाह अपने देश को

उठवा ले गया। दिल्ली के लाल किले में वह जगह अब भी देखी जा सकती है जहाँ यह तख़्त उसके शासन-काल में कभी रखा रहा करता था।

अभ्यास

याद करो—

मीर जुमला—इस्फ़हान का निवासी था और एक जौहरी के साथ गोलकुण्डा भाग आया था। जौहरी के मरने पर यही उसकी सम्पत्ति का अधिकारी बना। यह बहुत बुद्धिमान एवं चतुर था। इसके गुणों पर मुग्ध होकर गोलकुंडा के शासक ने इसे अपने यहाँ प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त कर दिया। इसने कर्नाटक को जीता। कुछ दिनों पश्चात् सरदारों के कहने में आकर सुल्तान इससे अप्रसन्न हो गया और इसके कुटुम्ब को वन्दीगृह में डाल दिया। निराश होकर मीर जुमला ने औरंगज़ेब को सहायता के लिये लिखा और गोलकुंडा की चढ़ाई में उसकी सहायता की।

तिथियाँ

सन् १६२९ ई०—ख़ानजहाँ का विद्रोह।

सन् १६३१ ई०—मुम्ताज़ महल की मृत्यु।

सन् १६५२ ई०—कन्धार का खोना।

चित्र-चर्चा

इस अध्याय में दिये हुये ताज बीबी के रौज़े का चित्र देखो। इसकी नक़्क़ाशी और बहुमूल्य रंगीन पत्थरों की पच्चीकारी का बारीक काम देख कर आधुनिक काल के बड़े-बड़े कारीगर दंग रह जाते हैं। यह लगभग ११ वर्ष में बन कर तैयार हुआ था और इसकी लागत में आजकल के हिसाब से २१/४ करोड़ रुपये खर्च हुए थे। कुछ लोग कहते है कि सब मिला कर ९ करोड़ लागत लगी होगी।

रौज़े के आगे बाग है और सामने सुरम्य तालाब में फ़व्वारे कैसे सुन्दर मालूम होते हैं।

यदि तुम कभी आगरे जाओ तो इसे देखना ।

प्रश्न

१—मुम्ताज़ महल कौन थी ? इसकी याद दिलाने के लिये आजकल कौन सी वस्तु शेष है ?

२—शाहजहाँ की दक्षिण की चढ़ाइयों का संक्षेप में वर्णन करो ।

३—जहाँगीर के शासन-काल में खोये हुए कन्धार को शाहजहाँ ने किससे और कैसे प्राप्त किया था ? उसके हाथ से उसके फिर निकल जाने का संक्षेप मे वर्णन करो ।

४—औरंगज़ेब ने किसप्रकार साम्राज्य के अन्य अधिकारियों से इसे प्राप्त किया ? वर्णन संक्षेप मे करो ।

५—शाहजहाँ जिन इमारतों के लिये आज तक प्रसिद्ध है, उनमें से कुछ का वर्णन करो । प्रत्येक के विषय में निम्नलिखित बातें बतलाओ—

(क) कहाँ है ?

(ख) उसका कुछ वर्णन ।

(ग) वर्तमान अवस्था ।

६—निम्नलिखित पर नोट लिखो—

ख़ानजहाँ और तख़्त ताऊस ।

विशेष कार्य

अपने स्कूल से स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल राय के शाहजहाँ नामक नाटक का हिन्दी अनुवाद लेकर घर पर पढो ।

अध्याय २८

मुग़ल साम्राज्य के अन्त का आरम्भ

औरंगज़ेब

(१६५८–१७०७ ई०)

औरंगज़ेब के विषय में कुछ अधिक कहने से पहले हम यह आवश्यक समझते हैं कि तुम्हें यह बतला दिया जाय कि वह किस प्रकृति का मनुष्य था। इससे तुम्हें उसके कार्य-क्रम के जानने में बहुत सहायता मिलेगी।

औरंगज़ेब का चरित्र—सबसे पहले हमें उसके धार्मिक विचारों की ओर दृष्टि डालनी चाहिये। अपने धर्म का वह बड़ा पक्का था। ईश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्य का उसे सदैव विशेष ध्यान रहता था। उसने अपने जीवन में इस्लाम धर्म के प्रायः सारे सिद्धान्तों का पालन किया। वह न्यायप्रिय, वीर तथा चतुर था। कर्त्तव्य-पालन से मुँह मोड़ना उसने सीखा ही न था। वह कहा करता था—"मैं संसार में अपने लिये नहीं, बल्कि दूसरों के लिये कठिन परिश्रम करने को उत्पन्न हुआ हूँ।" और "शासक का मुख्य काम अपनी प्रजा की रक्षा करना है, आनन्द और भोग-विलास में जीवन बिताना नहीं।" अपने इन कथनों के अनुसार वह अपना सारा काम खुद करता था और छोटे से छोटे मामले की भी छान-बीन करके उसका निर्णय करता था। भोग-विलास से वह सदा दूर रहता था। उसकी रहन-सहन भी सादी थी। वह अपना निजी खर्च उस आमदनी से चलाता था जो उसे कुरान लिखने या

टोपियों पर बेल-बूटे काढ़ने से होती थी। राज-काज से जो समय बचता था, उसे वह ईश्वर की आराधना में व्यतीत करता था। अब तुम समझ गये होगे कि उसका जीवन जहाँगीर या शाह-जहाँ के जीवन से बिल्कुल भिन्न था जो आमोद-प्रमोद में अपने समय का अधिकांश नष्ट कर देते थे। औरंगज़ेब न कभी शराब पीता था और न किसीप्रकार का नाच-रंग या गाना-बजाना ही उसे अच्छा लगता था।

तुम जानते हो कि ऐसा मनुष्य मिलना कठिन है जिसमे सब गुण ही गुण हो और अवगुण एक भी न हो। हरएक मनुष्य मे गुण-दोष दोनो विद्यमान रहते है। यही बात सम्राट् औरंगज़ेब के विषय में भी थी। उपर्युक्त गुणो के सिवा उसमे कुछ दोष भी थे। एक तो उसके धार्मिक विचार उदार न थे। अपने धर्म का पक्का होना बुरी बात नहीं है, पर शासक को अन्य धर्मावलम्बियों के साथ भी उदारता का व्यवहार करना चाहिए। औरंगज़ेब मे यह बात न थी। इस्लाम-धर्म के सुन्नी सम्प्रदायवालों के भाव तथा विचारो के अतिरिक्त और किसी धर्म को वह श्रद्धा की दृष्टि से न देख सकता था। एक बात और भी थी। वह स्वभाव का हठी था और दूसरों की ओर से उसे सदैव कुछ न कुछ सन्देह बना रहता था। अतएव, तुम पढ़ोगे कि विविध गुण-सम्पन्न होने पर भी वह विफल ही रहा।

साम्राज्य में शांति-स्थापना—पहला काम जो उसे करना था, वह यह था कि भाइयों के युद्ध के बाद देश में शांति स्थापित करे। अच्छे और चतुर लोगों को उसने अपना अमीर और सरदार बनाया। मालगुज़ारी के सम्बन्ध में उसने अकबर का प्रबन्ध

जारी रखा। देश को प्रान्तों में विभक्त कर दिया गया और प्रत्येक पर एक-एक शासक नियुक्त किया गया। परन्तु औरंगज़ेब प्रान्तीय शासकों को अधिक दिनों तक एक ही प्रान्त में टिकने नहीं देता था; क्योंकि ऐसा करने से भय था कि कहीं कोई शासक अधिक जोर न पकड़ जाय। इससे प्रजा को असुविधा होती थी, क्योंकि प्रान्तीय शासक अपने-अपने प्रान्त से अधिक से अधिक धन खींचना चाहते थे।

औरंगज़ेब के शासन के समय भारत में प्रायः अशान्ति थी। परन्तु **दक्षिण** में **मरहठों** ने पहले ही से छेड़—छाड़ आरम्भ कर रखी थी। धीरे—धीरे मरहठों का बल बढ़ा और उन्होंने मुग़ल साम्राज्य को क्षति पहुँचाना प्रारम्भ कर दिया। यहाँ पहले तुम्हें मरहठों के विषय में कुछ जानने योग्य बातें बतला दी जाती हैं।

मरहठे और उनका देश—पश्चिमी घाट की पर्वत-श्रेणियों और समुद्रतट के बीच में **कोंकण** नामक एक देश है। मरहठे इसी देश में बसे हुए थे। यह देश कुछ तो **अहमदनगर** की और कुछ **बीजापुर** की सुल्तानों के अधिकार में था। पहले मरहठे अहमदनगर या बीजापुर के सुल्तानों के यहाँ ही सेना में नौकर रहते थे।

शिवाजी—इन्हीं मरहठों में से **शाहजी भोंसला** नाम का एक मरहठा सरदार **बीजापुर** की सल्तनत में उन्नति करते-करते पूना के शासक के पद पर पहुँच गया। उसका पुत्र, जिसका नाम **शिवाजी** था, औरंगज़ेब से आठ वर्ष छोटा था। शिवाजी ने अपने पहाड़ी देश के सब मार्गों को देख लिया था। अठारह वर्ष की

अवस्था में उसने आस-पास के मरहठों को एकत्र करके बीजापुर की सल्तनत पर छापा मारना शुरू कर दिया और लोगों से

शिवाजी

'चौथ' वसूल करने लगा*। धीरे-धीरे उसने अनेक पहाड़ी दुर्गों

* शिवाजी ने समर्थ गुरु रामदास की आज्ञा से दक्षिणी भारत को विदेशियों के चगुल से मुक्त करना चाहा। हिन्दू-धर्म की रक्षा के लिये ही उन्होंने विदेशियों से युद्ध ठाना।

पर विजय प्राप्त कर ली और बीजापुर की ओर से आये हुए अफ़ज़ल खाँ नामक अफ़सर को भी मार डाला। फिर शिवाजी ने **गुजरात** पर धावा बोल दिया। यह प्रान्त मुग़ल-साम्राज्य के अन्तर्गत था। शिवाजी ने **सूरत** को लूट लिया। इससे मुग़ल सम्राट् औरंगज़ेब उससे नाराज़ हो गया और उसको दबाने का यत्न करने लगा, किन्तु शिवाजी क़ाबू मे न आ सका। सन् १६७४ ई० में शिवाजी ने रायगढ़ में अपने आपको राजा घोषित कर दिया और अपने 'अष्ट-प्रधान' नामक मंत्रि-मण्डल की सहायता से अपने जीते हुए प्रान्तों पर वह शासन करने लगा। सन् १६८० ई० में उसकी मृत्यु हो गयी; परन्तु मरहठा जाति, जिसको उसने संघटित किया था, उस समय तक पूरी शक्तिशाली हो चुकी थी।

दक्षिण की जीत—शिवाजी के पुत्र **शम्भाजी** ने भी मुग़लों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखी। मरहठों पर विजय पाना कठिन था, क्योंकि वे बड़े फुर्तीले घोड़ों पर सवार रहते थे और कभी जम कर न लड़ते थे। पहाड़ियों के प्रत्येक मार्ग का उन्हे पता था और मौक़ा पाकर वे मुग़ल-सेना पर यकायक इधर-उधर से टूट पड़ते थे और उसे तितर-बितर करके फिर पहाड़ों में जा छिपते थे। जब मरहठे किसीप्रकार क़ाबू में न आ सके, तब सम्राट् स्वयं एक बड़ी भारी सेना लेकर दक्षिण के लिये चल पड़ा। वहाँ पचीस वर्षों तक वह दक्षिण की रियासतों और मरहठों से लड़ता-भिड़ता रहा। **बीजापुर** और **गोलकुंडा** की दोनों सल्तनतें जीतकर मुग़ल-साम्राज्य में मिला ली गयीं। सन् १६८९ ई० में शिवाजी के पुत्र **शम्भाजी** को भी पकड़ कर मार डाला गया। इस लंबे

युद्ध से मुग़ल-साम्राज्य का विस्तार तो बढ़ा, परन्तु उसकी शक्ति को बड़ी हानि पहुँची। एक तो सारा खजाना खाली हो चला और दूसरे सम्राट् के दक्षिण में अधिक रहने के कारण उत्तरी भारत मे उन लोगों को शक्तिशाली होने का मौका मिला जो सम्राट् से असन्तुष्ट थे।

हिन्दुओं का असन्तोष और विद्रोह—ऐसे लोगों मे, जिन्होंने उत्तरी भारत में औरंगजेब से असन्तुष्ट होकर मुग़ल-साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया, सिक्खो, जाटो, सतनामियों तथा राजपूतो के नाम अधिक प्रसिद्ध है। बादशाह की धार्मिक नीति का वर्णन पहले ही किया जा चुका है। उसने बाद में हिन्दुओं के साथ कुछ और भी सख़्ती की। उन पर 'जज़िया' दोबारा लगा दिया गया और अनेक स्थानों पर मन्दिर गिरा दिये गये। सम्राट् की इस नीति से उसकी हिन्दू-प्रजा में असन्तोष फैल गया और जगह-जगह विद्रोह होने प्रारम्भ हो गये।

सतनामी विद्रोह—औरङ्गजेब के धार्मिक अत्याचारों ने मेवाड़ और नारनोल के पास रहने वाले एक सतनामी हिन्दू-सम्प्रदाय को उसके विरुद्ध उभारा। मुट्ठी भर सतनामियो ने औरंगजेब को लोहे के चने चबवाये। औरगजेब की सेना में सतनामियों की वीरता देखकर बहुत हड़कम्प मचा; किन्तु मुग़ल-साम्राज्य की पूरी शक्ति से और प्रबल राजनीतिक पटुता के सहारे सतनामी दबा अवश्य दिये गये। पंजाब में बसे हुए **सिक्ख** संप्रदाय के लोगो ने भी विद्रोह करके अपने असन्तोप का परिचय दिया। **सिक्ख** संप्रदाय की नींव **गुरु नानक** ने डाली

थी, जिनके विषय में तुम पहले ही पढ़ चुके हो। सिक्खों के गुरु तेग़बहादुर को सम्राट् ने पकड़ कर मरवा डाला। इससे सिक्खों का विद्रोह बढ़ता ही गया। सम्राट् की विशाल सेना के

औरंगज़ेब

आगे उनकी जीत तो असम्भव थी, परन्तु वे मुग़ल-सम्राज्य के घातक शत्रु बन बैठे और बदला लेने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

राजपूतों से भी औरंगज़ेब की वैसी न पटती थी जैसी अकबर या जहाँगीर की, पटती थी। एक तो हिन्दू होने के कारण वे सम्राट् को हिन्दुओं के प्रति ऐसी अनुदार नीति से यों ही अप्रसन्न थे। दूसरे उनके असन्तोष का कारण यह भी था कि जोधपुर के महाराज जसवन्तसिंह की मृत्यु हो जाने पर औरंगज़ेब उनके दो पुत्रों का पालन स्वयं करना चाहता था। राजपूत समझे कि बादशाह की इसमे कोई चाल है और वह राजकुमारों को मुसलमान बनाना चाहता है।

राणा उदयपुर की अध्यक्षता मे सारा राजपूताना औरंगज़ेब के विरुद्ध हो गया। केवल जयपुर राजभक्त रहा। औरंगज़ेब ने अपने बेटे अकबर को राजपूतों के विरुद्ध भेजा, परन्तु यह उनसे जा मिला। औरंगज़ेब ने अपनी राजनीतिक पटुता से राजपूतों मे और अकबर मे शत्रुता करा दी। राजपूतों को शान्त करने और उनको दबाने में औरंगज़ेब को उनसे कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। विद्रोह शान्त हो गये, पर राजपूतों से मुग़ल-साम्राज्य को सुदृढ़ बनने में जो सहायता मिली थी, वह तो बन्द हो ही गयी, उलटे वे मुग़ल-साम्राज्य के विरोधी बन गये और उसकी जड़ उखाड़ने की कोशिश करने लगे।

औरंगज़ेब का अन्त—कुछ तो इन विद्रोहों का दमन करने मे और कुछ दक्षिण की लड़ाइयो में औरंगज़ेब की बहुत सी शक्ति, समय और धन नष्ट हो गया। इस दौड़-धूप और कठिन परिश्रम का उसके स्वास्थ्य पर बहुत हानिकारक प्रभाव पड़ा। सन् १७०७ ई० में वह बीमार पड़ा और अहमदनगर

में उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु हो जाने पर मुग़ल-साम्राज्य
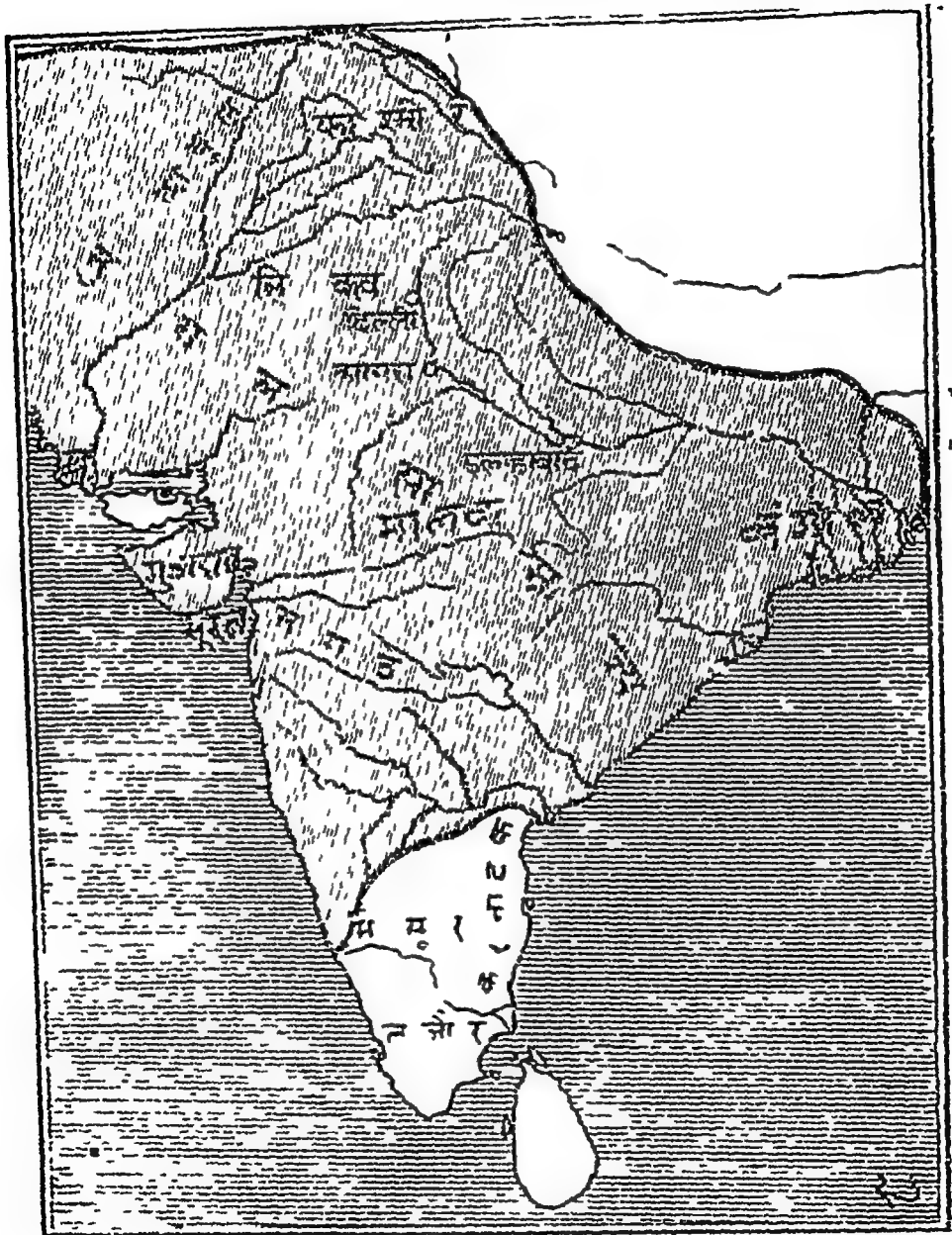
औरंगज़ेब के समय मुग़ल साम्राज्य

की दिन-दिन अवनति होती गयी। वास्तव में मुग़ल-साम्राज्य

के नाश के लक्षण औरंगजेब के शासन-काल के उत्तरार्ध मे ही दिखायी देने लगे थे। उसकी मृत्यु के पश्चात् किसप्रकार इतना विस्तृत साम्राज्य निर्बल होकर छिन्न-भिन्न हो गया, इसका वर्णन तुम आगे पढ़ोगे।

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष के नक़शे में औरंगज़ेब के समय का मुग़ल-साम्राज्य का विस्तार दिखाओ। जिन प्रान्तों को औरंगज़ेब ने जीत कर मुग़ल साम्राज्य में मिलाया था, उन पर विशेष प्रकार का रंग कर दो।

याद करो—

चौथ—मरहठों के आक्रमण प्रायः विनाशकारी होते थे। वे जिन नगरों पर चढाई करते थे, उन्हें लूट लिया करते थे, और इसप्रकार जो कुछ हाथ लगता था, वही लेकर अपने देश को लौट जाया करते थे। इस लूटमार से बचने के लिये कुछ नगरों ने नियमित रूप से मरहठों को कुछ धन देना स्वीकार कर लिया था। इसी धन को **चौथ** कहते थे।

तिथियाँ

सन् १६५८ ई०—औरंगज़ेब का राज्याभिषेक।

सन् १६७४ ई०—शिवाजी का राज्याभिषेक।

सन् १६८० ई०—शिवाजी की मृत्यु।

सन् १७०७ ई०—औरंगज़ेब की मृत्यु।

प्रश्न

१—औरंगज़ेब का स्वभाव और चरित्र संक्षेप में वर्णन करो। यह बतलाते समय निम्नलिखित संकेतों पर विशेष ध्यान दो—

(क) इस्लाम में उसका विश्वास।

(ख) उसकी रहन-सहन।

(ग) भोग-विलास के प्रति उसकी रुचि।

(घ) अपने कर्त्तव्य-पालन की ओर उसका ध्यान।

२—औरंगज़ेब के चरित्र में ऐसे कौन से दोष थे जिनके कारण उसे विफलता प्राप्त हुई?

३—मरहठे कौन थे? मुग़लों को उन्हे परास्त करने में किस कठिनाई का सामना करना पड़ा था?

४—शिवाजी की जीवनी संक्षेप में लिखो। मुख्यतया ये बातें बतलाओ—

(क) उसके पिता और उनका पेशा।

(ख) शिवाजी का प्रारंभिक जीवन—बीजापुर और मुग़लों से छेड़ छाड़।

(ग) महाराज शिवाजी।

५—औरंगज़ेब की दक्षिण-विजय का संक्षेप में वर्णन करो। इससे उसको क्या हानियाँ तथा क्या लाभ हुए?

६—कहा जाता है कि गोलकुण्डा और बीजापुर की विजय मुग़ल-साम्राज्य के पतन का कारण हुई—सिद्ध करो कि कैसे?

७—सिक्ख औरंगज़ेब से क्यों असन्तुष्ट थे? औरंगज़ेब ने किसप्रकार उनके विद्रोह का दमन किया और इस नीति का क्या परिणाम हुआ?

८—राजपूतों के अप्रसन्न होने से मुग़ल-साम्राज्य को क्या हानि पहुँची?

९—यह तुम कैसे कह सकते हो कि

"औरंगज़ेब के शासन के अन्तिम वर्षों में मुग़ल-साम्राज्य के नाश के लक्षण नज़र आने लगे थे।"

१०—इन पर छोटे-छोटे ऐतिहासिक नोट लिखो—

अष्ट-प्रधान, शम्भाजी, गुरु गोविन्दसिंह।

११—औरंगज़ेब बड़ा विद्वान् भी था। उसे फ़ारसी भाषा का बहुत अच्छा ज्ञान था। उसके लिखने का ढंग बहुत सुन्दर था जो उसके पत्रों से

विदित होता है। उससे बहुत से अंशो में समानता रखनेवाला मुह-म्मद तुग़लक था। इन दोनों का निम्नलिखित बातों में मुकाबला करो—

(क) विद्वत्ता।

(ख) साम्राज्य का विस्तार।

(ग) शासन में सफलता और उसके कारण।

यदि तुम्हारे स्कूल के पुस्तकालय में हों तो निम्नलिखित पुरुषों की जीवनियों में से कोई ले जाकर घर पर फ़ुरसत के समय पढ़ो—

(क) दुर्गादास (नाटक)।

(ख) औरंगज़ेब।

(ग) शिवाजी।

(घ) गुरु गोविन्दसिंह।

———

अध्याय २१

मुग़ल-साम्राज्य का पतन

(१७०७–१८०३ ई०)

तुमने पिछले अध्यायों में जान लिया होगा कि जहाँगीर और शाहजहाँ दोनों ही के मरने पर उनकी सन्तानों में राज-सिंहासन के लिये परस्पर युद्ध छिड़ गया था। औरंगज़ेब के मरने पर भी वही बात हुई। उसके तीन पुत्रों में गद्दी के लिये लड़ाई होने लगी। सब से बड़ा भाई अन्य दो भाइयों को मरवा कर **बहादुर शाह** की उपाधि धारण करके तख़्त पर बैठा।

बहादुर शाह (१७०७–१७१२ ई०)—बहादुर शाह निर्बल तथा अयोग्य शासक था। उसने राजपूतों से सन्धि कर ली। शम्भाजी का पुत्र **शाहूजी** अपने पिता की हत्या के बाद से ही मुग़ल-सम्राट् का वन्दी था। बहादुर शाह ने उसे छोड़ दिया। इसप्रकार **मरहठों** और **राजपूतों** ने तो उसे परेशान नहीं किया, पर **सिक्ख** बराबर मुग़ल-साम्राज्य को हानि पहुँचाने की चेष्टा करते रहे। सन् १७१२ ई० मे बहादुर शाह की मृत्यु हो गयी।

उसके मरने पर उसके पुत्रों में फिर झगड़ा शुरू हो गया। इन घरेलू झगड़ों से मुग़ल-साम्राज्य को बड़ी हानि पहुँची; क्योंकि इसतरह दलबन्दी हो जाती थी और सरदारों तथा अमीरों की शक्ति बढ़ती थी जिससे साम्राज्य की शक्ति को बहुत गहरा धक्का पहुँचता था।

जहाँदार शाह और फ़र्रुख़सियर (१७१२–१७१९ ई०)—बहादुर शाह के पुत्रों मे से पहले उसका सबसे बड़ा पुत्र, जिसका नाम जहाँदार शाह था, बादशाह हुआ। किन्तु बाद मे उसके भतीजे **फ़र्रुख़सियर** ने **सैय्यद हसन अली** और **सय्यद अब्दुल्ला** नामक दो सूबेदारों की सहायता से जहाँदार शाह को मरवा डाला। अब वह खुद गद्दी पर बैठा (सन् १७१३ ई०)।

फ़र्रुख़सियर

गद्दी पर बैठने पर उसे ज्ञात हुआ कि जिन दो **"सैय्यद भाइयों"** की सहायता से मैंने गद्दी प्राप्त की है, वे मेरी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हैं और मुझे बहुत सी बातों में उनका मुँह ताकना पड़ता है। अतः उसने उनके चंगुल से छुटकारा पाने की तरकीबें सोचीं। सैय्यद भाइयों को जब उसके इरादो का पता लगा, तब उन्होंने फर्रुख़सियर की आँखे निकलवा कर उसे मरवा डाला। फर्रुख़सियर के शासन-काल की एक-दो घटनाएँ उल्लेखनीय हैं। हैमिल्टन नामक एक अंग्रेज़ डाक्टर से प्रसन्न होकर उसने अँग्रेज़ों को **बंगाल** में बिना कर दिये व्यापार करने की आज्ञा दे दी।

सिक्खों के अत्याचारों से तंग आकर उनके नेता **बन्दा बहादुर** का उसने बड़ी निर्दयता के साथ वध करा दिया।

मुहम्मद शाह (१७१६–१७४८ ई०)—फ़र्रुख़सियर के क़त्ल के बाद सैय्यद भाइयों ने चार राजकुमारों को क्रमशः एक के पश्चात् दूसरे को राजगद्दी पर बैठाया जो शीघ्र ही चल बसे। तब उन्होंने राजघराने के एक दूसरे व्यक्ति को गद्दी पर बैठाया जिसका नाम **मुहम्मद शाह** था। उन दिनों मरहठों का जोर था। उनसे दब कर मुहम्मद शाह ने उन्हें चौथ देना स्वीकार कर लिया। वह सैय्यद भाइयों की करतूतों से बहुत जलता था। उन दोनों ने कितनों ही को गद्दी से उतारा था और कितनों को दिल्ली के राज-सिंहासन पर बैठाया था। इस कारण वे इतिहास में **"बादशाह बनानेवाले"** कहलाते हैं। मुहम्मद शाह ने उन्हें मरवा कर उनसे अपना पीछा छुड़ाया।

सूबेदारों की स्वतंत्रता—वास्तव में वे दिन मुग़ल-साम्राज्य के दुर्भाग्य के दिन थे। उसका विस्तार भी धीरे-धीरे कम होता गया। मुग़ल-सम्राट् को शक्ति-हीन देखकर और दरबार में दल-बन्दियाँ हो जाने के कारण जिसको मौका लगा, उसीने साम्राज्य का कुछ भाग दबा लिया। बहादुर शाह का मंत्री **निज़ाम-उलमुल्क** दिल्ली की दलबन्दियों से घबड़ा कर **दक्षिण** की ओर चला गया और वहाँ **हैदराबाद** में उसने निज़ाम-सल्तनत की नींव डाली जो आज तक उसके वंशजों के पास है। इसतरह मुग़ल-साम्राज्य का एक टुकड़ा उससे अलग हो गया। अवध के सूबेदार **सआदत अली खाँ** ने भी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

यह दूसरा टुकड़ा था जो मुग़ल-साम्राज्य से निकल गया। इस-प्रकार अपने साथियों को स्वतंत्र होते देखकर बंगाल के सूबेदार अलीवर्दी खाँ को भी स्वतंत्र होने की सूझी। उसने भी दिल्ली को राज-कर भेजना बन्द कर दिया। यह तीसरा टुकड़ा था। इधर अवध के उत्तर-पश्चिम के कोने में रुहेले अफ़गानों ने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। इसप्रकार कुछ ही समय के अन्दर औरंगज़ेब और उसके पूर्वजों का जीता हुआ विशाल साम्राज्य दिन-दिन कम होता चला गया।

नादिर शाह का आक्रमण (सन १७३९ ई०)— इसी समय जब मुग़ल-साम्राज्य दिन-दिन बलहीन होता जा रहा था, फ़ारस के बादशाह **नादिर शाह** ने दिल्ली पर आक्रमण किया। लड़ाई में मुहम्मद शाह के हार जाने के बाद जब वह और नादिर शाह दोनों लाल किले में थे, बाहर यह अफवाह फैल गयी कि नादिर शाह मार डाला गया। य[illegible] ख़बर सुनकर दिल्ली के निवासियों ने उसके अनेक सिपाहियों को मार डाला। जब नादिर शाह को इस बात की खबर लगी, तब उसके क्रोध की सीमा न रही।

नादिर शाह

उसने दिल्ली में क़त्ले आम की आज्ञा दे दी। हुक्म पाते ही दिल्ली के सिपाहियों पर नादिर के सिपाही बेतरह टूट पड़े। हजारों स्त्री-पुरुष क़त्ल कर डाले गये। लोगों के घरों में आग लगायी गयी और कई दिनों तक लूट-मार मची रही। यह देखकर मुहम्मद शाह ने नादिर शाह से इस हत्याकांड को बन्द करने की प्रार्थना की। बड़ी विनती करने के बाद नादिर शाह मान गया और उसने अपने सिपाहियों को लूट-मार और हत्याकांड बन्द करने की आज्ञा दी। दिल्ली की लूट से नादिर शाह को अपार धन मिला। वह शाहजहाँ का बनवाया हुआ बहुमूल्य रत्न-जटित **'तख्त-ताऊस'** और विश्वविख्यात हीरा कोहनूर भी अपने साथ दिल्ली से फारस को लेता गया। नादिर शाह के आक्रमण ने मुग़ल-साम्राज्य की शक्ति को बड़ी चोट पहुँचायी और उसका दबदबा बहुत कम हो गया।

इन्हीं बुरे दिनों में मुग़ल-साम्राज्य पर अफगानिस्तान की ओर से एक और आफत आयी। **अफ़गानिस्तान के दुर्रानी वंश के** बादशाह **अहमद शाह अब्दाली** ने भारत पर आक्रमण किया (१७४७ ई०), पर शाहज़ादा अहमद ने उसे परास्त करके भगा दिया।

अहमद शाह अब्दाली

पंजाब भी निकल गया—सन् १७४८ ई० में मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र अहमद शाह गद्दी पर बैठा। इसके समय मे अहमद शाह अब्दाली ने फिर भारत में आकर उसे परास्त किया और पंजाब को अपने राज्य मे मिला लिया। अन्त में सन् १७५४ ई० मे उसके मंत्री ने उसे मार डाला।

आलमगीर द्वितीय (१७५४-१७५९ ई०)—अहमद शाह के मरने पर आलमगीर द्वितीय दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। वह नाममात्र का बादशाह था, क्योंकि सारे अधिकार उसके मंत्री के हाथ मे थे। अहमद शाह अब्दाली ने इसके शासन-काल में फिर तीसरी बार दिल्ली पर आक्रमण किया। बार-बार अफगानों के आक्रमण से बचने के लिये मुग़लों ने मरहठों से सहायता माँगी, क्योंकि देश में उन दिनो उन्हीं का डंका बज रहा था। मरहठों ने आकर पंजाब पर अधिकार कर लिया और अफ़गानो को वहाँ से निकाल दिया। सन् १७५९ ई० मे आलमगीर को उसके मत्री ने मार डाला और उसका लड़का, जिसका नाम शाह आलम था, गद्दी पर बैठा।

शाह आलम (१७५९-१८०६ ई०)—जब से मरहठो ने अफग़ानों को पंजाब से निकाल दिया, तभी से मरहठों और अफ़गानो का झगड़ा ठन गया। देश के अन्य मुसलमान शासको को भी यह भय होने लगा कि कहीं ऐसा न हो कि सारे देश पर मरहठों का ही झंडा फहराने लगे। मरहठो की शक्ति क्षीण करने के उद्देश से रुहेलो के सरदार नजीबुद्दौला ने पुनः अहमद शाह अब्दाली को भारत पर आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया।

पानीपत का तीसरा युद्ध (सन् १७६१ ई०)—सन् १७६१ ई० में अहमद शाह अपनी सेना लेकर मरहठों पर चढ़ आया। पानीपत के सुप्रसिद्ध मैदान में दोनों सेनाओं ने युद्ध के लिये पड़ाव डाला। बड़े भीषण संग्राम के बाद मरहठों की हार हुई। मरहठों के कई प्रसिद्ध लड़ाके वीर इस युद्ध में काम आये। उन्हें इस हार से बड़ा गहरा धक्का पहुँचा। इस युद्ध में खोयी हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करने में मरहठों को कई वर्ष लगे।

नाममात्र के सम्राट्—इस अध्याय के मुग़ल-बादशाहों का वृत्तान्त पढ़कर तुम्हें मालूम हो गया होगा कि उनमें से एक भी पहले के छः मुग़ल-सम्राटों की बराबरी का न था। उनमें न तो उनकी सी योग्यता थी, न वीरता। लगभग सभी विलासी थे और अपना सब काम मंत्रियों पर छोड़ देते थे। यही मंत्री बाद में साम्राज्य के कर्त्ता-धर्त्ता हो जाते थे और कभी-कभी राज्य के लोभ मे अपने स्वामियों की हत्या भी कर डालते थे। अपने जीवन-काल में उन्हें एक-न-एक दूसरी शक्ति के अधीन होकर रहना पड़ता था। शाह आलम को तो मरहठों ने कई वर्ष तक दिल्ली ही न आने दिया; और आने पर भी वह मरहठों का आज्ञाकारी बनकर रहा। सन् १८०३ ई० में अंग्रेज़ों ने, जिनका विस्तृत वर्णन तुम आगे पढ़ोगे, मरहठों को हरा कर शाह आलम को अपने अधिकार में कर लिया। बस उसी समय से मुग़ल-सम्राटों का भी अन्त ही समझना चाहिये। यद्यपि सन् १८०६ ई० में शाह आलम के मरने के बाद भी उसके वंशज दिल्ली के किले में रहते थे, पर उनका शासन से कोई सम्बन्ध न था। उनके गुज़ारे के लिये अंग्रेज़ों की ओर से उन्हें पेन्शन मिलती थी। दिल्ली का अन्तिम मुग़ल बादशाह

बहादुर शाह (द्वितीय) था। सन् १८५७ ई० में अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दुस्तानियों ने विद्रोह किया। इसीके सिलसिले में बहादुर शाह भी गिरफ्तार करके रंगून भेज दिया गया। इसका विस्तृत वर्णन तुम्हें इस पुस्तक के दूसरे भाग मे पढ़ने को मिलेगा।

मुग़ल-साम्राज्य के पतन के कारण❀—इतनी शीघ्रता से मुग़ल-साम्राज्य की अवनति कैसे हो गयी, यह प्रश्न तुम्हारे मन में भी उठता होगा। इसके कई कारण थे। मुख्य कारण, जैसा कि तुमने पढ़ लिया है, औरंगजेब की नीति थी जिससे हिन्दू अप्रसन्न हो गये थे। मरहठों और सिक्खों की शक्ति बढ़ जाने से उन्होंने मुग़ल-साम्राज्य का नाश करने की प्रबल चेष्टा की। औरंगजेब के अधिकारी भी अयोग्य और अशक्त थे। नादिर शाह के आक्रमण से तो मुग़ल-साम्राज्य की कमर ही टूट गयी। उसके बाद अहमद शाह अब्दाली के बार-बार होनेवाले आक्रमणों ने भी मुग़ल-साम्राज्य की जड़ उखाड़ने में सहायता की। इसके अतिरिक्त सूबेदारों ने भी सम्राटों की निर्बलता से लाभ उठा कर भिन्न-भिन्न प्रान्तों मे स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिये। इससे भी मुग़ल-साम्राज्य का विस्तार और शक्ति दोनों घट गयी।

औरंगजेब की दक्षिण-विजय से मरहठों की शक्ति बढ़ी और इससे वे प्रबल होकर मुग़ल-साम्राज्य की जड़ खोदने लगे। यूरोपीय जातियों ने भी मुग़ल-साम्राज्य को बड़ा धक्का पहुँचाया। मुग़ल-साम्राज्य की छत्र-छाया में पल कर इन्होंने उसीके देशों को अपने अन्तर्गत कर उसे अशक्त बनाया।

❀ पिछले मुग़ल-काल की सांपत्तिक दुरवस्था भी मुग़ल-साम्राज्य के अधःपतन का एक कारण है।

मुग़ल काल की चित्र शैली

अभ्यास

नक़शा

भारतवर्ष का नक़शा खींच कर मुहम्मद शाह के समय के मुग़ल-साम्राज्य का विस्तार दिखाओ।

याद करो—

सन् १७३९ ई०—नादिर शाह का आक्रमण।

सन् १७६१ ई०—पानीपत का तीसरा युद्ध।

सन् १८०३ ई०—मुग़ल-साम्राज्य अँग्रेजों के अधिकार मे।

चित्र-चर्चा

इस अध्याय में एक चित्र में 'मुग़ल काल की चित्रशैली" दिखायी गयी है। इस चित्र में चित्रकार ने उस काल की एक उच्च कुल की महिला का चित्र बड़ी खूबी से अंकित किया है। पहनावा-उढ़ावा सब उसी समय का है। इसमें आजकल के पहनावे से क्या अन्तर पाते हो? चित्र की सुन्दरता को देख कर तुम जान सकते हो कि उस समय के चित्रकार भी चित्र खींचने में कितने निपुण थे।

प्रश्न

१. 'सैय्यद भाई' कौन थे? वे किस नाम से पुकारे जाते थे और क्यों? उनका अंत किसने किया?

२. मुहम्मद शाह के समय में निम्नलिखित तीन प्रान्त मुग़ल-साम्राज्य से अलग हो गये थे—

(क) बंगाल,

(ख) अवध और

(ग) दक्षिण (हैदराबाद)।

इनमें से प्रत्येक के विषय में बताओ कि वे किसतरह साम्राज्य से अलग हुए।

३. नादिर शाह कौन था ? उसके आक्रमण का मुग़ल-साम्राज्य पर क्या प्रभाव पड़ा ?
४. औरंगजेब के उत्तराधिकारियों का चरित्र कैसा था ? उनके इस चरित्र ने साम्राज्य की अवनति में क्या सहायता की ?
५. पानीपत की तीसरी लड़ाई क्यों हुई ? उसका क्या प्रभाव पड़ा ?
६. मुग़ल-साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे ?
७. निम्नलिखित पर छोटे-छोटे ऐतिहासिक नोट लिखो—

(क) बन्दा बहादुर ।
(ख) डाक्टर हैमिल्टन ।

विशेष कार्य

कल्पना करो कि नादिर शाह के आक्रमण के समय दिल्ली में कहीं छिप कर तुमने उस हत्याकाण्ड का दृश्य अपनी आँखों से देखा था। अपने किसी दूसरे नगर में रहनेवाले मित्र को इस दृश्य का वर्णन करते हुए एक पत्र लिखो।

या

नादिर शाह के चले जाने के बाद तुमने जाकर लाल किले को देखा था। उस समय उसकी शोभा में तुमने क्या परिवर्तन पाया ?

मनोरंजक बातें

कोहनूर हीरा बहुमूल्य था। उसे शाहजहाँ ने तख्त ताऊस में लगवा दिया था। कहा जाता है कि जब नादिर शाह दिल्ली आया, तब मुहम्मद शाह ने उसे अपने पास रखने के विचार से तख्त ताऊस से निकाल कर अपनी पगड़ी में छिपा लिया। मुहम्मद शाह के महल की एक बाँदी ने यह भेद नादिर शाह को बता दिया; अतः उसने मित्रता के बहाने मुहम्मद शाह से पगड़ी बदलने का आग्रह किया। विवश होकर मुहम्मद शाह को ऐसा करना पड़ा। नादिर शाह ने हीरा निकाल लिया और पगड़ी फेंक

दी। हीरे को इसप्रकार अपने अधिकार से निकलते देख कर मुहम्मद शाह 'कोहनूर-कोहनूर' कहता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा।

दुहराने के लिये प्रश्न (मुग़ल-काल)

१६ वीं शताब्दी	१५२६	१५४०	१५४२	१५५६
१७ " "	१६०५	१६१५	१६७४	
१८ " "	१७०७	१७३९	१७६१	

नीचे लिखी घटनाएँ कब हुईं ? (तिथियाँ ऊपर मिलेंगी)

(१) सम्राट् अकबर का जन्म।
(२) औरंगज़ेब की मृत्यु।
(३) नादिर शाह का आक्रमण।
(४) पानीपत की पहली लड़ाई।
(५) अकबर का राज्याभिषेक।
(६) हुमायूँ हिन्दुस्तान छोड़ कर भागा।
(७) पानीपत की तीसरी लड़ाई।
(८) अकबर की मृत्यु।
(९) शिवाजी का राज्याभिषेक।
(१०) सर टामस रो भारत में आया।

नीचे के वाक्यों में से एक-एक शब्द ऐसा छाँटो जो कथन को सत्य सिद्ध करता हो—

(१) सिक्ख संप्रदाय की नींव (कबीर, नानक, तुलसीदास) ने डाली।
(२) मरहठा जाति का संघटन (साहूजी, शिवाजी) ने किया।
(३) बीजापुर और गोलकुंडा की रियासतों को (औरंगज़ेब, बाबर, हुमायूँ) ने जीता।
(४) (अकबर, हुमायूँ, जहाँगीर) के समय में कन्धार मुग़लों के हाथ से निकल गया।

(५) अकबर का जन्म (लाहौर, अमरकोट, आगरा) मे हुआ ।

(६) भारत में सर टामस रो (फ़र्रुख़सियर. शाहजहाँ, जहाँगीर) के समय में आया ।

(७) तख्त-ताऊस को (नादिर शाह, अहमद शाह अब्दाली, शिवाजी) दिल्ली से उठा ले गया ।

(८) सैय्यद भाइयों को (जहाँदार शाह, मुहम्मद शाह, आलमगीर द्वितीय) ने मरवा डाला ।

(९) डाक्कर हैमिल्टन (शाह आलम, जहाँगीर, फ़र्रुख़सियर) के समय में आया ।

(१०) बाबर की क़ब्र (दिल्ली, अहमदनगर, काबुल) में बनी है ।

नीचे जहाँ संख्या लिखी है, वहाँ कोई नाम होना चाहिए । नीचे-वाले इन नामों में से संख्या के स्थान पर यथोचित नाम लगाओ—

टोडरमल	शाहजहाँ	अकबर	गोलकुंडा
जहाँगीर	लाहौर	बीजापुर	शेर अफ़गन
आमेर	तानसेन		

आगरे का ताजमहल १ ने बनवाया ।

नूरजहाँ पहले २ को ब्याही थी ।

३ में नूरजहाँ का मक़बरा है ।

महाराज मानसिंह ४ के राजा थे ।

शिवाजी के पिता ५ की रियासत में नौकर थे ।

अकबर के समय मे एक प्रसिद्ध गवैया रहता था जिसका नाम ६ था ।

अकबर के समय में ७ ने सारी भूमि की नये सिरे से नाप कराई ।

मीर जुमला ८ के सुल्तानों का मंत्री था ।

गुरु अर्जुनसिंह को ९ ने बड़ा कठोर दंड दिया ।

१० ने एक नया धर्म चलाने का उद्योग किया जिसका नाम दीन-इलाही था ।

निम्नलिखित में से कौन सी बातें ठीक हैं और कौन सी ग़लत—

(१) हुमायूँ के भाइयों ने उसकी सहायता न की ।
(२) औरंगज़ेब के धार्मिक विचारों में उदारता न थी ।
(३) अब्बुलफ़ज़्ल को अकबर ने मरवा दिया ।
(४) औरंगज़ेब ने हिन्दुओं पर जज़िया लगा दिया ।
(५) उसके समय में दरबार में नाच-गाना खूब होता था ।
(६) उसे शराब पीने का भी बहुत शौक़ था ।
(७) फ़ैज़ी ने गीता का फ़ारसी में अनुवाद किया ।
(८) जहाँगीर शराब कभी न पीता था ।
(९) अकबर ने राजपूतों से मित्रता कर ली ।
(१०) महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार न की ।
(११) जहाँगीर ने शासन का बहुत सा काम नूरजहाँ को सौंप दिया ।
(१२) पानीपत की दूसरी लड़ाई में हेमू की हार हुई ।
(१३) शेर शाह का शासन-प्रबन्ध बहुत उत्तम था ।
(१४) जहाँनारा शाहजहाँ के वन्दी-जीवन में उसके साथ रही ।
(१५) औरंगज़ेब ने अपने भाइयों के साथ हुमायूँ का सा बर्ताव किया ।

मुग़ल-काल के समय की लाइन

१५००—

पानीपत का पहला युद्ध

शेर शाह

१५५०— पानीपत का दूसरा युद्ध

१६००— जहाँगीर

सर टामस रो मुग़ल दरबार में

शाहजहाँ का गद्दी पर बैठना

१६५०—

औरंगज़ेब

शिवाजी का राज्याभिषेक

१७००—

औरंगज़ेब की मृत्यु

नादिर शाह का आक्रमण

१७५०—

पानीपत का तीसरा युद्ध

१८००—

अध्याय ३०

भारतवर्ष के इतिहास पर भूगोल का प्रभाव

इस पुस्तक के सब से पहले अध्याय में, हमने कहा था कि किसी देश के इतिहास पर उसकी भौगोलिक स्थिति का बहुत प्रभाव पड़ता है। अब चूँकि तुम इस देश का बहुत कुछ इतिहास पढ़ चुके हो, अतः हम इस अध्याय में यह बतलावेंगे कि इस देश की भौगोलिक स्थिति ने इसके इतिहास पर क्या प्रभाव डाला है।

इस देश पर आक्रमण करनेवाली जातियों की संख्या काफ़ी अधिक है। बाहर की जातियों के जितने अधिक आक्रमण इस देश पर हुए हैं, उतने संसार के बहुत कम देशों पर हुए हैं। इसका कारण इस देश का भूगोल ही है, क्योंकि देश का अधिकांश भाग उष्ण कटि-बन्ध में स्थित है। अतः पहाड़ी भागों को छोड़ कर सारे देश में अच्छी गर्मी पड़ती है। फिर यह हिन्द महासागर से उठनेवाली मानसूनों के मार्ग में भी पड़ता है, जो उत्तर के ऊँचे पहाड़ों से टकरा कर देश में काफी मेंह बरसा देती हैं। दूसरे यहाँ के मैदानों की मिट्टी भी उपजाऊ है। काफ़ी वर्षा और उपजाऊ भूमि होने के कारण धन-धान्य की अधिकता से आकृष्ट होकर संसार की अनेक जातियों ने इस देश पर आक्रमण किये। आर्य जाति से लेकर सिकन्दर, महमूद, तैमूर और यूरोपीय लोग—सबके आक्रमणों का एकमात्र कारण यही था। इतिहास पढ़ते समय तुम ने एक बात और देखी होगी। वह यह कि इस

देश पर बाहर की जातियो के आक्रमण तो होते रहे, परन्तु इस देश के निवासियो ने कभी अन्य देश के निवासियों पर आक्रमण नहीं किया। इसका कारण भी वही धन-धान्य की पर्याप्त सामग्री थी। उनकी सारी आवश्यकताएँ यही पूरी होती रही; अतः उन्होने दूसरे देशो में जाने की आवश्यकता ही न समझी।

अब हिमाल पर्वत की ओर ध्यान देना चाहिए। यह उत्तर मे एक बड़ी ऊँची दीवार के समान खड़ा हुआ है। इस कारण इसको पार करके भारत के उत्तर की ओर से कभी किसी जाति ने आक्रमण नहीं किया। साथ ही यह बात भी याद रखनी चाहिए कि इसीकी वजह से हमारे देश का, हिमालय की दूसरी ओर बसे हुए देशो से भी कुछ अधिक सम्बन्ध नहीं रहा। न उनकी रहन-सहन और सभ्यता का प्रभाव हम पर पड़ा, न हमारा उन पर। तुम्हे मालूम है कि उत्तर-पश्चिम की ओर हिमालय की श्रेणियाँ नीची हो गयी हैं और दो ओर घाटियाँ निकल आयी हैं। अतएव यूरोपियों को छोड़ कर सब आक्रमणकारी जातियाँ इन्हीं दर्रों की राह से भारत में आयी और उनका प्रभाव हम पर पड़ा। इसीलिये ये दर्रे भारत के फाटक कहलाते हैं।

हिमालय के नीचे गंगा, सिन्ध और ब्रह्मपुत्र के उपजाऊ मैदान हैं। ये मैदान कितने सुन्दर और उपजाऊ हैं, यह तुम जानते ही हो। देश की सब बड़ी नदियाँ भी इसी मैदान में बहती है। अतः हरएक आनेवाली जाति को तब तक संतोष न हुआ जब तक कि उसने इस मैदान को अपपने अधिकार मे न कर लिया। तुमने देखा होगा कि बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ भी इसी मैदान में लड़ी गयी और बड़े-बड़े नगर भी इसी जगह बसाये गये। इसप्रकार

भारतवर्ष के इतिहास के नाटक का बहुत कुछ भाग इसी भूमि पर खेला गया। इसी कारण इस भाग को "भारतीय इतिहास की रंगभूमि" कहते हैं।

इन मैदानों और दक्षिण के बीच में विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणियाँ फैली हुई हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि प्राचीन समय में दक्षिणी भारत का, उत्तर के लोगों से परस्पर बहुत कम सम्बन्ध रहा। दूसरे विन्ध्याचल के बीच में आ जाने के कारण आक्रमणकारियों ने उधर जाने की बहुत कम हिम्मत की। हिन्दू-काल में समुद्रगुप्त और मुसलमान-काल में अलाउद्दीन और औरंगज़ेब ने ही दक्षिण पर आक्रमण करने का साहस किया था। अतः विन्ध्याचल के कारण दक्षिण को उतनी हानि न उठानी पड़ी जितनी उत्तरी भारत को।

विन्ध्याचल के नीचे दक्षिण की पहाड़ी भूमि है। यहाँ के निवासियों को अपनी जीविका उपार्जन करने में उत्तरवालों की अपेक्षा अधिक परिश्रम करना पड़ता है। इसलिए दक्षिण के लोग उत्तरवालों की अपेक्षा अधिक परिश्रम करने के अभ्यस्त होते हैं। यही कारण था कि दक्षिण में मरहठा जैसी साहसी जाति का उदय हुआ जिसने औरंगज़ेब जैसे शक्तिशाली सम्राट् के भी दाँत खट्टे कर दिये। मरहठों को मुग़लों के मुकाबले विजय पाने में वहाँ की पहाड़ियों से जो सहायता मिली, वह तुम पहले ही पढ़ चुके हो। दक्षिण के सम्बन्ध में एक बात और समझ लेनी चाहिए। एक तो दिल्ली से दूर होने के कारण और दूसरे विन्ध्याचल के बीच में आ जाने से, स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का भी यहाँ और जगह की अपेक्षा अच्छा मौका था। यही कारण था कि

सुल्तानों के पतन के बाद दक्षिण मे बहमनी सल्तनत और विजय-नगर राज्य की नींव पड़ी और मुग़ल-साम्राज्य के निर्बल होने पर निज़ाम-राज्य की।

देश के तीन ओर समुद्र है। इसने भी उत्तर के हिमालय पर्वत की भॉति ही तीन ओर से देश की रक्षा की है। जहाजों का प्रचार होने से पहले समुद्र की ओर से किसी जाति ने भारत पर आक्रमण नही किया। दूसरे यहॉ का समुद्र-तट सपाट होने के कारण इस देश के निवासियों ने व्यापार में भी अधिक उन्नति नही की।

अभ्यास

१. भारतवर्ष पर इतने अधिक आक्रमण क्यों हुए हैं? इसका देश के भूगोल से क्या सम्बन्ध है?

२ निम्नलिखित का भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा है—

(क) हिमालय,

(ख) विन्ध्याचल और

(ग) समुद्र।

३. इन पर ऐतिहासिक नोट लिखो—

(क) भारतीय इतिहास की रंगभूमि और

(ख) भारत के फाटक।

४. अधिकतर लडाइयॉं पानीपत, कुरुक्षेत्र और तराइं के मैदान में ही हुईं। इसका भौगोलिक कारण बताओ।

५. दिल्ली अधिकतर राजाओं और बादशाहों की राजधानी रही। इसका कारण इसकी स्थिति थी। कैसे?